पढ़ें और सीखें योजना

[illegible]

(प्रकृति और मानव का आकर्षक संगम)

जगबंश किशोर बलबीर

विभागीय सहयोग

सुरेश पाण्डेय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

जनवरी 1998

माघ 1919

PD 5T-SD

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**बैंगलूर 560085**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

प्रकाशन सहयोग

पूरनचंद प्रो० एवं अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग

शर्मावत्त	:	सपादक
डी. साई प्रसाद	.	उत्पादन अधिकारी
विकास ब. मेश्राम	.	सहायक उत्पादन अधिकारी
सुनील कुमार		उत्पादन सहायक
सी पी. टंडन	.	कला अधिकारी

रु. 55.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा जैन कम्प्यूटर, शकरपुर, दिल्ली 110092 द्वारा लेजर कम्पोज होकर राज प्रिंटिंग वर्क्स 44 चांदनी चौक दिल्ली 110006 से मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए श्रेष्ठ शिक्षाक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा में परिषद् पिछले पैंतीस वर्षों से कार्य करती आ रही है जिसका प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघ--शासित प्रदेशों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है। अच्छे पाठ्यक्रमों और उत्तम पाठ्यपुस्तकों के अलावा हमारे विद्यार्थियों का मन परीक्षा में निर्धारित कोर्स से बाहर की अन्यान्य पुस्तकों को ज्ञान और आनंद की प्राप्ति के लिए पढ़ने के लिए स्वतः प्रेरित हो सके, इस उद्देश्य से परिषद् ने विभिन्न आयुवर्ग के विद्यार्थियों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में कम मूल्य की अतिरिक्त पठन की पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनाई है। "पढ़ें और सीखें" शीर्षक इस परियोजना के अंतर्गत परिषद् ने मई 1994 तक निम्नलिखित विषयों पर हिंदी में 85, अंग्रेज़ी में 39 और उर्दू में 14 पुस्तकें प्रकाशित की हैं :

(क) शिशुओं के लिए पुस्तकें
(ख) कथा साहित्य
(ग) जीवनियाँ
(घ) देश-विदेश परिचय
(ङ) सांस्कृतिक विषय
(च) सामाजिक विज्ञान के अन्यान्य विषय
(छ) वैज्ञानिक विषय
(ज) अन्य उपयोगी विषय

इन पुस्तकों के निर्माण की दिशा में हम लब्धप्रतिष्ठ और सजृनशील लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर विषय-विवेचन, भाषा शैली और प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से सामूहिक विचार-विमर्श करके इसे अंतिम रूप प्रदान किया जाता है।

"देश-विदेश परिचय" शीर्षक के अंतर्गत अब तक अरुणाचल प्रदेश, गुजरात और तमिलनाडु तथा रोमानिया, स्वीडन-नार्वे और फिलिप्पींस पर पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक "फ़्रांस" इसी शृंखला की अगली कड़ी के रूप में प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक के लेखक पचहत्तर वर्षीय प्रो. जगवंश किशोर बलबीर का जन्म दिल्ली में तथा शिक्षा-दीक्षा दिल्ली और इलाहाबाद में संपन्न हुई। भारत में दस वर्ष तक (1952-1962) संस्कृत का यूनिवर्सिटी प्रोफ़ेसर रहने के बाद प्रो. बलबीर संयुक्त राष्ट्र संघ की अंतर्राष्ट्रीय लोक सेवा में पैरिस स्थित यूनेस्को मुख्यालय चले गए और बाईस वर्ष तक कार्यरत रहे। सेवा निवृत्त प्रो. बलबीर फ़्रांस में बसे हुए हैं किंतु राष्ट्रीयता की दृष्टि से वे अब भी भारतीय हैं। हिंदी मातृभाषा-भाषी प्रो. बलबीर संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेज़ी, उर्दू , पाली, फ्रैंच, स्पेनिश तथा तिब्बती भाषा के भी उद्‌भट् विद्‌वान हैं। हम आभारी हैं कि उन्होंने भारतीय विद्‌यार्थियों के लिए "फ़्रांस" पर पुस्तक लिखने का हमारा निमंत्रण स्वीकार किया। इस पुस्तक में उन्होंने फ्रांसीसी जनजीवन, उद्‌योग और विज्ञान तथा वहाँ की सांस्कृतिक विशिष्टताओं आदि के बारे में ज्ञानवर्धक और रोचक जानकारियाँ बड़ी सजीव भाषा में प्रस्तुत की हैं। वे एक सिद्‌धहस्त लेखक हैं। अनेक भाषाओं की गहरी पकड़ रखने वाले प्रो. बलबीर की हिंदी का गद्‌य-शिल्प बड़ा अनूठा बन पड़ा है। यह कार्य उन्होंने अपने भारत-प्रेम और भारतीय विद्‌यार्थियों के लिए अपने कर्तव्य और अनुराग की भावना से पूरा किया है। एतदर्थ हम उनके प्रति पुनः अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

'देश-विदेश परिचय' के अंतर्गत लिखी गई पुस्तकों के लेखकों को विभागीय सहयोग प्रदान कर रहे सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग के रीडर डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय के प्रति मैं अपना हार्दिक स्नेह व्यक्त करता हूँ। इस पुस्तक के संदर्भ में अपना अकादमिक सहयोग प्रदान करने के लिए मैं प्रो. राजेन्द्र दीक्षित को भी धन्यवाद देता हूँ।

हमें प्रसन्नता है कि शिक्षाक्रमों, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्यों की भाँति ही परिषद् की "पढ़ें और सीखें" परियोजना के अंतर्गत प्रकाशित हुई पुस्तकों का भी व्यापक स्वागत हुआ है जिससे प्रेरित होकर हम सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अर्जुन देव के संरक्षण में इस परियोजना को पुनः शुरू करने जा रहे हैं।

मैं परिषद् के प्रकाशन प्रभाग के अधिकारियों को भी बधाई देता हूँ जिनके विशेष सहयोग से ये पुस्तकें इतने सुंदर रूप में प्रकाशित हो पा रही हैं।

हमें विश्वास है कि ज्ञानराशि के विविध पक्षों से संबद्ध ये पुस्तकें विद्यार्थियों में स्वस्थ, स्वतंत्र, सृजनशील, विवेचनात्मक और विवेक-सम्मत चिंतन-मनन कर सकने की योग्यता उत्पन्न करेंगी और उनकी भावाभिव्यक्ति को अधिक सटीक, समृद्ध और प्रभावशाली बनाया जा सकेगा।

इस पुस्तक के प्रति पाठकों की प्रतिक्रियाओं और सुझाव-सम्मतियों का परिषद् स्वागत करेगी।

अशोक कुमार शर्मा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
अप्रैल, 1997

भारतीय और फ्रांसीसी
राष्ट्रों, गुरुजनों, बंधुओं और मित्रों
के प्रति
कृतज्ञता का यह प्रतीक
अमर भारत के नवयुवकों और नवयुवतियों के लिए

लेखक

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा और साहित्य के वर्षों के गूढ़ अध्ययन ने मुझे भारत की आत्मा का ज्ञान दिया और हज़ारों वर्ष पुरानी हमारी अखंड संस्कृति के प्रति आदर और गौरव की भावनाओं से ओत-प्रोत कर दिया। अंग्रेज़ी भाषा, शिक्षा प्रणाली, जीवन और संस्कृति के अतिरिक्त अन्य देशों की जिज्ञासा सेंट स्टीफ़न्ज़ कॉलिज, दिल्ली के विद्यार्थी जीवन में जागृत हुई और जब मैं गुरुवर प्रोफ़ेसर बाबूराम सक्सेना के निरीक्षण में अनुसंधानार्थ प्रयाग विश्वविद्यालय में रहा तो फ़्रांसीसी और जर्मन भाषा सीखने का प्रथम अवसर पाया। अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के नागपुर के अधिवेशन में सबसे पहले जिस फ़्रांसीसी से मेरी भेंट हुई वे थे वेदांत के फ़्रांसीसी विद्वान प्रोफ़ेसर ओलिविये लकोम्ब (*Olivier* Lacombe)। उस समय वे भारत में फ़्रांसीसी दूतावास के सांस्कृतिक परामर्शदाता थे। उनकी कृपा से ही फ़्रांसीसी सरकार ने मुझे फ़्रांस में अनुसंधान करने के लिए छात्रवृत्ति दी।

भारत की स्वतंत्रता का यह महत्वपूर्ण और प्रेरणाप्रद समय था। आनंदभवन, प्रयाग की एक सभा में पण्डित जवाहरलाल नेहरू के अद्वितीय व्यक्तित्व की झाँकी देखी और दिल्ली की भंगी कालोनी में महात्मा गांधी की अर्चना सभाओं में उनका संदेश सुना। भारत की आज़ादी के उस 14–15 अगस्त, सन् 1947 की आधी रात को जब मैंने पण्डित नेहरू का भाषण सुना तो अपनी पीढ़ी के लोगों की तरह मेरा दिल भी उछल पड़ा था। हम सब ही स्वतंत्र देश की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पण करने को तत्पर हो गए थे। हम सब ही भारतीय संस्कृति

के आधारभूत मूल्यों से प्रेरित हो यथाशक्ति भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक उन्नयन करना चाहते थे, सभी विश्वभर में अहिंसा और सहनशीलता का संदेश फैलाना चाहते थे।

भारत छोड़ने से पहले महात्मा गांधी की आत्मकथा के कुछ अंश अत्यंत सार्थक हो गए। अठारह वर्ष की आयु में वे विद्या ग्रहण करने के लिए ब्रिटेन गए थे। लंदन में परिवार के एक मित्र डॉक्टर मेहता ने उन्हें दीक्षा दी। लंदन पहुँचने के अगले दिन डॉ. मेहता गांधी जी से मिलने आए। बातचीत के दौरान में गांधी जी ने डॉ. मेहता के हैट पर अपना हाथ सहलाना शुरू कर दिया। कुछ तन कर डॉ. मेहता ने उन्हें ऐसा करने से रोका। गांधी जी ने लिखा है कि यूरोपीय आचार-व्यवहार के विषय में यह उनका पहला पाठ था। परिहासपूर्ण लहज़े में डॉ. मेहता ने कहा — "अन्य व्यक्तियों की चीज़ों को छूना यहाँ ठीक नहीं समझा जाता। न यहाँ पर ऐसे सवाल ही पूछे जाते हैं जो हम भारत में पूछते हैं। ज़्यादा ऊँचे स्वर में भी नहीं बोलना चाहिए।" जब गांधी जी के लंदन में होटल में रहने का सवाल उठा तो डॉ. मेहता ने उन्हें बताया कि हम ब्रिटेन में शिक्षा प्राप्त करने के लिए ही नहीं अपितु अंग्रेज़ी जीवन और आचार–व्यवहार का ज्ञान भी प्राप्त करने आते हैं। डॉ. मेहता ने उन्हें सलाह दी कि वह किसी अंग्रेज़ी कुटुंब में रहें....।

यह उपदेश विदेश जाने वाले सभी भारतीय नवयुवकों और नवयुवतियों के लिए अब मान्य है। और मेरे लिए तो यह बहुत ही उपकारक सिद्ध हुआ। फ़्रांस में पहुँचते ही मेरी इच्छा हुई कि मैं वहाँ के सर्वतोमुखी पर्यावरण से अवगत होऊँ।

पर शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि फ़्रांसीसी भाषा की अच्छी जानकारी के बिना वहाँ जीवन निरर्थक ही नहीं, प्रायः असंभव था और फिर सौरबोन (Sorbonne) विश्वविद्यालय के नियमानुसार शोध प्रबंध फ़्रांसीसी भाषा में प्रस्तुत करना था। इसीलिए पहले तीन महीनों में मैंने पैरिस में *आलियांस फ़्रांसेज़* (Alliance FranCaise) नामक विद्यालय, राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान संस्थान और

सौरबोन विश्वविद्यालय में फ़्रांसीसी भाषा सीखने और लिखने और फ़्रांस का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने के अनुपम अवसर से लाभ उठाया। तब से फ़्रांस के प्रति मेरा अनुराग बढ़ता ही गया है।

और अब ! जैसा कहते हैं, मेरे अपने दो देश हैं— एक भारत और दूसरा फ़्रांस।

विश्वभर में यह माना जाता है कि नवयुवक और नवयुवतियाँ किसी भी राष्ट्र का भविष्य हैं, राष्ट्र का विकास सुशिक्षित और सुसंस्कृत व्यक्तियों पर ही निर्भर होता है। अतएव हमें यह प्रयत्न करना है कि वे स्कूलों और विश्वविद्यालयों में केवल डिग्री और डिप्लोमा प्राप्त करने कि लिए ही भरती न हों, कि वे कूपमंडूक की तरह संकीर्ण मनोवृत्ति के शिकार न बनें बल्कि यह जान जाएँ कि उनके सीमित जीवन के परे एक रोचक और विशाल जगत उनका स्वागत करने को तैयार है।

वस्तुतः सूचना प्रसारण के माध्यमों और संचार की सुविधाओं के कारण विश्व के सभी देशों के बीच का फ़ासला कम होता जा रहा है। उनकी पारस्परिक निर्भरता बढ़ती जा रही है। यद्यपि प्रत्येक देश और महाद्वीप अपनी आत्मीयता और स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना चाहता है तथापि उसकी कठिनाइयाँ और महत्वाकांक्षाएँ इतिहास और भूगोल की सीमाओं को पारकर अन्य देशों की राजनीति को प्रभावित कर रही हैं। किसी एक देश की उथल-पुथल से अन्य देश, प्रत्युत् विश्व की कोई भी सत्ता तटस्था नहीं रह पा रही है। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व आज के विश्व का आदर्श हो गया है। संस्कृत सुभाषित "वसुधैव कुटम्बकम्"अर्थात "सारी वसुधा एक कुटुंब है"— अधिकाधिक सार्थक हो गया है।

इस संदर्भ में अन्य देशों की जानकारी प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य हो जाता है। और फिर फ़्रांस जैसे महान देश की जानकारी तो और भी अधिक वांछनीय है। विश्व में और विशेषकर यूरोप में इस देश का स्थान ऊँचा है।

अमरीका, रूस, चीन और ब्रिटेन के साथ फ़्रांस "संयुक्त राष्ट्र संघ" की सुरक्षा समिति का स्थायी सदस्य है। दूसरे महायुद्ध के बाद पारस्परिक सहयोग की नीति के अनुसार जर्मनी और फ़्रांस ने योरोपीय संघ की नींव डाली। यह देश विश्व के सात सबसे उन्नत औद्योगिक राष्ट्रों के "समूह" का सदस्य भी है।

जब राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के श्री अनिल विद्यालंकार ने फ़्रांस पर इस पुस्तिका को लिखने के लिए मुझे आमंत्रित किया तो मैंने उनका प्रस्ताव सधन्यवाद स्वीकार कर लिया। कुछ समय हुआ, मेरी भारत यात्रा के अवसर पर उनसे और विशेषकर डॉक्टर सुरेश पाण्डेय जी से इस पुस्तिका के विषय पर विचार-विनिमय हुआ। तब से डॉ. पाण्डेय जी से ही मेरा संपर्क रहा है। उनके सौहार्द्र और धैर्य के लिए मैं उनका अत्यंत आभारी हूँ।

डॉ. श्रीमती नीति श्रीवास्तव, प्राध्यापिका, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ। उन्होंने स्नेहपूर्वक इस पुस्तिका की हस्तलिपि को पढ़ने का कष्ट किया और लाभदायक सुझाव दिए।

आशा है कि इस पुस्तिका से मेरे युवा देशवासियों को फ़्रांस का अधिक ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा मिलेगी और परिषद् के उद्देश्य की पूर्ति हो सकेगी।

लेखक

सावधानी

स्वतंत्रता के बाद से फ़्रांस और फ़्रांसीसी भाषा के प्रति बहुत से भारतीयों की रुचि के कारण इस भाषा के अध्ययन और अध्यापन की भारत में अब अनेक सुविधाएँ हैं। फ़्रांस जाने वाले भारतीयों की संख्या भी दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। पर कदाचित् इस वर्ग को छोड़कर हिंदी की पुस्तकों में फ़्रांसीसी शब्दों का, विशेषतया संज्ञाओं और स्थाननामों का नागरी स्वरूप सदा संतोषजनक नहीं होता। संभव है कि कुछ लोग फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ी के रोमन लिपि के एक समान रूप के आधार पर फ़्रांसीसी उच्चारण पर ध्यान दिए बिना ऐसा करते हों।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत में अत्यधिक प्रचलित कुछ शब्दों, जैसे पैरिस इत्यादि, को छोड़कर फ़्रांसीसी शब्दों को उनके फ़्रैंच उच्चारण के अनुसार नागरी लिपि में तिरछे अक्षरों में मुद्रित किया गया है और ऐसे शब्दों के सामने कोष्ठक में उनकी फ़्रांसीसी वर्तनी दे दी गई है। इस प्रकार फ़्रांसीसियों के साथ अंग्रेज़ी में वार्तालाप करते समय अथवा फ़्रांस में भ्रमण करते हुए भारतीय तनिक भी उलझन अनुभव नहीं करेंगे, ऐसी मेरी आशा है।

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

विषय सूची

प्राक्कथन

प्रस्तावना

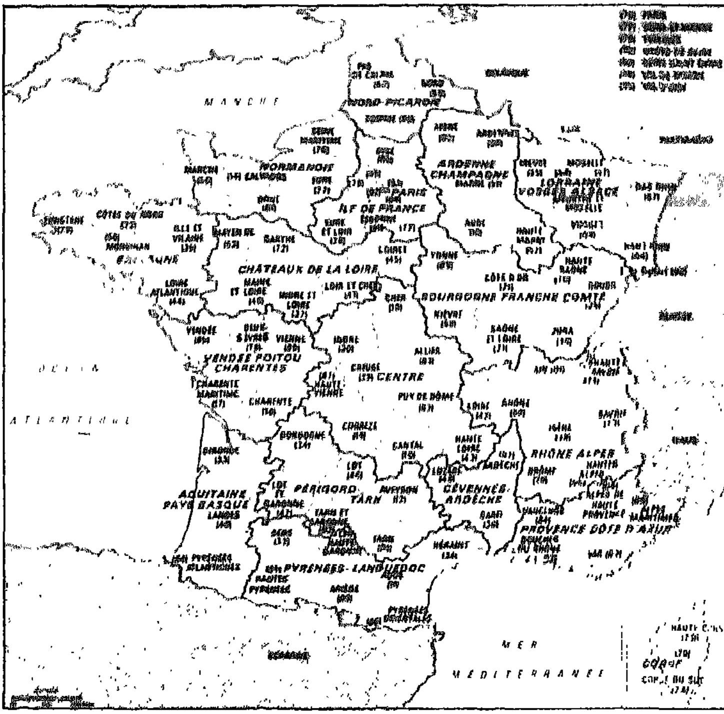
सावधानी

1.	फ़्रांस : देश और प्रदेश	1
2.	फ़्रांसीसी लोग	20
3.	पैरिस की सैर	34
4.	फ़्रांसीसी जीवन की झाँकी	62
5.	फ़्रांसीसी परिवार : नारी और पुरुष	76
6.	फ़्रांसीसी और पशु-पक्षी	85
7.	फ़्रांस में मनोरंजन और खेलकूद	88
8.	शिक्षा, विज्ञान और चित्रकला	101
9.	फ़्रांसीसी साहित्य	117
10.	आर्थिक व्यवस्था, उद्योग और परिवहन	130
11.	भारत और फ़्रांस	146
12.	"" दरवाजे खुले रखना	159

1. फ़्रांस : देश और प्रदेश

फ़्रांस का मानचित्र देखने से मालूम होता है कि यह षट्कोणीय देश पश्चिम में अटलांटिक महासागर और दक्षिण में भूमध्य सागर से घिरा हुआ है। पश्चिमोत्तर में अंग्रेज़ी चैनल फ़्रांस और ब्रिटेन के ऐतिहासिक संबंधों की साक्षी है। इस दो हज़ार सात सौ किलोमीटर लंबी समुद्रीय सीमा के कारण देश का कोई भी कोना समुद्र से पॉच सौ किलोमीटर से अधिक दूर नहीं है। प्रकाश-स्तंभ, सुंदर शहर और छोटी-छोटी बस्तियाँ इस सारे तट की रौनक बढ़ाती हैं। दक्षिण के भूमध्य सागर के किनारे *कोत दाज़्यूर* (Côte d' Azur) अर्थात् 'नीलम का तट' है। यहाँ समुद्र का जल नीलम की तरह चमकता है। यह प्रदेश *"रिवियेरा" (Riviéra)* नाम से भी प्रसिद्ध है। तटों से हटकर छोटे और बड़े द्वीप बसे हैं। फ़्रांस की स्थलीय सीमा भी महत्वपूर्ण है। पूर्व में *ज्यूरा* (Jura), दक्षिण–पश्चिम में *पिरेने (Pyrénées)* और दक्षिण-पूर्व में *आल्प* (Alpes) नामक पर्वतशृंखलाएँ हैं। आल्प के सबसे ऊँचे पहाड़ (4,807 मीटर) का नाम *मौं ब्लॉं (Mont Blanc)* अर्थात् "श्वेत पर्वत" है। सभी पहाड़ों पर अनेकों शहर बसे हैं। *राइन (Rhine)* नदी पूर्वी सीमा बनाती है और सबसे लंबी इठलाती-लहराती *लुआर (Loire)* नदी देश को उत्तर और दक्षिण में विभाजित करती है। फ़्रांस के कई प्रसिद्ध नगर नदियों के तट पर बसे हैं, जैसे *सैन (Seine)* नदी पर

फ्रांस का मानचित्र
प्रदेश तथा समीपस्थ राष्ट्र



ब्रताञ BRETANGE, नौर्मांदी NORMANDIE, नौर पिकार्दी NORD PICARDIE, बैल्जियम BELGIOUE, जर्मनी ALLEMAGNE, आर्देन शांपाञ ARDENNE-CHAMPAGNE, लौरेन-वोज-अल्जास LORRRAINE-VOSGES-ALSACE, पैरिस PARIS, ईल द फ्रांस ILE-DE-FRANCE, शातो द ला लुआर CHATEAUX DE LA LOIRE, बुर्गोञ-फ्रांश-कोंते BOURGOGNE-FRANCHE-COMTÉ, वाँदे-पुआतु-शरांत VENDÉE-POITOU-CHARENTES, सांत्र CENTRE, रोन-आल्प RHONE ALPES, दौर्दोञ DORDOGNE, पेरिगौर-तार्न PERIGORD-TARN, अकितैन-पेई-बास्क AQUITAINE-PAYS-BASQÚE, पिरेने-लाँगदोक PYRENEES-LANGUEDOC, सेवेन-आर्देश CÉVENNES-ARDÉCHE, प्रोवांस कोत दाज्युर PROVENCE-COTE-D'AZUR, स्विट्ज़रलैंड SUISSE, इटली ITALIE, कौर्सिका CORSE, स्पेन ESPAGNE, मैडितरेनियन सागर MER MEDITERRANÉE, अटलाँटिक सागर OCEAN ATLANTIQUE, लुक्समबर्ग LUX

पैरिस, *रोन (Rhône)* और *सोन (Saône)* नदी के संगम पर देश का तीसरा प्रसिद्ध नगर *ल्यों* और दक्षिण में *गारोन (Garrone)* नदी पर *तुलूज़ (Toulouse)* और *बौर्दो (Bordeaux)*। आभ्यंतर प्रदेश नदियों, पहाड़ियों, झीलों, वन-उपवनों और घाटियों से सुशोभित हैं। मध्य के गिरिसमूह में ज्वालामुखी और उनके कटिबंधों में स्रोतों से फ़्रांस प्रकृति का मनोरम क्रीडास्थल बन गया है।

पश्चिम में ब्रिटेन, उत्तर में बेल्जियम, पूर्व में जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड और दक्षिण में एक ओर स्पेन और पुर्तगाल और दूसरी ओर इटली जैसे देशों के बीचों-बीच स्थित फ़्रांस को पाश्चात्य योरोप की नाभि माना जाता है। यूरोपीय, अटलांटकीय और भूमध्यसागरीय देशों के साथ विनिमय के कारण फ़्रांस बाह्य प्रभावों के प्रति सदा से खुला रहा है। पिछली पाँच शताब्दियों में फ़्रांस पुरानी और नई दुनिया की स्वाभाविक कड़ी भी बन गया है। पर फ़्रांस की सभ्यता समरूप है, कदाचित् मानव और प्रकृति यहाँ परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में क्रियाशील रहे हैं।

फ़्रांस की शीतोष्ण जलवायु यूरोप के अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक विविध, प्रेरक और सहनीय है। फ़्रांस के अटलांटिक तट पर जाड़े सुहावने और गर्मियाँ शीतल होती हैं यद्यपि वर्षा के कारण नमी अधिक रहती है। पैरिस में और उसके दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में गर्मियों में तापमान काफ़ी ऊपर चढ़ जाता है। ठंड तो पड़ती है पर तापमान बिरले ही "शून्य" डिग्री तक पहुँचता है। बरफ़ केवल दो तीन बार ही पड़ती है। पहाड़ी क्षेत्रों में जाड़े लंबे और बर्फ़ीले होते हैं और गर्मियाँ छोटी होती हैं। इस मौसम में बारिश होती है, बादल गरजते हैं और बिजली चमकती है। भूमध्यसागर तट पर जाड़े और गर्मियाँ सुहावनी होती हैं। कभी-कभी सूखा पड़ने के कारण गर्म हवाओं से बहुत नुकसान होता है और जाड़ों में नदियों में बाढ़ आने से बहुत से लोग बेघर हो जाते हैं। सामान्यतः फ़्रांस की जलवायु अनियमित है फिर भी यहाँ के मौसम स्पष्टतया विभाजित हैं।

तीन-तीन महीने के चार मौसम होते हैं। हर मौसम का अपना विलक्षण आकर्षण है और हर मौसम में ईसाई धर्म से संबंधित त्यौहार मनाए जाते हैं।

वसंत ऋतु 21 मार्च से आरंभ होती है। इस समय चराचर जगत में एक नई स्फूर्ति जाग जाती है—वृक्षों और फूलों में नई कोंपलें निकल उठती हैं, पक्षियों की चहक से सारी प्रकृति सजीव हो जाती है। मानवों का परिप्रेक्ष्य बदलने लगता है। कामनाओं के उदय होने से इस ऋतु को मदन-ऋतु भी कहा जा सकता है। नए-नए फल-फूल आने लगते हैं। मार्च और अप्रैल के महीनों के बीच *जीज़स क्राइस्ट* के अंतिम क्षणों की स्मृति में ईस्टर का त्यौहार मनाया जाता है। पावन बृहस्पतिवार शिष्यों के साथ उनके अंतिम भोजन का, शुक्रवार उनके क्रास पर आरोहण व मृत्यु का और शनिवार और रविवार उनके पुनरुज्जीवन का संस्मारक हैं। ईस्टर के चालीस दिन बाद *जीज़स* के स्वर्गारोहण और पचास दिन बाद *पांतकोत (Pentecôte)* अर्थात् उनके पट्टशिष्यों में संतात्मा के अवतरण के अवसर पर सारे फ़्रांस में छुट्टियाँ होती हैं। कुछ अन्य देशों की तरह बीसवीं शती के आरंभ से फ़्रांस में भी मई के अंतिम इतवार को मातृदिवस मानाया जाता है।

ग्रीष्म ऋतु 21 जून से शुरू होती है। साल का यह सबसे लंबा दिन होता है। पौ जल्दी फटती है और शाम समाप्त होने में ही नहीं आती। कई प्रदेशों में तो दस बजे तक अँधेरा नहीं होता। इस मौसम में बाग़-बग़ीचों के प्रेमियों को बहुत काम रहता है। सब्ज़ियों, फूलों और फलों की बहुतायत और रंगीन छटा से मन खिल उठता है। देहातों में लोग मुरब्बे डालते हैं। गाय, बकरी और भेड़ों के दूध से पनीर तैयार करते हैं। अगस्त-सितंबर में खेतिहर कई प्रकार की फ़सलें काटते हैं और आलू निकालते हैं। इन्ही महीनों में अंगूर की बेलों से अंगूर भी उतारे जाते हैं। कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े, भिड़ और मधुमक्खियाँ बाहर आ जाती हैं। पर फ़्रांस में बिच्छू और खतरनाक साँप नहीं होते। मच्छरों से बचने के लिए तुलसी के पौधे खिड़कियों पर रखे जाते हैं। 14 जुलाई को फ़्रांस का राष्ट्र दिवस मनाया जाता है। 15 अगस्त को धर्ममाता देवी मेरी के

आश्चर्यजनक स्वर्गारोहण की वर्षगाँठ मनाई जाती है। इस मौसम में ही शिक्षासत्र के अवसान के बाद दो महीने की छुट्टियाँ होती हैं।

शरद् ऋतु 22 सितंबर से आरंभ होती है। पतझड़ के इस मौसम की शोभा अनोखी है। वन-उपवनों से आवृत प्रदेशों में वृक्षों के पत्ते-पत्तियाँ लाल, भूरे, पीले और सुनहरे रंग अपना लेते हैं और धरती को ढक लेते हैं। सूरज के प्रकाश और नीले आकाश से सारा पर्यावरण भव्य लगता है। वर्षा होने पर धरती से निकलती सुगंध आह्लादजनक होती है। अंजीर, बादाम, अखरोट, पाँगर इत्यादि फलों से मंडियाँ भर जाती हैं। सेब और अंगूरों की भरमार हो जाती है। लोग वनस्थलियों में खुंभी चुनने जाते हैं। अभ्यस्त लोग ही खाने वाली और ज़हरीली खुंभियों में अंतर कर सकते हैं। जानवरों और पक्षियों का शिकार विविध क्षेत्रों के अनुसार नियमित हो गया है। 15 नवंबर के बाद ठंड शुरू होने से घास और पौधों पर पाला पड़ना शुरू हो जाता है। ईसाई लोग पहली नवंबर को सारे संतों और दूसरी नवंबर को दिवंगत पूर्वजों का दिन मनाते हैं। प्रियजनों की समाधियों पर फूल चढ़ाते हैं। शहरों और गाँवों के सभी समाधि-क्षेत्र रंग-बिरंगे फूलों से एक नया रूप धारण कर लेते हैं। सारा दृश्य आँखों के लिए मनोरम हो जाता है और जीवन और मरण तथा मृत्यु के बाद की समस्याओं पर शांत और गंभीर मनन का अवसर देता है।

शीत ऋतु 22 दिसंबर से बसंत के आगमन तक रहती है। इस मौसम में कोहरे, झंझावात, वर्षा और प्रायः सर्वत्र बरफ़ का राज रहता है। दिन छोटे और रातें लंबी होती हैं। तापमान काफ़ी गिर जाता है। वर्षा तथा ओस के जम जाने से कभी-कभी सड़कों पर मोटर चलाने में सावधानी बरतनी होती है पर मानवोचित सभी प्रकार की सुविधाओं के कारण दैनिक जीवन की गति धीमी नहीं पड़ती। मकानों, दफ़्तरों, दुकानों और परिवहन के सभी साधनों में तापन के कारण लोग जाड़े से दुखी नहीं होते। बरफ़ पड़ने पर सड़कों पर चलने-फिरने की सुविधा के लिए नगर-पालिकाओं की ओर से नमक तथा अन्य पदार्थ बाँटे जाते हैं। पहाड़ों पर ट्रैक्टर की तरह के यंत्रों का प्रयोग होता है। खुले

खेतों में खेती नहीं होती पर प्लास्टिक से ढकी सुरंगों में फूल और कई प्रकार की हरी सब्ज़ियाँ उगाई जाती हैं। विदेशों से कई चीज़ें यहाँ आती हैं जो भारत की याद दिलाती हैं, जैसे लीची, आम, शरीफ़े, पपीते, भिंडी, संतरे और नारंगी। अनननास तो लगभग सारे साल ही मिलता है। अब किवी और ककड़ी जैसे कई फलों की पैदावार भी फ्रांस में होने लगी है। जाड़े की नमी और काले घिरे आकाश की उदासी 25 और 31 दिसंबर के उल्लासपूर्ण त्यौहारों से दूर हो जाती है। 25 दिसंबर को *जीजस क्राइस्ट* का जन्मदिन मनाया जाता है। *बैथलियम की गुफा* और *देवदारु* के छोटे-से वृक्ष को सजाया जाता है। 31 दिसंबर को पुराने साल के प्रस्थान और नए साल के आगमन की धूमधाम होती है। वास्तव में नवंबर के महीने से इन त्यौहारों को मनाने की तैयारी होने लगती है। शहरों में सड़कों पर और दुकानों में जगमगाती बिजली की झालरें लगाई जाती हैं और लोग अपने प्रियजनों को प्रीतिभोज पर आमंत्रित करते हैं और उपहार देते हैं। इस पखवाड़े की रौनक अपने यहाँ दिवाली की तरह होती है। फरवरी के आरंभ में ईस्टर से चालीस दिन पहले *कारेम* (Carême) मनाया जाता है। ईसाई धर्मावलंबियों के लिए यह संयम, प्रायश्चित और दान व त्याग का समय होता है। *कारेम* के शुरू होने से एक दिन पहले मंगलवार को *मारदी ग्रा (Mardi gras)* का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन बच्चे विचित्र वेशभूषा धारण करते हैं। कई शहरों में नगरपालिकाएँ *कार्नवाल* की झाँकियों की व्यवस्था भी करती हैं।

* * * *

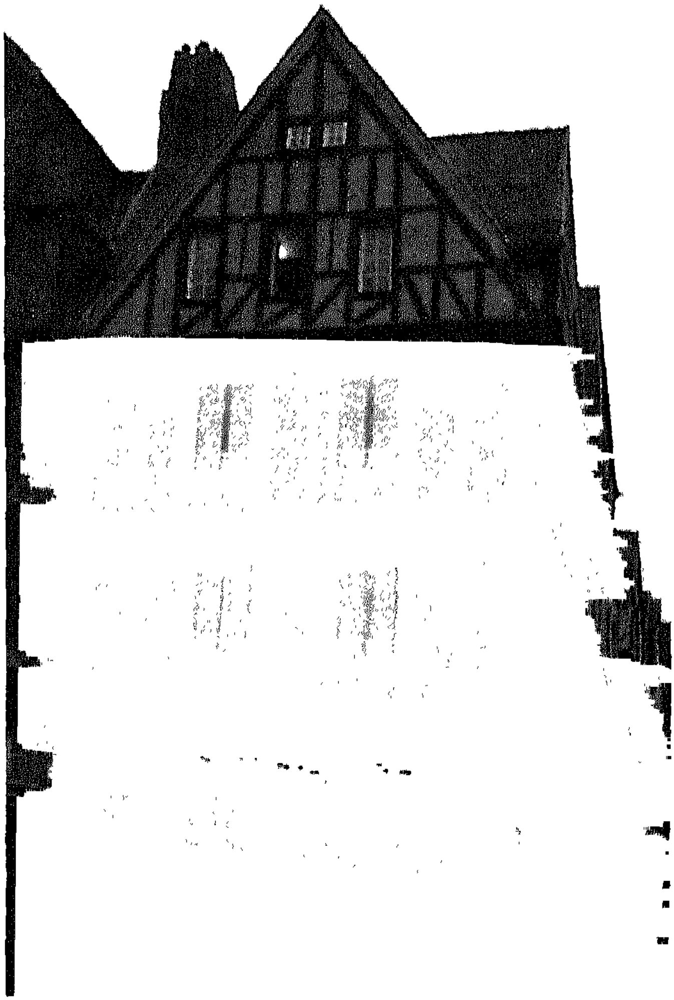
शासन की दृष्टि से फ्रांस में छत्तीस हज़ार से अधिक *कम्यून* (Commune) अर्थात् *जनसमुदाय* हैं। वयस्क जनमताधिकार द्वारा निर्वाचित नगरपाल प्रत्येक "कम्यून" का शासन करता है। ये कम्यून 96 विभागों में और सारे विभाग 22 प्रदेशों में बँटे हुए हैं। कुछ वर्षों से प्रत्येक प्रदेश के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और आर्थिक विकास के लिए विकेंद्रीकरण की नीति अपनाई गई है। फ्रांसीसी इतिहासकार *मिशले* (Michelet) ने लिखा है कि फ्रांस के विभिन्न भागों में यात्रा

करने से इस देश की विविधता का और इसके निवासियों के भेदोपभेदों और उनकी विरोधात्मकता का ज्ञान हो सकता है। कुछ प्रदेशों के निम्नलिखित संक्षिप्त वर्णन से उनकी विलक्षणता का परिचय मिल सकता है।

फ़्रांस का मध्यदेश और फ़ासीसी प्रदेशों का सरताज *ईल द फ़्रांस* (Ile de France) अर्थात् *'फ़्रांसीसी द्वीप'* है। इस प्रदेश की प्राकृतिक शोभा *सैन* नदी और उसके तीन प्रवाहों से घिरी हरी-भरी घाटियों, विस्तृत पठारों और आरण्यस्थलियों के बीच ग्रामीण बस्तियों और फ़ार्मों से बनी है। प्राकृतिक वातावरण की मृदुता और बदलते रंगों ने फ़्रांस के कितने ही कवियों और चित्रकारों की कला को प्रोत्साहन दिया है। गेहूँ की खेती के कारण यह प्रदेश फ़्रांस का अन्न भंडार कहलाता है। इसकी समृद्धि अनाज व सरसों और सूरजमुखी के लहलहाते खेतों, फलों के वृक्षों और फूलों के उत्पादन और आधुनिक औद्योगिक विकास के कारण है।

वास्तव में इस प्रदेश में स्थित पैरिस का इतिहास, फ़्रांस के तेईस शती पुराने इतिहास का अभिन्न अंग है। इतिहास के स्मारक और राजदरबारों के जीवन की रमणीयता के साक्षी राजमहल और किले इस सारे प्रदेश में बिखरे हुए हैं स्वाधीनता की हवा इस प्रदेश से ही बहनी शुरू हुई थी। यहीं फ़्रांस के प्रमुख शासकों का उत्थान और पतन हुआ। फ्रांसीसी संस्कृति की मौलिकता का उन्मेष भी यहीं हुआ। गौथिक कला के अनुसार बने यहाँ के कैथीड्रल, प्रसिद्ध गिरजाघर और धार्मिक मठ फ़्रांस के श्रद्धालु और आध्यात्मिक ज़ीवन का स्मरण कराते हैं। यह प्रदेश शिष्ट और अभिजात फ्रांसीसी जनता के मोहक जीवन की रंगशाला रहा है। इस प्रदेश के प्रत्येक नगर में किसी-न-किसी महान फ़्रांसीसी व्यक्ति के जीवन और कृतित्व की स्मृति अवशेष हैं।

आज के *इल द फ़्रांस* में अर्वाचीनता के अनेक चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। आज यह प्रदेश फ़्रांस की आर्थिक व्यवस्था की राजधानी बन गया है। वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के कारण इस शक्तिशाली प्रदेश का महत्व रोज़-रोज़ बढ़ता जा रहा है। पैरिस का विस्तार सीमित होता जा रहा है और इस प्रदेश



ब्रिटेनी के समुद्रतट पर बसे 'मौर्ले' नामक नगर का एक मकान

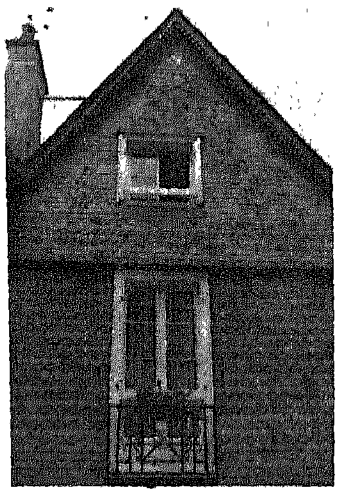
की जनता *"बृहत्तर पैरिस"* की ओर विस्थापित हो रही है। नए नगरों का निर्माण हो रहा है और नए-नए विश्वविद्यालय खुल गए हैं। उपनगरों में गगनचुंबी इमारतें खड़ी हो गई हैं जिससे दैनिक जीवन और सुरक्षा की समस्याएँ उठ रही हैं। फ़्रांस के अन्य प्रदेशों के लोग भी इस प्रदेश की ओर आकृष्ट हो रहे हैं।

फ़्रांस के पश्चिम में ब्रिटेनी प्रदेश *ब्रेताञ* के समुद्रतटवर्ती और अंतरीय भाग की शोभा विलक्षण है। समुद्र की ओर वाले भाग का आकार एक नौका की बाहर निकलती हुई नोक के समान है। समुद्र की बारीक और सुनहरी बालू के तट और गुलाबी तथा धूसर और नील-लोहित रंग की चट्टानों से यहाँ रंगों का अनोखा सम्मिश्रण हुआ है। सूरज और बादलों की क्रीड़ा, लहरों के उतार-चढ़ाव के मधुर संगीत और समुद्र तथा पत्थरों के बदलते रंगों से इस प्रदेश के विविध भागों का नामकरण हुआ है। पश्चिमोत्तर में *कोत देमरोद (*Côte d' Emereaude) अर्थात् 'पन्ने का तट' है क्योंकि यहाँ समुद्र का पानी पत्ते की तरह हरा दिखाई देता है। पश्चिम में *कोत द ग्रनित रोज़ (Côte d' granite rose)* अर्थात् 'गुलाबी ग्रेनाइट का तट' है क्योंकि यहाँ पर समुद्र ग्रेनाइट पत्थर की चट्टानों को छूता है। ज्वारभाटे के समय अल्हड़ और उच्छृंखल लहरें जब पत्थरों से टकराकर आकाश की ओर उछलती हैं तो देखते ही बनता है। पश्चिमी छोर को *फ़िनिस्तैर* (Finistère) अर्थात् 'धरती का अंत' कहते हैं क्योंकि उसके बाद अंग्रेज़ी चैनल और अटलांटिक महासागर आ जाता है। यहीं रात में तटवर्ती नगरों और पत्तनों तथा प्रकाश-स्तंभों की रोशनी से सारा तट जगमगा जाता है। नाविकों का पथ प्रदर्शन करने के लिए बने प्रकाश-स्तंभों को ब्रिटेनी के लोग "स्वागत दीप" मानते हैं क्योंकि दूर से आए नवागंतुकों का स्वागत करने वाले का घर दूर से ही प्रकाशित होना चाहिए। समुद्र पर नाविकों और नौकाओं का सतत आवागमन होता रहता है। छोटे-छोटे तटवर्ती शहरों में पालनाव के केंद्र हैं, कुछ स्थानों में नौका संबंधी विहार और दौड़ों का आयोजन होता है। यहाँ का पानी और सामान्य पर्यावरण तन और मन के लिए शक्तिदायक है। यहाँ के निवासियों का जीवन-निर्वाह समुद्र से ही होता है। इस प्रदेश के *ब्रेस्त* (Brest)

नामक शहर में नाविक सेना और सैनिक युद्धागार का केंद्र है।

अंग्रेज़ी चैनल और अटलांटिक महासागर में बहुत से सुंदर द्वीप हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध और दर्शनीय उएसाँ (Ouessant) है। यह 'औरतों का द्वीप' कहलाता है क्योंकि यहाँ के अधिकतर मर्द प्रायः समुद्र में ही रहते हैं। यहाँ औरतों का राज है। बहुत प्राचीन प्रथा के अनुसार लड़की ही अपनी शादी की माँग करती है। अपने साथ सौगात लेकर वह अपने भावी पति के यहाँ जाती है। लड़का उसके आने की प्रतीक्षा करता है और यदि वह सौगात स्वीकार कर लेता है तो शादी की संभावना रहती है। पर पहले कुछ दिनों तक लड़की को अपनी भावी ससुराल में रहना होता है जिससे लड़के वाले यह देख सकें कि लड़की गृहस्थी का बोझ संभालने में समर्थ है अथवा नहीं। इस बीच उसे गृहस्थी और खेती के काम में भाग लेना होता है। इस परीक्षा में सफल होने के बाद ही शादी होती है।

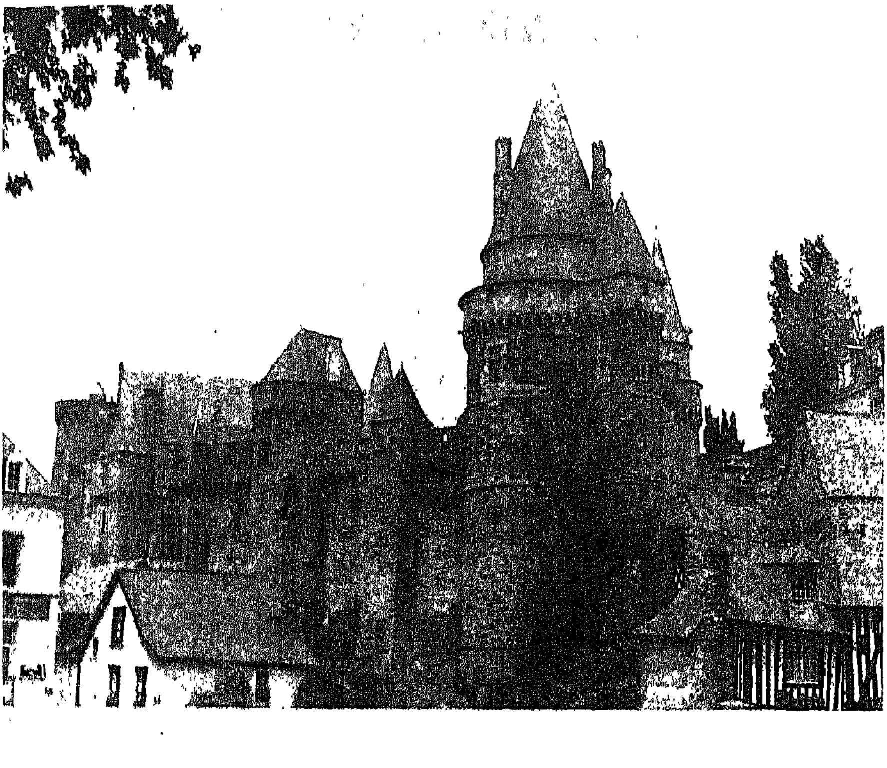
अपने एक ओर कठोर और बियाबान तथा दूसरी ओर अत्यंत मनोरम



ब्रिटेनी के अंतरीय भाग के 'चित्रे' नामक नगर में 'स्लेट' के पत्थर से सुशोभित मकान

पर्यावरण से यह द्वीप विचित्र और आर्कषक लगता है। यहाँ पर फ्रांस का सबसे पहला पर्यावरण-विषयक संग्रहालय खुला था जहाँ अठारहवीं और उन्नीसवीं शती के समुद्री जीवन की प्रदर्शनी बहुत ही शिक्षाप्रद है।

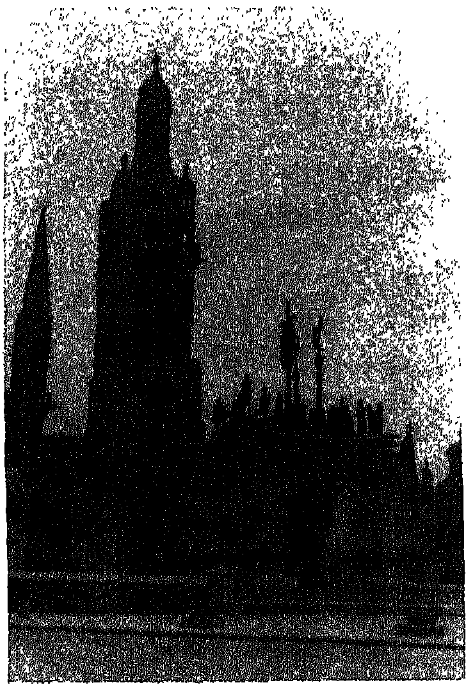
ब्रिटेनी का अंतरीय भाग दूर-दूर तक फैले अनाज के खेतों व गोभी,टमाटर,



'वित्रे' का किला और महल : मध्यकालीन सैनिक वास्तुकला का नमूना (ग्यारहवीं--पंद्रहवीं शती)

आलू और *आर्तिशोक* (Artichaut) जैसी तरकारियों के खेतों से सदा हरियाला रहता है। वृक्षों, वाटिकाओं और झुरमुटों से घिरे फ़ार्म हाउस और मकानों की यहाँ कोई कमी नहीं है। मकानों की विशेष रचना यहाँ की जलवायु के सर्वथा अनुरूप है। कहने को तो इस प्रदेश में सदा वर्षा होती रहती है पर यह सच नहीं है। अप्रैल, मई, जून और कभी-कभी तो नवंबर तक यहाँ का मौसम बहुत ही अच्छा और स्फूर्तिदायक रहता है।

सारा ब्रिटेनी प्रदेश *सैल्टिक सभ्यता* का देश है। इस रहस्यमय प्रदेश के



ब्रिटेनी के 'प्लेबेन' नामक गाँव में 'ग्रेनाइट' पत्थर का बना गिरजाघर और अहाते का धार्मिक स्मारक

छोटे-छोटे रास्तों और वृक्षों के पीछे छिपे पुराने मकान रोमांचकारी कथाओं और अनुश्रुतियों का कोष हैं। इस प्रदेश की भाषा और संस्कृति विशिष्ट है। यहाँ

की परंपरागत वेशभूषा विलक्षण है। आज भी धार्मिक और विशेष त्यौहारों के अवसर पर लोग प्रदेशीय वस्त्र पहनते हैं। स्त्रियों के शिरोवस्त्र इस प्रदेश के विभिन्न भागों के अनुसार होते हैं। पहले ये क्रोशिये और सूती धागे से बनते थे पर अब नाइलौन के सूत का उपयोग होता है। लेकिन बहुत कम स्त्रियाँ अब शिरोवस्त्रों का प्रयोग करती हैं।

धार्मिक परंपरा की छाप ब्रिटेनी के कोने-कोने में विद्यमान है। जगह-जगह पर और विशेषकर चौराहों पर ग्रेनाइट के पत्थर से बने ईसाई धर्म के क्रॉस दिखाई देते हैं। गाँवों और शहरों के बीचोंबीच गिरजाघरों के आसपास ही जीवन का केंद्र है। गिरजाघर के अहाते में धार्मिक पाषाण-मूर्तियों और स्थापत्यकला के नमूने मिलते हैं। गिरजाघर में प्रवेश या तो विजयद्वार से किया जाता है या तोरणद्वार से। बाहर उस पहाड़ी की प्रतिमा खुदी रहती है जहाँ ईसा मसीह को क्रॉस पर चढ़ाया गया था। पास ही कब्रिस्तान और ऐसा स्मारक होता है जहाँ पर दानियों और संग्राम में मरे वीरों की अस्थियाँ जमा रहती हैं। कहते हैं कि इस धार्मिक कृति को लेकर सभी गाँवों में एक प्रकार की होड़ होती थी कि कौन सबसे उत्तम मूर्तिकला के नमूने प्रस्तुत कर सकता था। ब्रिटेनी के कुछ स्थानों में प्रागैतिहासिक अवशेष मिलते हैं। ये प्रायः दो प्रकार के हैं—'*दोलमेन*' (Dolmen) अर्थात् 'धरती में गढ़े पत्थर के दो स्तंभों पर पथरीली पटिया' या '*मेनहीर*'(Menhir) अर्थात् 'आकाशोन्मुखी मोमबत्ती की तरह धरती में गढ़े सीधे महापाषाण'। कहा जाता है कि '*दोलमेन*' और '*मेनहीर*' क्रमशः किसी नारी देवता और सूर्य की पूजा के प्रतीक हैं।

हम भारतीयों के लिए ब्रिटेनी प्रदेश का आकर्षण ऐतिहासिक भी है। बहुत प्राचीन समय से यहाँ के नाविक, धर्मप्रचारक और यात्री भारत गए हैं। इस प्रदेश के आधुनिक *लोरियाँ* (Lorient) अर्थात् 'पूर्व का नगर' की स्थापना भारत के साथ व्यापार के लिए हुई थी। सत्रहवीं शती में फ़्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य कार्यालय इसी नगर में खोला गया था। पहले यहाँ से दस फ़्रांसीसी जहाज़ से सूरत गए थे और यहीं से सुदूरपूर्व के देशों के साथ व्यापार बढ़ा था।

ब्रिटेनी के *मादेक* (Madec) नामक निवासी की एक कथा उल्लेखनीय है। यह नवयुवक जहाज़ों में नौकरी करता था और दूर-दूर के देशों की यात्रा करता था। अठारहवीं शती के आरंभ में भारतीय महासागर की यात्रा के चाव से वह फ़्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकर हो गया था। भारत पहुँचकर वह पहले सैनिक और फिर सार्जेंट बना। अंग्रेज़ों ने जब उसे पकड़ लिया तो वह अपनी जान बचाकर भाग निकला और उत्तरी भारत के नवाबों की नौकरी में लग गया। भाड़े का सिपाही बनकर उसने अंग्रेज़ों का विरोध किया और बाद में दक्कन में राजा बन गया। इकतालीस वर्ष की आयु में वह ब्रिटेनी लौटा पर घोड़े से गिरकर अड़तालीस वर्ष की आयु में उसका देहांत हो गया।

ब्रिटेनी के पड़ोसी और पैरिस से लगभग दो सौ किलोमीटर की दूरी पर पश्चिमोत्तर में स्थित *नार्मंदी* (Normandie) नामक प्रदेश के *रुआं* (Rouen) नामक नगर में पंद्रहवीं शती में *जान दार्क* (Jeanne d' arc) का जन्म हुआ था। जब यह कृषक कन्या तेरह वर्ष की थी तो उसने आकाशवाणी सुनी कि वह ही फ़्रांस को अंग्रेज़ों से मुक्त करा सकती है। एतदर्थ उसने अंग्रेज़ों का सामना किया। पर उन्नीस वर्ष की उम्र में जब वह उनके चंगुल में फँसी तो उन्होंने उसे डाइन घोषित करके सजीव अग्निसात् कर दिया। इंदिरा गांधी मानती थीं कि *जान दार्क* राष्ट्रप्रेम की मूर्ति थी, उसी से फ़्रांस में राष्ट्रीय प्रेम की भावना जागृत हुई। जान दार्क के उपासक आज भी इस बालिका शहीद के पैरिस स्थित घोड़े पर सवार स्मारक पर हर वर्ष मई के महीने में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। दूसरे महायुद्ध के अवसर पर बमबारी से इस प्रदेश के अधिकतर शहर नष्ट हो गए थे। सन् 1944 में जनरल आइज़नहावर की फ़ौज ने नार्मंदी के तट पर उतर कर फ़्रांस को जर्मन आक्रमणकारियों से मुक्त कराया था। *काँ* (Caen) नामक प्रदेशीय राजधानी के नष्ट हुए तीन–चौथाई गिरजाघरों का अब पुनर्निर्माण हो गया है। ब्रिटेनी की तरह यह कृषिप्रधान देश दूध, दही, मक्खन इत्यादि और प्रधानतया सेबों और उनसे बने अन्य पदार्थों के लिए प्रसिद्ध है।

यहाँ मशीनरी, कपड़े और रसायन तथा अणु-ऊर्जा के प्रसिद्‌ध केंद्र हैं। तटवर्ती *रूआँ* (Rouen), *ल आव्र* (Le Havre), और *शैरबुर्ग* (Cherbourg) नामक अन्य पत्तनों के भारी-भारी जहाज़ और पैट्रोल के टैंकरों द्‌वारा दूर-दूर के देशों से फ्रांस का व्यापार होता है। *दियैप* (Dieppe) नामक पत्तन से ब्रिटेन के लिए नियमित रूप से नौकाएँ आती-जाती हैं। अश्वपालन यहाँ की विशिष्टता है। *दोविल* (Deauville) नामक नगर में हर साल एक साल की आयु के अश्वशावकों की नीलामी के अवसर पर विदेशों से बहुत-से खरीददार आते हैं। पर्यटकों के लिए यहाँ का सबसे आकर्षक स्थान *मौं सैं मिशेल* (Mont St. Michel) है। ग्रानीट के लाल पत्थर के इस द्‌वीप पर अस्सी मीटर की ऊँचाई पर धार्मिक तीर्थ है जहाँ गौथिक और रोमन स्थापत्य कला का विचित्र सम्मिश्रण हुआ है। अंग्रेज़ी चैनल से छूते इस प्रदेश का शांतिप्रिय ग्रामीण पर्यावरण और इसकी सर्वव्यापक हरियाली पर्यटकों, विशेषकर अंग्रेज़ों को बहुत आकर्षित करती है।

लुआर प्रदेश का नामकरण *लुआर* (Loire) नदी के कारण हुआ है। पूर्व के पहाड़ी प्रदेश से निकलकर यह नदी अनेक जलप्रवाहों को अपनी गोद में लेती हुई उत्तर की ओर बढ़ती है और पश्चिम में अटलांटिक महासागर में जा मिलती है। इस नदी के मनमौजी प्रवाह के कारण इस प्रदेश के निवासियों को सदा सतर्क रहना पड़ता है। मौसम के अनुसार इसका पाट घटता-बढ़ता रहता है। इस प्रदेश की जलवायु अत्यंत मृदुल और पर्यावरण शांतिमय है। फलों और फूलों की उपज के कारण इसे 'फ़्रांस का बग़ीचा' भी कहते हैं। इस प्रदेश की विशेष ख्याति यहाँ के बरफ़ जैसे सफ़ेद पत्थर से बने पंद्रहवीं-सोलहवीं शती के दर्ज़नों राजमहलों और सामंतीय मकानों के कारण है। इनमें सबसे प्रसिद्‌ध राजमहल *शांबौर* (Chambord), *शनोनसो* (Chenonceau) और *आंबुआज़* (Amboise) नामक नगरों में हैं। गर्मी के दिनों में यहाँ शाम को ध्वनि और आलोक *सौं ए ल्यूमियैर* (Son et Lumière) का कार्यक्रम होता है। पैरिस से निकटता के कारण उद्‌योगपतियों ने इस प्रदेश के *औरलियाँ* (Orléans), *तूर* (Tours) और *ब्लुआ* (Blois) जैसे नगरों में दवाइयों, कंप्यूटरों और मशीनरी के उद्‌योग

धंधे स्थापित कर लिए हैं। *ब्लुआ* (Blois) में चौकलेट की बड़ी भारी फैक्टरी है। *सैं न ज़ैर* (Saint Nazaire) नामक पत्तन में बड़े-बड़े जहाज़ बनाए जाते हैं। इस प्रदेश के लोग शुद्ध फ़्रांसीसी भाषा और शिष्टाचार के जोशीले पक्षपाती माने जाते हैं।

अटलांटिक महासागर के तटवर्ती दक्षिण-पश्चिमी *अकितैन* (Aquitaine) प्रदेश के पठारों, पहाड़ियों और घाटियों की धरती भूविज्ञान की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। इस प्रदेश में इलैक्ट्रानिक, यांत्रिक और धातु-वैज्ञानिक अनेक केंद्र हैं। यहाँ के *तुलूज़* (Toulouse) नामक नगर में एअरबस, वायुयान और मिराज़ (Mirage) तथा *रफ़ाल* (Rafale) जैसे युद्धसामग्री विषयक अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण होता है। पर सामान्य जनता और विशेषकर विदेशी यहाँ के *बौर्दो* (Bordeaux) नगर के आस-पास की "अंगूरी लाल शराब" से अधिक परिचित हैं। सारे क्षेत्र में सैकड़ों जगह अंगूर के उद्योग बिखरे पड़े हैं।

बुर्गेञ (Bourgogne) (बर्गण्डी) पूर्वी फ़्रांस का प्रसिद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रदेश है। उत्तर से दक्षिण जाने वालों के लिए यह अनिवार्य मार्ग रहा है। सारे प्रदेश में रोमकालीन ऐतिहासिक अवशेष और प्रसिद्ध कैथीड्रल और मठ मिलते हैं। *सांस* (Sens) नामक शहर का बारहवीं शती में निर्मित कैथीड्रल गौथिक कला का आदि नमूना माना जाता है। *वैज़ले* (Vézelay) नामक शहर की पहाड़ी पर बसे रोमन शैली के धार्मिक तीर्थ में *सैं बरनार* (Saint Bernard) नामक धर्माधिकारी ने दूसरे धर्मयुद्ध की घोषणा की थी। उसने ही *फौंतने* (Fontenay) में एक मठ की स्थापना भी की थी। इसकी शयनशाला के अवशेष अब भी मिलते हैं। इस मठ में बाइबल के प्रतिलिपिकारकों की दीक्षा होती थी। कहते हैं कि उनकी जीवनशैली अत्यंत कठोर होती थी। दिन में केवल दो बार उन्हें रोटी और उबली भाजी मिलती थी। जाड़े के दिनों में उनकी लेखनशाला में केवल दो अँगीठियाँ रहती थीं। दिन भर काम करने के बाद उन्हें रात में ज़मीन पर बिछे पयाल के गद्दों और एक कंबल से गुज़र करना पड़ता था। प्रायः उन्हें अपने कपड़ों सहित ही सोना पड़ता था। इस प्रदेश की राजधानी

दीजों (Dijon) कला का एक प्रसिद्ध केंद्र है और यहाँ का संग्रहालय भी दर्शनीय है। छोटी-बड़ी नदियों और झरनों के पास बसे गाँव यहाँ के प्राकृतिक पर्यावरण को मनोहर बनाते हैं। यहाँ की नदियों में नौका भ्रमण की सुविधा है। सारे प्रदेश में अंगूरों की बेलों की भरमार रहती है। *योन* (Yonne) नदी के तट पर बसे *माकों* (Macon) नामक नगर के आस-पास सफ़ेद शराब और उसके दक्षिण की घाटी और पश्चिमी पर्वतशृंखला के *बोजोले* (Beaujolais) नामक क्षेत्र में लाल शराब बनाने के उद्योग हैं। इस प्रदेश में सरसों की खेती भी होती है। इसके बीज दवा-दारू और बीजों की चटनी के काम आते हैं। आश्चर्य है कि फ़्रांस में सरसों का तेल खाने के काम नहीं आता पर प्रयत्न यह हो रहा है कि इस तेल का उपयोग मोटरगाड़ियों के लिए हो सके।

फ़्रांस व जर्मनी के ऐतिहासिक परिवर्तनों के कारण फ़्रांस के पूर्व में *राईन* (Rhine) नदी पर बसा *अल्ज़ास* (Alsace) नामक प्रदेश कभी जर्मनी का और कभी फ़्रांस का भाग माना जाता था। पर दूसरे महायुद्ध के बाद से अब यह प्रदेश फ़्रांस का अभिन्न अंग है। यहाँ इन दोनों संस्कृतियों के सम्मिश्रण के अनेक प्रमाण मिलते हैं। वास्तव में स्विट्ज़रलैंड की निकटता से भी इन तीनों देशों में शिक्षा, उद्योग, कृषि और व्यापार के क्षेत्रों में आपसी सहयोग बढ़ता ही जा रहा है। कैथोलिक, प्रोटेस्टैंट और यहूदी लोग शांति से एक साथ रहते हैं। इन देशों के कई लोग रहते एक भाग में हैं और काम पड़ोसी देश में करते हैं। विश्वविद्यालयों में भी सहयोगी कार्यक्रम प्रचलित हैं जिनके अनुसार विद्यार्थियों, अध्यापकों और अनुसंधानकर्ताओं का विनिमय निर्बाध गति से होता रहता है। इन देशों की कई नगरपालिकाएँ भी आपसी योजनाएँ कार्यान्वित करती हैं। यूरोपीय संघ की संसद के अधिवेशन इस प्रदेश की राजधानी *स्ट्रासबुर्ग* (Strasbourg) में होते हैं। यह शहर उद्योग और बैंक-व्यापार का प्रसिद्ध केंद्र है और यहाँ का कैथीड्रल अत्यंत आकर्षक है। *वोज़* (Vosges) नामक पहाड़ी क्षेत्रों के जंगलों और घाटियों ने इस प्रदेश को अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान

किया है। यहाँ का 'मदिरा--उद्योग' भी विलक्षण है। यहाँ की *गेवुर्टज़्ट्रामिनर* (Gewürztraminer) नामक 'श्वेत मदिरा' अत्यंत सुगंधित और स्वादिष्ट होती है। इस प्रदेश के दर्जनों छोटे-छोटे गाँवों के बीच से होते हुए पचहत्तर मील लंबे 'मदिरा-मार्ग' का भ्रमण ग्रीष्म और शरद् ऋतु में विशेष रोचक होता है।

दक्षिणपूर्व और दक्षिण में फ़्रांसीसी *आल्प* पर्वत और भूमध्य सागर के बीच का *प्रोवांस आल्प कोत दाज़्यूर* (Provence Alpes-Côte d' Azur) नामक प्रदेश स्विट्ज़रलैंड और इटली से सटा हुआ है। *प्रोवांस* (Provence) फ़्रांस का बहुत प्राचीन भाग है। ईसा पूर्व छठी शती में ही यहाँ ग्रीक उपनिवेश स्थित थे। ईसा पूर्व दूसरी शती में यह प्रदेश रोमन विजेताओं के अधीन हो गया। तत्कालीन ऐतिहासिक अवशेष यहाँ अब भी मिलते हैं। *प्रोवांस* का *ग्रास* (Grasse) नामक शहर फ़्रांसीसी इत्रसाज़ी का केंद्र है। पुरानी परंपरा का रहस्य अब भी सुरक्षित है। सत्रहवीं शती से इस फूलों के स्वर्ग में चमेली, गुलाब और अन्य फूलों का उत्पादन होता है। अठाहरवीं शती में खुशबूदार सामग्री की माँग बढ़ने पर यहाँ नई तकनीक का प्रयोग आरम्भ हुआ। यहाँ उद्योगपति फूलों, चुने हुए वृक्षों की छालों के टुकड़ों और रसायन द्रव्यों का प्रयोग करते हैं। कच्चे माल, अनुसंधान कार्य तथा शीशे की मनोहारी बोतलों की डिज़ाइनों की मँहगाई और टैक्स के कारण इत्र की बोतलों का मूल्य बढ़ जाता है फिर भी फ़्रांस का तीन-चौथाई उत्पादन विदेशों में जाता है। यदि यहाँ के पर्यटक कोई सौगात ख़रीदना चाहते है तो वे फ़्रांसीसी इत्र को ही पहले ढूँढते हैं। इस प्रदेश के 'आल्प' पर्वत की छाया में अनेक गाँव बसे हैं। ये पर्वतारोहरण के केंद्र भी हैं। जाड़ों में सभी गाँवों में स्कीइंग की व्यवस्था और *शामोनिक्स* (Chamonix), *कूरशवैल* (Courchevel) और *मेजैव* (Mègève) जैसे गाँवों में *स्कीइंग* की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता है। फ़रवरी 1992 में *अल्बैरविल* (Albertville) नामक गाँव में जाड़ों के ओलंपिक खेलों का आयोजन हुआ था। उस समय इस सारे क्षेत्र का कायाकल्प हो गया था। यहाँ की झीलों में लोग 'बोटिंग' का आनंद भी लेते हैं। *कोत दाज़्यूर* अर्थात् 'नीलम तटवर्ती नगर' का *मार्सेई* नगर उद्योग और

व्यापार का केंद्र है। *नीस* की जलवायु अवकाशप्राप्त वयोवृद्ध लोगों के लिए लाभदायक मानी जाती है। *कान* (Cannes) नामक नगर में 'फ़िल्म समारोह' के दिनों में अत्यंत रौनक रहती है। इस सारे तट पर प्रायः अमीर फ़्रांसीसी और परदेसी बंगलों और बड़े-बड़े मकानों में रहते हैं। इस प्रदेश में उपलब्ध परिवहन की सुविधा, सुरंगों, रेलगाड़ियों और मोटर के राजपथ के कारण आल्प पर्वत शृंखला की छाया में बसे अन्य देशों की यात्रा भी की जा सकती है।

भूमध्य सागर के दक्षिण में फ़्रांसीसी प्रदेश *कौर्स* (Corse) एक द्वीप है। इसके *अजाक्स्यो* (Ajaccio) नामक नगर में *नैपोलियन बोनापार्ट* का जन्म 15 अगस्त, सन् 1769 को हुआ था। अब उसके जन्मस्थान को संग्रहालय बना दिया गया है। यह द्वीप कभी इटली और कभी फ़्रांस के अधीन रहा, पर अठारहवीं शती से यह फ़्रांस का अभिन्न अंग हो गया है। पिछले बीस वर्षों से यहाँ की जनता स्वतंत्र होना चाह रही है। इस माँग को शांत करने के लिए इसको स्वायत्त प्रदेश बनाने का प्रयत्न हो रहा है। हर समय नीले आकाश, जंगली पहाड़ियों और समुद्र के पारदर्शी नीलम जल के कारण इस पहाड़ी द्वीप को 'सौंदर्य का द्वीप' भी कहते हैं। पर्यटन यहाँ का प्रधान उद्योग है।

2. फ़्रांसीसी लोग

प्रागैतिहासिक समय से ही विभिन्न जातियों के लोग फ़्रांस में आते रहे हैं। चूँकि आज के फ़्रांसीसियों की किसी जाति विशेष के रूप में कल्पना करना संभव नहीं, अतः फ़्रांसीसी लोगों की चर्चा करना ही अधिक उचित है। यद्यपि इनका इतिहास पुराना है, पर इनके पुरखों की कथा आज के फ़्रांस के आदिम प्रदेश में बसी *"सैल्त"* (Celte) जाति से संबद्ध है। इन्हें *" गोलुआ "* (Gaulois) कहते हैं। योद्धा प्रवृत्ति के ये लोग शांति के समय कुशल कृषक भी थे। सारे प्रदेश की धरती के जंगलों को साफ़ करके इन्होंने उसे विभिन्न भागों में बाँटा, रास्ते बनाए और नदियों के पत्तनों का निमार्ण किया। इनकी *"सैल्तिक"* (Celtic) भाषा, सजीव धार्मिक परंपरा और सामान्यतया सारी सभ्यता दसवीं शती तक पश्चिम के कई देशों में फैली रही। ब्रिटेनी में इसके अवशेष अब भी मिलते हैं। आपसी झगड़ों में फँसे रहने से यह सारी जाति निर्बल हो गई और ईसा पूर्व पहली शती में रोमन आक्रमणकारी *जूलियस सीज़र* ने इन्हें अपने अधीन करना चाहा। अपने उद्देश्य की पूर्ति में उसे केवल आठ साल लगे। थोड़े समय में *"गोल"* (Gaule) प्रदेश एक बड़ा भूमध्यसागरीय प्रदेश बन गया। तब से यहाँ के निवासियों को 'गालों-रोमन' कहा जाने लगा। अब इन लोगों ने विजेताओं की धार्मिक मान्यताओं, उनकी भाषा लैटिन और उनकी जीवन-पद्धति को अपना

लिया। इनकी संस्कृति प्रधानतया *रोमन* हो गई। आधारभूत कृषक सभ्यता पर नागरिकता का प्रभुत्व हो गया। पुराने नगरों का नवीकरण हुआ और *प्रोवांस* प्रदेश में तथा *ल्यौं* और *पैरिस* जैसे नए नगर बनने लगे। सुंदर राजपथों द्वारा बड़े-बड़े शहरों को आपस में जोड़ दिया गया। पाँचवी शती में *गालो-रोमन* देश की भौगोलिक इकाई निश्चित हुई। पूर्व में *राईन* नदी और *आल्प* पर्वतश्रेणी, दक्षिण में भूमध्यसागर, पश्चिम में *पिरेने* की पर्वतश्रेणी और अटलांटिक महासागर इस देश की सीमा बाँधते थे। फ़्रांस के कई स्थानों में रोमनकालीन सभ्यता के स्मारक अब भी अवशिष्ट हैं। फ़्रांस का आधुनिक मानचित्र ऐतिहासिक परिर्वतनों का परिणाम है।

फ़्रांसीसी लोगों को अपनी राष्ट्रीय भाषा पर गर्व है। यह भाषा उनके 'फ़्रांसीसीपन' की विलक्षणता का एक चिह्न है। ऐतिहासिक और राजनैतिक कारणों के फलस्वरूप विश्व के पाँचों महाद्वीपों में पैंतालीस राष्ट्रों के लगभग पंद्रह करोड़ लोग इस भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा और संस्कृति के सूत्र में बँधे इन राष्ट्रों ने सन् 1986 में अपने संघ की स्थापना की। इसके विविध अधिवेशनों में इन देशों में सांस्कृतिक, शैक्षिक और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए विचार-विर्मश होता है और दीर्घकालिक योजनाओं और कार्यक्रमों पर निर्णय लिए जाते हैं।

फ़्रांसीसी भाषा की गिनती विश्व की आधुनिक छह प्रमुख भाषाओं में होती है। आज की फ़्रांसीसी भाषा का आदिम रूप *सेल्टिक परिवार* की प्राचीन अलिखित भाषा *गोलुआ,* रोमन साम्राज्य के जनसामान्य की *लैटिन* भाषा और अन्य भाषाओं और उपभाषाओं के सम्मिश्रण से बना। इस भाषा के नियत होने के प्रमाण आठवीं शती से मिलने शुरू होते हैं। लिपिकों और शासन की भाषा *लैटिन* से प्रभावित थी और साहित्य की भाषा में प्रांतीय भाषाओं के तत्वों का बाहुल्य था। धीरे-धीरे सोलहवीं शती में राजकीय सत्ता के सुदृढ़ होने पर भाषा की नीति निर्धारित हुई। इसका प्रमुख लक्ष्य देश भर में फ़्रांसीसी भाषा को निजी उच्च पद प्रदान करना था। लैटिन तथा ग्रीक भाषाओं से लिए तत्वों से भाषा

की समृद्धि हुई। राजदरबार और साहित्यिक बैठकों में भाषा का परिष्कार हुआ और भाषा के औचित्य पर बल डाला गया। साधारण जनता को "अच्छी" फ़्रांसीसी बोलने के लिए प्रोत्साहन दिया गया। सत्रहवीं शती से तो इस भाषा का विश्वभर में आदरणीय स्थान बनने लगा। यहाँ तक कि इस समय सभी शिष्ट व्यक्ति फ़्रांसीसी बोलने में आत्मगौरव समझते थे। इसी समय यह राजनयिक व्यवहार की भाषा हो गई। जनता की निष्ठा और प्रगति ने इस भाषा को समृद्ध किया है।

फ़्रांसीसी भाषा के साथ-साथ फ़्रांसीसी लोग गुप्त बोली *"आरगो"* (Argot) का उपयोग भी करते हैं। लेखक, कवि और विद्यार्थी ही नहीं, हर व्यवसाय, कारख़ाने और सैनिक टुकड़ी के लोग अपनी 'विशिष्ट' बोली का आविष्कार करते हैं। कभी वे सामान्य भाषा के शब्दों का वर्ण-विपर्यय करते हैं तो कभी रूप और अर्थ परिवर्तन करते हैं अथवा संक्षिप्त रूप बोलते हैं। गुप्त होते हुए भी यह बोली ऐसी रूढ़िबद्ध है कि विशिष्ट समूह के सब सदस्य इसे समझ लेते हैं।

फ़्रांस में यह भाषावैज्ञानिक प्रवृत्ति निराली नहीं है। यूरोप और एशिया के कई जनसमुदाय और खानाबदोश जातियाँ, बंजारे और भारत के ठग भी ऐसे माध्यम का प्रयोग करते थे। फ़्रांस में इस *'आरगो'* का जन्म लगभग पंद्रहवीं शती में हुआ माना जाता है। अठारहवीं शती में जो आरगो के शब्द थे वे अब फ़्रांसीसी भाषा में भी सम्मिलित हो गए हैं। *आरगो* का पृथक् शब्द-कोश भी बन गया है।

आज के परिवर्तनशील संसार में, जहाँ विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र के अनुसंधान में अंग्रेज़ी भाषा का प्रभुत्व है और अमरीकी संस्कृति का प्रचुर प्रचार है, फ़्रांसीसी लोग भाषा के विषय में किंकर्तव्यविमूढ़ हैं। कभी-कभी फ़्रांसीसी विद्वानों और अनुसंधानकर्ताओं को अंग्रेज़ी की शरण लेनी पड़ती है। यूरोपीय संघ की प्रगति के साथ लोगों को फ़्रांसीसी के अतिरिक्त अन्य भाषाएँ भी सीखनी पड़ रही हैं। साथ ही एक नई प्रकार की भाषा का जन्म हो रहा है जिसे *'फ़्रांग्ले'* (Franglais) कहते हैं — अर्थात् फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ी का सम्मिश्रण। फ़्रांसीसी

पब्लिसिटी, विडियो-क्लिप और पॉप संगीत में अंग्रेज़ी के प्रभाव से भी फ़्रांसीसी लोग मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। फिर भी उनका सतत प्रयास यही है कि उनकी भाषा यथासंभव शुद्ध रहे और उनका सांस्कृतिक निजत्व बना रहे।

अन्य फ़्रांसीसीभाषी विकसित और अविकसित देशों के सहयोग से फ़्रांस अपनी भाषा, संस्कृति और 'फ़्रांसीसीपन' के विस्तार को प्रोत्साहन दे रहा है। उदाहरणतः 1991 ई॰ में मिस्र के *अलेकज़ेंड्रिया* नामक नगर में फ़्रांस के तत्वावधान में *' फ़्रांसीसी भाषा के अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय '* का उद्घाटन हुआ। यहाँ स्थायी और सहायक प्राध्यापक, आहार और स्वास्थ्य, प्रशासन और मैनेजमैंट तथा पर्यावरण के क्षेत्रों में विद्यार्थी-श्रोताओं का प्रशिक्षण करेंगे। सरकारें, अंतर्राष्ट्रीय संस्थान और प्राइवेट संस्थाएँ इसको आर्थिक सहायता देंगी।

सैल्तिक और *रोमन* धार्मिक परंपरा का सबसे स्थायी प्रतीक कैथोलिक धर्म भी है। फ़्रांस की पाँच करोड़ अस्सी लाख की कुल आबादी में सत्तासी प्रतिशत लोग इस धर्म में आस्था रखते हैं, यद्यपि वे सभी इसके कर्मकांड का अनुसरण नहीं करते। जैसे धर्म भारतीय संस्कृति का मुख्य अंग है और इसने पुराकाल से मंदिरों, चैत्यों और विहारों इत्यादि के निर्माण को प्रेरणा दी है उसी प्रकार फ़्रांस में भी धर्म ने वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला का विकास किया है। फ़्रांस के हर गाँव और शहर में गिरजाघर आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन के केंद्र हैं। फ़्रांस के चारों कोनों में भव्य *कैथीड्रल, गिरजाघर* और *प्रार्थना भवन* विद्यमान हैं। ये सारी कलाकृतियाँ *ईसा मसीह,* उनकी माता *"मारी"* और उनके शिष्यों के जीवन और उपदेशों से अनुप्राणित हैं। पैरिस का *"नौत्र दाम"* (Notre-Dame) कैथीड्रल और *"सैंत शापेल"* (Sainte Chapelle) और *शैंपेन* प्रदेश के *रैंस* (Reins) नामक नगर के कैथीड्रल कला की दृष्टि से अनुपम है। सभी पुनीत स्थानों की रचना प्रायः ईसा मसीह के क्रॉस के आकार का अनुकरण करती हैं। शिखर के ऊपर क्रॉस और एक या दो लंबे टावरों में घड़ियाल होता है। इमारत के अंदर और बाहर संतों, धर्मात्माओं अथवा श्रद्धालु दाताओं के चित्र अथवा मूर्तियाँ होती हैं। परिक्रमा के दाहिने-बाहिने दालानों में प्रार्थनालय

बने होते हैं। काँच की बनी लंबी-चौड़ी खिड़कियों में धार्मिक अथवा सामाजिक जीवन की कथा बताई जाती है। कुछ बड़े कैथीड्रलों की वास्तुकला रोम के *"बाज़ीलिक"* (Basilique) महामंदिर के नमूने की होती है और कुछ की शैली *गौथिक* है। ''कम्यूनों'' (जनसमुदायों) में जनता के सहयोग से *गौथिक शैली* का विकास हुआ। यहाँ का पादरी आध्यात्मिक जीवन का पथप्रदर्शक माना जाता था। ''कम्यूनों'' में होड़ होती थी कि कौन सबसे विशाल कैथीड्रल बनाए। इसीलिए वहाँ की जनता धन दान करती, सुव्यवस्थित रूप से कारीगरों को एकत्र करती, उनके काम में हाथ बटाँती और बनते समय कैथीड्रल के पास अड्डा जमाकर पादरी का प्रवचन सुना करती।

आज भी जन्म, दीक्षा, विवाह के उत्सव और मरणोपरांत के संस्कार गिरजाघरों में मनाए जाते हैं। सामूहिक प्रार्थना के निश्चित समय प्रवचन और वाद्‌ययंत्र *औरगन* (Organe) के संगीत के अतिरिक्त गिरजाघर शांति, ध्यान और मनन के स्थान हैं। प्रार्थना के समय बाइबल का पाठ होता है। कृपामूर्ति भगवान ईसा मसीह में आस्था की आवश्यकता, पाप-पुण्य, सदाचार और वैयक्तिक उन्नयन के माध्यम इत्यादि यहाँ के प्रवचनों के विषय होते हैं। कुछ समय से इन प्रवचनों में धार्मिक और सामाजिक विषयों का सम्मिश्रण भी होने लगा है और कुछ पादरी अपनी समाजवादी विचारधारा के अनुसार आधुनिक समस्याओं पर भी अपने विचार प्रकट करते हैं। शिष्टाचार की दृष्टि से लोग प्रवचन को मौन रहकर सुनते हैं। पुरुष नंगे सिर और स्त्रियाँ सिर ढककर इन पूजास्थानों में प्रवेश करते हैं। कैथोलिक धर्म के अतिरिक्त कुछ फ़्रांसीसी *प्रोटेस्टैंट, यहूदी* और इस्लाम धर्म के अनुयायी भी हैं, कुछ बौद्‌ध भी हैं।

आज के दैनिक जीवन के तनाव और मानसिक अवसाद लोगों को धर्म की ओर धकेल रहे हैं। सदियों तक ईसाई धर्म सामाजिक जीवन और मानव के व्यक्तित्त्व को सार्थक बनाता आया है। परंतु कुछ लोगों में धार्मिक आस्था और कर्मकांड में विश्वास कम होता जा रहा है। उनकी शारीरिक और

मनोवैज्ञानिक कठिनाइयाँ बढ़ती जा रहीं हैं, उनका अकेलापन उन्हें मसोस रहा है। वैयक्तिक समस्याओं का गंभीर विश्लेषण करने के समय के अभाव में और मानसिक उलझन से मुक्त होने के लिए वे धर्म की अनभिज्ञ मान्यताओं की खोज में हैं। इसीलिए वे एशिया के धर्म और अन्य पंथों की जिज्ञासा में भी लगे हैं। कुछ लोग ज्योतिषियों और भविष्यवाणी के प्रचारकों की शरण लेते हैं।

फ़्रांस की संस्कृति के आधारभूत मूल्य और धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र का संविधान फ़्रांसीसी लोगों के व्यवहार और उनकी सामाजिक व्यवस्था को नियमित करते हैं। कह सकते हैं कि इन लोगों की विलक्षण विचारधारा और जीवन शैली के विकास में *फ़्रांसीसी राज्यक्रांति* (1789), *नैंपोलियन बोनापार्ट* (Napoléon Bonaparte 1769-1821) और जैनरल *शार्ल द गोल* (Charles de Gaulle, 1890-1971) का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

विश्व इतिहास और लोगों के स्वतंत्रता संग्राम में फ़्रांसीसी राज्यक्रांति का अद्‌वितीय स्थान है। यह राजनीतिक स्वाधीनता, सामाजिक समानता और गणतंत्र की स्थापना की माँग का सर्वप्रथम आंदोलन था। अमरीका के सफल स्वतंत्रता संग्राम के बाद फ़्रांसीसी लोग *लुई षोडश* (Louis XVI) के ईश्वर-प्रदत्त राजतंत्र से सहमत न थे। वे उसके निरकुंश शासन के अन्याय और उसकी रानी *मारी आन्त्वानेत* (Marie Antoinette) की अपव्ययता के विरुद्ध थे। राजदरबारियों और कुलीन वर्ग के विशेषाधिकारों को वे नहीं मानते थे। अठारहवीं शती के लेखकों और चिंतको से उन्होंने एक नया पाठ सीखा था कि फ़्रांस की तानाशाही से छुटकारा पाकर ही उन्हें स्वतंत्रता मिल सकती थी। इस समय एक ही नारा सुनने में आता था–*"जियो तो स्वतंत्र, नहीं तो मर जाओ"*। एक ही बीजमंत्र था– *राजतंत्र का उन्मूलन* और *गणतंत्र की स्थापना*। जनता ने राजा के सम्मुख अपनी माँगें प्रस्तुत कीं। वह आततायी टैक्सों से मुक्ति चाहती थी। उसे ज़मीन, रोटी और काम की ज़रूरत थी। अत्याचार और मृत्युदंड की जगह वह भाषण और अभिव्यक्ति की तथा विचार और धर्म की स्वतंत्रता चाहती थी और वह चाहती थी कि जन्म को नहीं, योग्यता को श्रेयस्कर माना जाए।

पर राजा और उसके दरबारियों ने लोगों की फ़रियाद न सुनी। इस क्रांति के समय बहुत खून-ख़राबा हुआ। *"लुई षोडश"* और *"मारी आन्त्वानेत"* को *"गियोटीन"* (Guillotine) से मृत्युदंड दिया गया। इस क्रांति के बाद विश्व में पहली बार *'मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा '* हुई। यह घोषणा आधुनिक फ्रांस के संविधान का आधार है और *संयुक्त राष्ट्रसंघ* की *"मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा"* का स्रोत है। राज्यक्रांति के परिणामस्वरूप *'स्वतंत्रता, समानता और बंधुता'* के तीन सिद्धांत आज के फ्रांसीसी लोगों के आर्दश हैं। फ्रांसीसी तिरंगे झंडे के नीले, सफ़ेद और लाल रंग क्रमशः इन्हीं तीन सिद्धांतों के द्योतक हैं। फ्रांसीसी राष्ट्रीय संगीत *"मारसयैज़"* (Marseillaise) का प्रचार भी इसी समय से हुआ। पूर्व में स्थित "स्ट्रासबुर्ग" नगर निवासी एक अफ़सर ने 'राइन' नदी की फ्रांसीसी सैनिक टुकड़ी के लिए इस *युद्धगीत* की रचना की थी। दक्षिण में *मार्सैई* नामक नगर के इस टुकड़ी के सदस्यों ने इस गान को पहली बार पैरिस में प्रस्तुत किया और तब से यह युद्धगान *'मारसयैज़'* नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसकी प्रेरणादायक लय और शब्दावली फ्रांसीसियों को ही नहीं अपितु विदेशियों को भी विजय के पथ पर अग्रसर होने का आह्वान देती है। क्रांति के बाद से ही फ्रांसीसी लोगों का अपनी पैतृक संस्कृति के प्रति आदर और उसकी सुरक्षा का अनुराग बढ़ता गया है। इसी समय खंडित स्मारकों के अवशेषों के लिए पैरिस में सबसे पहला संग्रहालय खुला। फ्रांस की राज्यक्रांति के आदर्शों की स्मृति को सजीव रखने के लिए उसकी दूसरी शताब्दी पैरिस में सन् 1989 में बड़ी धूमधाम से मनाई गई थी।

'स्वतंत्रता, समानता और बंधुता ' फ्रांसीसी *'मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा "* के अविभाज्य सिद्धांत हैं। ये शब्द राष्ट्रीय तथा प्रशासनिक इमारतों पर एक साथ दृष्टिगोचर होते हैं। इस घोषणा की धाराओं के अनुसार *'लोग स्वतंत्र पैदा होते हैं और आजीवन स्वतंत्र रहते हैं ', 'अधिकारों के मामले में वे एक समान हैं ', 'स्वतंत्रता का अर्थ है वह सब कुछ करने की क्षमता जो किसी दूसरे को हानि न पहुँचाए'....... ।'* 'बंधुता' का आदर्श ईसाई धर्म और विशेषकर

कैथोलिक धर्म की देन है। इसके अनुसार अपने पड़ोसी से अपने ही समान स्नेह करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। सभी फ़्रांसीसी इन सिद्धांतों का अक्षरशः अनुकरण नहीं करते पर वे प्रायः परहित के पक्षपाती और पर्याप्त उदार होते हैं। अनेक फ़्रांसीसी लोग अनाथालयों अथवा ख़तरनाक बीमारियों के ग़ैर-सरकारी अनुसंधान संस्थानों को दान देते हैं। इस दिशा में उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ऐसे दान पर टैक्स की छूट देती है।

फ़्रांसीसी लोगों के सुव्यवस्थित शासन, शिक्षा और कानून प्रणाली और फ़्रांस के केंद्रीकरण की व्यवस्था के आदिम रूप का श्रेय *नैपोलियन बोनापार्ट* को है। उसके आधिपत्य में ही कानून का विधिसंग्रह हुआ और शाही विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय बैंक की स्थापना हुई। फ़्रांसीसी लोग इस उत्साही योद्धा और सफल शासक पर गर्व करते हैं। बचपन से ही नैपोलियन परिश्रमी और निर्भीक



नैपोलियन बोनापार्ट (1769 ई.—1821 ई.)

था। सैनिक प्रशिक्षण के बाद बीस साल की आयु में उसने राज्यक्रांति में भाग लिया। उसके बाद धीरे-धीरे सैनिक वीरता के कारण उसने यूरोप के कई देशों पर विजय पाई। आत्मविश्वास इतना था कि वह किसी काम को '*असंभव*' नहीं

मानता था। उसकी महत्वाकांक्षा से प्रभावित तत्कालीन शासनमंडल ने उसे मिस्र भेज दिया। वहाँ उसने शासन की व्यवस्था की और तुर्कों को परास्त किया। फ़्रांस लौटने पर उसने अपनी सत्ता जमा ली और नए संविधान का संचालन किया। कई देशों पर विजय प्राप्त करने पर उसने सन् 1804 में अपने को *फ़्रांसीसियों का सम्राट्* और *इटली का राजा* घोषित कर दिया। अब वह *नैपोलियन प्रथम* के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पर समय की गति के साथ वह बहुत से संग्रामों में फँस गया। वह यूरोप में एक महान साम्राज्य स्थापित करना चाहता था, पर वह इस योजना में सफल न हो सका। *"बैल्जियम"* की राजधानी *"ब्रसल्ज़"* के पास "वाटरलू" के मैदान में सन् 1815 में अंग्रेज़ों के हाथों उसकी हार हुई। तब से उसके अद्वितीय जीवन का संध्याकाल आरंभ हो गया। पर फ़्रांसीसी संस्थाओं और स्मारकों पर उसकी छाप अब भी सजीव है।

दूसरे महायुद्ध के बाद से फ़्रांसीसी लोग *"जैनरल शार्ल द गोल"* को



जैनरल शार्ल द गोल (1890 ई.—1971 ई०)

राष्ट्रनायक और स्वतंत्र फ़्रांस का परित्राता मानते हैं। सैनिक स्कूल से निकलने पर उन्होंनें प्रथम महायुद्ध में भाग लिया था। कम उम्र में ही उन्होंने फ़्रांस की युद्ध नीति पर मनन किया और इस विषय पर दो ग्रंथ भी लिखे। देशप्रेमी और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ "शार्ल द गोल" की धारणा थी कि *'जीवन एक सतत संग्राम है और उसमें महत्वाकांक्षी ' और उत्साही व्यक्ति ही विजय पा सकते हैं'।* फ़्रांस पर जर्मन आक्रमण के समय उन्होंने दूसरे महायुद्ध में भाग लिया। जून 1940 में जर्मन सेना पैरिस आ पहुँची थी और फ़्रांसीसी सरकार को दक्षिण-पूर्व के *बौर्दो* नामक नगर में विस्थापित होना पड़ा था। इस समय जनरल पद पर आरूढ़ और सुरक्षा उपमंत्री "शार्ल द गोल" ने संधि के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और लंदन से 18 जून को बी.बी.सी. रेडियो पर सभी देशवासियों से अपनी जगह डटे रहने की अपील की। उस समय से वे *"स्वतंत्र फ़्रांस"* के नेता बन गए। तीन साल बाद उन्होंने *"राष्ट्रीय स्वतंत्रता की समिति"* बनाई और स्वयं उसके सभापति बन गए। युद्ध समाप्त होने पर यही समिति फ़्रांस के चतुर्थ गणतंत्र की भावी अंतरिम सरकार में परिणत हो गई। युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद फ़्रांस में बहुत-से राजनीतिक दलों का जन्म हुआ। उन्होंने भी अपनी पार्टी बनाई। पर इन सभी दलों के आपसी मतभेदों से फ़्रांसीसी सरकार अत्यंत अस्थिर रही। लगभग हर सप्ताह वह सरकार बदल जाती थी। ऐसी परिस्थिति में तंग आकर *शार्ल द गोल* ने अवकाश ले लिया और अपने 'संस्मरण' लिखने शुरू कर दिए। पर गृहयुद्ध की आशंका से फ़्रांसीसी संसद ने उन्हें प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया। इसी समय फ़्रांस के संविधान का सुधार हुआ और 'जनमत संग्रह' द्वारा उसकी स्वीकृति हुई। पंचम गणतंत्र की स्थापना के बाद 'जैनरल द गोल' नए संविधान के अनुसार सन् 1959 में राष्ट्रपति बने। तब जनता और राष्ट्रपति के बीच प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने की इच्छा से उन्होंने प्रस्ताव किया कि राष्ट्रपति *'वयस्क मताधिकार '* द्वारा चुना जाए। संसद ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। और जब सन् 1965 में राष्ट्रपति का चुनाव हुआ तो वे पुनः राष्ट्रपति बने। तीन साल बाद जब विद्यार्थी और मज़दूर

आंदोलन हुआ और उन्होंने शासन के विकेंद्रीकरण का प्रस्ताव रखा तो जनमत संग्रह उनके अनुकूल न रहा। साल भर बाद उन्होंने राष्ट्रपति पद त्याग दिया। 'जैनरल द गोल ' एक कुशल लेखक भी थे। उनके लिखे *'आशा के संस्मरण'* और *'युद्ध के संस्मरण '* फ़्रांस के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। उन्होंने घोषणा की थी कि 'अपने सारे जीवन में मैं फ़्रांस की एक विशिष्ट प्रतिमा की कल्पना करता आया हूँ। बिना महानता के फ़्रांस फ़्रांस नहीं हो सकता।' स्वाभाविक ही है कि ऐसे देशभक्त का सभी फ़्रांसीसी श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं। 1990 ई. में उनकी जन्म शताब्दी और 1991 ई. में उनके देहावसान की बीसवीं वर्षगाँठ सारे फ़्रांस में मनाई गई थी।

फ़्रांस की एकरूप सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से फ़्रांसीसी लोगों की जातीय विविधता के विषय में भ्रम हो सकता है। इस विविधता का कारण फ़्रांस में विदेशी लोगों का आगमन और आप्रवासन है। आदिकाल के अतिरिक्त मध्ययुग में भी शताब्दियों तक यहाँ विदेशी सैनिक, व्यापारी और विद्वान आते रहे हैं। आधुनिक काल में रूस के 'ज़ार' के पतन के बाद रूसी और जर्मनी के 'हिटलर', स्पेन के 'फ़्रैंको' और पुर्तगाल के 'सालाज़ार' के निष्ठुर शासनों के सताए राजनैतिक शरणार्थी फ़्रांस में आ बसे। जो भी व्यक्ति अपनी जाति, धर्म, राष्ट्रीयता और राजनीतिक विचारधारा के कारण अपने देश में सुरक्षा न पा सका वह फ़्रांस में आ गया। दूसरी ओर फ़्रांस का गणतंत्र और संविधान प्रजाति, धर्म, लिंग के विभेद को और विदेशी द्वेष को स्वीकार नहीं करता तथा *मानव की गरिमा और स्वतंत्रता* तथा *मानव अधिकारों की सुरक्षा* को प्राथमिकता देता है। आप्रवासन राष्ट्रीय जीवन का अभिन्न अंग रहा है जिससे फ़्रांसीसी कानून के अधीन विदेशी इस देश में स्वागत पाते रहे हैं, पर अवैध रूप से फ़्रांस में आने वाले विदेशियों के प्रति प्रशासन सतत सतर्क रहता है। राजनैतिक शरणार्थियों के अतिरिक्त फ़्रांस में श्रमिक वर्ग की कमी के कारण भी कोयले की खानों में काम करने के लिए पोलैंड और बैल्जियम से और राज-मिस्त्रियों के काम के लिए इटली, पुर्तगाल और स्पेन से भी बहुत लोग यहाँ आए हैं। दूसरे महायुद्ध

के बाद और विशेषकर सन् 1960 से वियतनाम, कांबोज और लाओस तथा अफ़्रीका के भूतपर्व उपनिवेशों की स्वतंत्रता के कारण वहाँ के लोगों के लिए फ़्रांस आने का रास्ता खुल गया। मोटर इत्यादि उद्योग-धंधों में काम करने के लिए उत्तरी-अफ़्रीका से मज़दूर और कृषकों का हाथ बटाने के लिए सामान्यतया संपूर्ण फ़्रांसीसी भाषी अफ़्रीका के लोग यहाँ आए हुए हैं। पिछले बीस साल से दक्षिण अमरीका के राजनैतिक उपद्रवों और मध्य एशिया में *लेबानान* के लंबे युद्ध से बचने के लिए और ईरान के शाह की हत्या के बाद ईरानी और तुर्कों के कुर्द भी फ़्रांस में आते रहे हैं। तात्पर्य यह है कि अपने देशों की राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों से दुखी और काम ढूँढने के उत्सुक तथा फ़्रांस की जलवायु, जीवन की स्वतंत्रता और सुविधा तथा *'सामाजिक सुरक्षा प्रणाली'* से आकृष्ट होकर हर प्रकार के विदेशी फ़्रांस के नागरिक हो गए हैं।

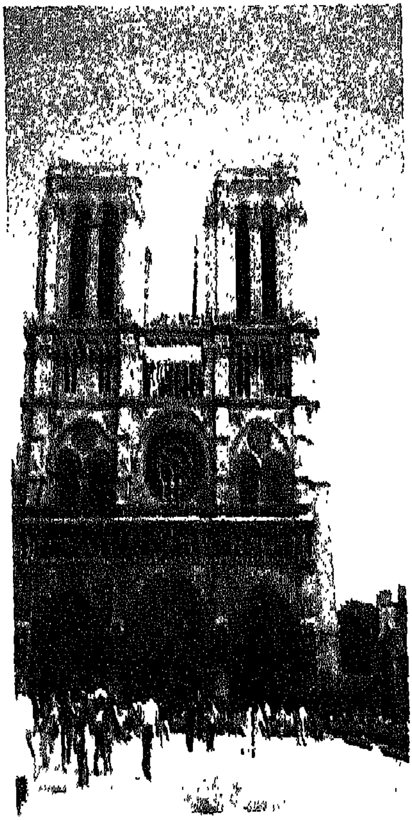
इस प्रकार आज के फ़्रांस में यूरोप, अफ़्रीका तथा अन्य फ़्रांसीसी भाषी देशों और एशिया से आए तीन मुख्य प्रकार के विदेशी दिखाई देते हैं। फ़्रांस की कुल लगभग पचास लाख की विदेशी जनता में तीस लाख इस्लाम धर्मावलंबी हैं। स्पष्ट है कि यूरोपीय संस्कृति में पले ईसाई या यहूदी धर्मावलंबी परदेसियों को फ़्रांसीसी पर्यावरण में समावेश की कोई समस्या पैदा नहीं होती। वे शीघ्र ही फ़्रांस को अपना देश मान लेते हैं, अपने उद्भव और मातृभूमि से दूर अपना नाम भी बदल लेते हैं और विधिवत् फ़्रांसीसी नागरिक बन जाते हैं। पर अरब और मुसलमान राष्ट्रों के साथ फ़्रांस की पुरानी मैत्री और उनके इतिहास और संस्कृति के अध्ययन और अध्यापन की परंपरा के बावजूद इस्लाम धर्मावलंबियों के समावेश से कई समस्याएँ उपस्थित हो रही हैं। धर्मनिरपेक्ष फ़्रांसीसी गणतंत्र में जैसे सतासी प्रतिशत जनता के लिए प्रार्थनास्थान हैं वैसे ही मुसलमानों के लिए एक हज़ार से ज़्यादा मस्जिदें और प्रार्थना भवन हैं। उन्हें अपने धर्मानुसार जीवन व्यतीत करने की पूर्ण स्वतंत्रता है पर उनका फ़्रांसीसियों से घुलना-मिलना इतना सरल नहीं है। उनके और फ़्रांसीसियों के संस्कार, आचार-व्यवहार, रहन-सहन, खानपान और जीवन शैली भिन्न हैं। पर यह मानना होगा कि दूसरी-

तीसरी पीढ़ी के नवयुवक और नवयुवतियाँ फ़्रांस को अपनाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। समस्या पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चों की है। एक ओर वे धर्मनिरपेक्ष स्कूल व वातावरण, शैक्षिक आमोद-प्रमोद और व्यायाम के कार्यक्रम का अनुसरण करने को प्रतिबद्ध हैं और दूसरी ओर अपने परिवार और माता-पिता के आदेशानुसार मौलिक धर्म और रीति-रिवाज़ों का पालन करने को मजबूर हैं। उनका व्यक्तित्व *खंडित व्यक्तित्व* के चिह्न प्रस्तुत करता है। सौभाग्य की बात है कि फ़्रांसीसी प्रशासन इन विद्यार्थियों की मूल संस्कृति की और उनके वैयक्तिक और सामुदायिक विकास की संभावनाओं का ध्यान रखते हुए शिक्षा नीति बनाता है। संभव है कि निकट भविष्य में प्रशासन की सहायता और निजी संकल्प शक्ति से ये लोग अपने माता-पिता के देशों की मूल संस्कृति और फ़्रांस की संस्कृति और पर्यावरण से लाभ उठा सकेंगे।

सभी देशों की तरह फ़्रांस में भी पूँजीवादी, समाजवादी अथवा साम्यवादी, धर्मनिष्ठ अथवा धर्मनिरपेक्ष, रूढ़िवादी अथवा विकासवादी, वर्गदंभी अथवा 'कल के नवाब', कर्मठ अथवा आलसी, उत्तेजित अथवा धीरचेता, झगड़ालू अथवा शांतिप्रिय—सभी प्रकार के लोग मिलते हैं। फ़्रांस में पहले धनी और निर्धन में भेद करना सरल था, पर अब अधिकतर लोगों को सभी आधुनिक भौतिक सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वे ऊपर से एक-समान लगते हैं। लोगों में भेद होता है उनके शिष्ट आचार-व्यवहार और शिक्षा के स्तर के अनुसार। बहुत-से ऐसे लोग हैं जिनका जन्म साधारण कुलों में हुआ और जिन्होंने अपनी महत्वाकांक्षा और दृढ़संकल्प से अपनी-अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधार ली। समाजशास्त्री मानते हैं कि सामान्यतया फ़्रांसीसियों के निम्न वर्ग किए जा सकते हैं—वे जो परंपरागत संस्कृति और पैतृक संपत्ति के संरक्षक और ललित कला प्रेमी हैं, वे जो आत्मोन्नयन व अर्थोपार्जन में लगे हैं, वे जो आत्मकेंद्रित, व्यक्तिपरक और संकीर्ण मनोवृत्ति वाले हैं, वे जो परोपकारोन्मुख तथा उदार हैं और समाज कल्याण के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, वे जो सामाजिक बंधनों

से दूर ग़ैर-मिलनसार अथवा प्रकृति के प्रेमी हैं और खुले में जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, वे जो सिनेमा, दूरदर्शन और अन्य इलैक्ट्रॉनिक खेलों के मतवाले हैं और वे जिनका प्रधान लक्ष्य दूसरों से लाभ उठाकर या असामाजिक ढँग से पैसा कमाकर गुलछर्रे उड़ाना है। निश्चय ही इन वर्गों को अटल नहीं माना जा सकता। पर यह सच है कि फ़्रांसीसी लोग अपनी भाषा और संस्कृति में सूत्रबद्ध देशप्रेमी, मानवता और अंतर्राष्ट्रीयता के समर्थक और अल्पसंख्यक जातियों और अविकसित देशों के प्रति गहरी सहानुभूति रखने वाले हैं। आपस में बातचीत करते समय हर राष्ट्रप्रेमी की तरह वे भी अपने देश की आलोचना करने से चूकते नहीं, पर विदेशियों की आलोचना स्वीकार करने में उन्हें कठिनाई होती हैं। कुछ यूरोपीय लोग फ़्रांसीसियों के देशाभिमान की आलोचना करते हैं और उन्हें "शोवें" (chauvin) निर्धारित करते हैं। उनकी यह धारणा है कि फ़्रांसीसी लोग हर दृष्टिकोण से अपने देश को सर्वोत्तम और सर्वोत्कृष्ट मानते हैं और यह आलोचना नितांत निर्मूल भी नहीं है।

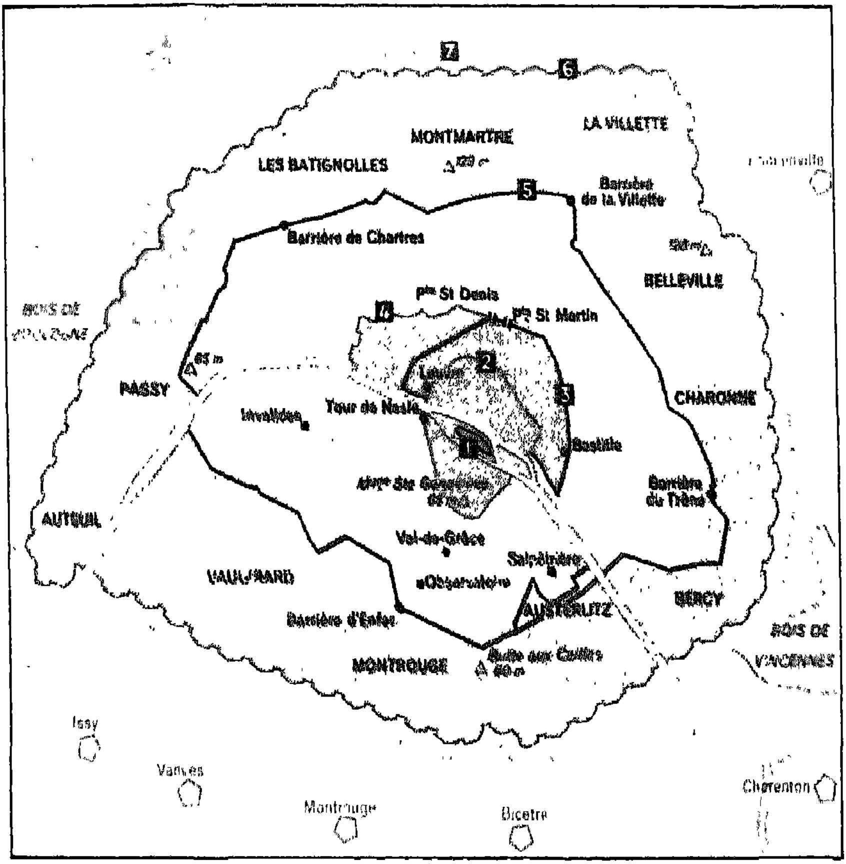
3. पैरिस की सैर



नोत्र दाम : पैरिस का प्रवेशद्वार

फ़्रांस की राजधानी और *"ईल द फ़्रांस"* (Ile de France) प्रदेश के सरताज पैरिस का गौरव विश्व की सभी राजधानियों से बढ़-चढ़कर है। इसके सौंदर्य,

पैरिस नगर



बुआ द बुलोञ BOIS DE BOULOGNE, पासी PASSY, ओतई AUTEUIL, वोजिरार VAUGIRARD, मौंरूज MONTROUGE, बर्सी BERCY, बुआ द वेंसैन BOIS DE VINCENNES, बास्ति BASTILLE, मोंताञ सैंत जनवियैव Mgne Ste Genevlèvè, ऐंवलिद Invalldes, लूव्र LOUVRE, मौंमार्त्र MONTMARTRE, ला विलैत LA VILLETTE

उत्तेजनापूर्ण वातावरण और आकर्षण का संदेश संसार के कोने-कोने में पहुँच चुका है। चुंबक की तरह यह अनोखा नगर फ़्रांसीसी प्रदेशों के निवासियों और परदेसियों को अपनी ओर खींचता है। अन्य प्रदेशों के लोग जब यहाँ आते हैं तो उन्हें ऐसा अनुभव होता है कि उनका स्तर ऊँचा हो गया है, ठीक उसी तरह जैसे एक देहाती शहर में आकर जीवन की एक नई दिशा पा लेता है। प्रदेशों की शांत गतिविधि से निकलकर पैरिस की भीड़भाड़ और भागदौड़ में खपने में उन्हें समय अवश्य लगता है पर अपने विकास की संभावना उन्हें धैर्य धारण करने में सहायता देती है। राज्याधिकारी और प्राध्यापक पैरिस में अपनी नियुक्ति को सफलता की चरम सीमा मानते हैं। वैयक्तिक स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति की सुविधा से पैरिस का सामान्य पर्यावरण मानव जीवन को उल्लासपूर्ण बना देता है। निजी सर्जन शक्ति के विकास की आशा से अन्य प्रदेशों के लोगों ने ही नहीं, बहुत से विदेशियों ने भी पैरिस में अपना घर बना लिया है। बहुत-से बुद्धिजीवी, लेखक और कलाकार पैरिस में सम्मान पाने से ही अपना जीवन कृतकृत्य समझते हैं। पर जो विदेशी पर्यटक पैरिस में थोड़े दिनों के लिए आते हैं वे यहाँ के पर्यावरण का पूरा लाभ नहीं उठा पाते और न इस नगर का रहस्य ही समझ सकते हैं। फ़्रांसीसी भाषा न जानने वाले पर्यटकों की दशा तो और भी अधिक कठिन होती है। या तो वे पैरिस में बसे अपने हमवतन लोगों के साथ रहते हैं या पर्यटन एजेंसियों की सहायता ढूंढ़ते हैं। सामान्यतया वे पैरिस को सतही दृष्टि से ही देखते हैं। वे कुछ मुख्य इमारतों को देखकर, एक-दो संग्रहालयों में जल्दी-जल्दी जाकर, बाज़ारों और बड़े स्टोरों से कुछ उपहार और स्मृतिचिह्न ख़रीदकर, मनोरंजन की रंगशालाओं में थोड़ा समय बिताकर और *"भड़कीले पैरिस"* में भ्रमण कर घर लौट जाते हैं। कहने को वो पैरिस देख आए।

वास्तव में पैरिस एक नगर मात्र नहीं, एक विचित्र दुनिया है– फ़्रांसीसी दुनिया का प्रमुख रंगमंच है। यह फ़्रांसीसी इतिहास का मूर्तिमान सार, संस्कृति का खुला संग्रहालय, मानवोत्कर्ष का स्रोत और मानवीय उपलब्धियों का लघु

ब्रह्मांड है। जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं–धर्म अथवा दर्शन, शिक्षा अथवा विज्ञान, साहित्य अथवा प्रकाशन, कला अथवा संगीत, नृत्य अथवा नाटक, वित्त अथवा व्यापार, शिल्प अथवा उद्योग, राजनीति अथवा अर्थशास्त्र, पाकशास्त्र अथवा फ़ैशन –जिसमें पैरिस ने प्रतिभावान और मौलिक व्यक्तियों को आश्रय न दिया हो। यह जानना कठिन है कि लोग अपने को *पैरिज़ियन* कहने में अधिक गौरव मानते हैं अथवा फ़्रांसीसी कहने में। सोलहवीं शताब्दी के एक लेखक के अनुसार '*यह नगर सब से अधिक* महान है तो अपनी विलक्षणता और अनेकरूपता के कारण'। पिछली चार शतियों की सतत सक्रियता और परिवर्तनों के बावजूद यह कथन आज भी सच है।

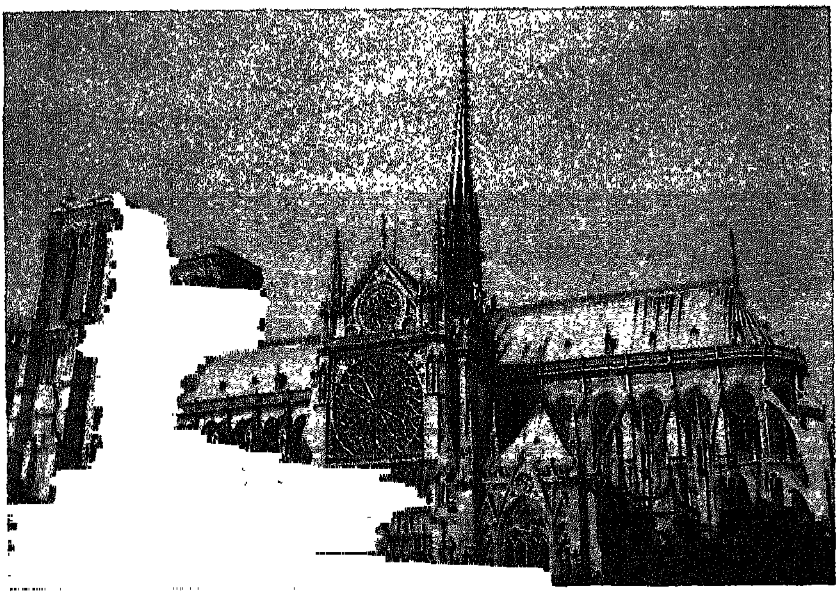
पैरिस की भौगोलिक स्थिति अत्यंत सुंदर है। दूर-दूर तक शहर के चारों ओर पहाड़ियाँ हैं और आसपास उपजाऊ समतल भूमि। शहर बीचों-बीच बहती सैन नदी के वाम और दक्षिण तट पर बसा है। यातायात के लिए सैंतीस पुल बने हैं जिनमें से कई स्वयं में भी दर्शनीय हैं। सैन नदी पैरिस की समृद्धि का कारण रही है। पुराने चित्रों से पता लगता है कि पहले पैरिस एक बंदरगाह था, यहाँ बहुत-सी नौकाएँ थीं और यह जलमार्गों का चौराहा था। अधिकतर परिवहन पानी पर होता था। रोमन समय से ही *'नाविकों का निगम'* बहुत शक्तिशाली हो गया था। पैरिस निगम का प्रधान ही उनके निगम का प्रधान भी होता था। नौका ही आज भी पैरिस नगरपालिका का प्रतीक है– उसके साथ के आदर्श वाक्य के अनुसार *'नौका डाँवाडोल होती है पर डूबती नहीं।'* नगरपालिका ने पर्यटकों के लिए सैन नदी के तट को फूलों की क्यारियों और पटरियों से अलंकृत कर दिया है। व्यापारिक नौपरिवहन के अतिरिक्त सैन नदी पर नौकाविहार की व्यवस्था भी है। साथ ही नौका-बसें भी चलने लगी हैं जिससे पर्यटक पैरिस के प्रधान संस्मारकों को एक नए दृष्टिकोण से देख सकते हैं।

सैन नदी की दो भुजाओं से आलिंगित *"ईल द ला सिते"* (Ile de la Cité) 'नगर का द्वीप ' और *ईल सें लुई* (Ile St. Louis) ' सें लुई द्वीप ' पैरिस का सबसे पुराना भाग है। *ईल सें लुई* में अब भी बहुत-से पुराने महल दर्शनीय,

हैं। *ईल द ला सिते* और पड़ोस की सेंत जनवियैव (Sainte Geneviève) पहाड़ी पर ही फ़्रांसीसियों के पूर्वज गालो-रोमनों का निवास स्थान था। पहली शती में इस नगर को *ल्यूतेस* (Lutèce) कहा जाता था। तत्कालीन पुरातत्वावशेष *क्लूनी* (Cluny) संग्रहालय में सुरक्षित हैं। गडरिया लड़की, जो बाद में सेंत जनवियेव के नाम से प्रसिदध हुई, पैरिस की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। कहते हैं कि उनकी प्रेरणा से ही *ल्यूतेस* निवासियों ने आक्रमणकारियों के विरुद्ध विजय पाई। एक से अधिक बार पैरिस विदेशी फ़ौजों का शिकार हुआ पर वह कभी झुका नहीं।

ईल द ला सिते में फ़्रांस का विश्व-प्रसिद्ध केथीड्रल *'नोत्र दाम'* अर्थात् *'हमारी देवी'* है। छठी शती के एक गिरजाघर के स्थान पर इसका निर्माण बारहवीं शती में आरंभ हुआ और चौदहवीं शती में समाप्त हुआ। इस समय पैरिस पाश्चात्य संस्कृति के प्रसारण का केंद्र था और उस संस्कृति का आधार ईसाई धर्म था। तभी *'ईल द फ़्रांस'* के प्रदेश में स्थापत्य की गौथिक शैली का आविर्भाव हुआ और यह शैली यूरोप भर में फैल गई। धार्मिक संस्थाओं, राज्य निधि तथा अनगिनत श्रद्धालु मज़दूरों, कारीगरों और लकड़ी तथा शीशे का काम करने वाले शिल्पकारों ने इसकी रचना की। सामने के इसके तीन महान प्रवेशद्वारों पर ईसाई धर्म के प्रचारार्थ बाइबल के आधार पर बनी अनेक मूर्तियाँ हैं। इस प्रकार अनपढ़ लोग भी बाइबल की कथा को जान सकते थे। दरवाज़ों के ऊपर रंगीन शीशे से बने गोलाकार वातायन कारीगरों की कला और धैर्य के अत्यंत सुंदर प्रमाण हैं। द्वारों के दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे टॉवर हैं, एक टॉवर की सीढ़ियों से ऊपर जाकर पैरिस का भव्य दृश्य देखा जा सकता है–विशेषकर पूर्व से पश्चिम दिशा में जाती हुई सैन नदी के धूमिल पानी पर बने पुलों का और पैरिस के मुख्य संस्मारकों का। *नोत्र दाम* के घड़ियाल की ध्वनि बहुत ही मधुर है। कहते हैं कि जब सत्रहवीं शती में इसको दुबारा ढाला गया था तो औरतों ने अपने सोने और चाँदी के ज़ेवर दे डाले थे और उनकी मिलावट से ही यह ध्वनि इतनी

मधुर हो गई है। कैथीड्रल के अंदर जगह-जगह पर प्रार्थनालय हैं जिनके निर्माण के लिए विविध निगमों और धनाढ्यों ने तेरहवीं-चौदहवीं शती में दान दिया था। इसके धार्मिक-कोश-गृह में विविध आभूषण, ईसामसीह का *काँटों का मुकुट, पावन कील* और उनके *क्रॉस* का एक टुकड़ा सुरक्षित है। धर्मावलंबियों के लिए यह एक महान तीर्थस्थान है। इस कैथीड्रल के प्रांगण में ही 1980 ई. में पोप जाँ पॉल द्वितीय (Jean Paul II) ने हजारों श्रद्धालुओं के सामने *ख्रीष्ट याग* मनाया था।



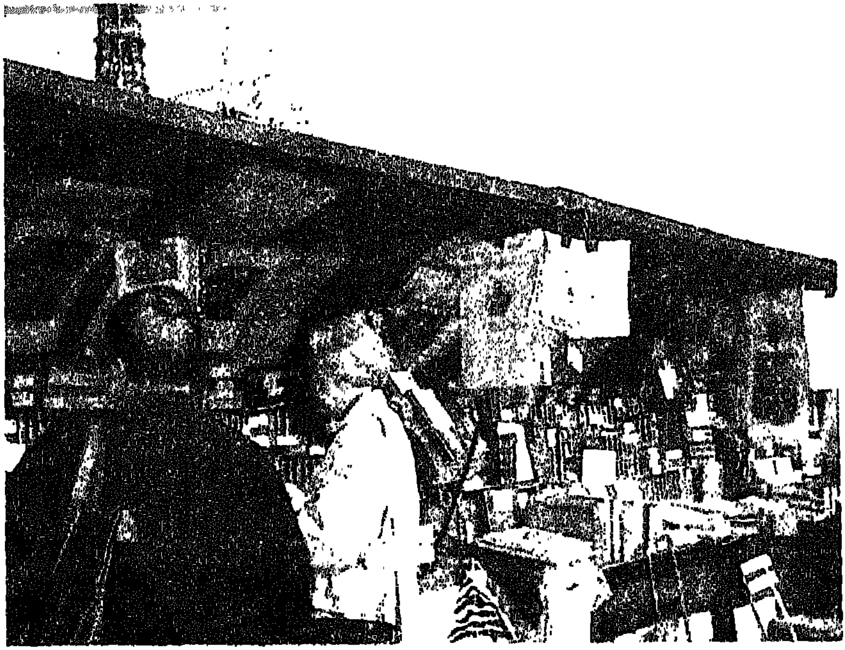
नोत्र दाम का पक्षीय दृश्य

नोत्र दाम के पास ही तेरहवीं और बीसवीं शती के बीच निर्मित इमारतों में से अब एक राजमहल अवशिष्ट है जहाँ पर फ्रांस का न्यायालय काम करता

है। मध्ययुग में इसके पास फ़्रांस के राजाओं के महल की सुरक्षा करने वाले *कोंसियैर्जे* (Concierge) रहते थे। यही भाग अब *कोंसियैर्जरी* (Conciergerie) कहलाता है। चौदहवीं शती में यह कारागार बन गया था। फ़्रांसीसी राज्यक्रांति के समय सम्राज्ञी *मारी आंत्वानेत* और एक हज़ार से ज़्यादा नागरिकों को यहीं बंद किया गया था। अब यह क्रांतिकालीन कथा का संग्रहालय है–तत्कालीन प्रलेख, मारी आंत्वानेत के गले का क्रॉस (हार) और लोगों का सिर काटने वाला यंत्र गियोतीन (Guillotin) यहाँ पर रखे हैं। इस यंत्र का आविष्कार डॉक्टर *गियोतें* (Guillotin) ने मृत्युदंड को अधिक 'सहनीय'बनाने के लिए किया था।

राजमहल से सटा हुआ लकड़ी का बना तेरहवीं शती का *सैंत शापेल* नामक पावन प्रार्थनालय है। यह राजा *सैं लुई* (Saint Louis) का निजी प्रार्थनालय था। निचली मंज़िल उसके नौकरों के लिए थी और ऊपरी मंज़िल ईसा के जन्म संबंधी स्मृतिचिह्नों को रखने के लिए। राज्यक्रांति के समय बचाए गए ये स्मृतिचिह्न अब *नोत्र दाम* के कोशगृह में रखे हैं। रंगीन शीशे से बनी खिड़कियाँ और वातायन इस प्रार्थनालय की विशिष्टताएँ हैं जिनमें एक हज़ार से ज़्यादा धार्मिक दृश्यों का चित्रण हुआ है। सूरज की किरणें जब इन पर पड़ती हैं तो सारा आभ्यंतर रंग-बिरंगा हो जाता है। लोग इसे 'बाइबल का शीश महल' भी कहते हैं।

यहीं से थोड़ी दूर सैन नदी के वाम तट पर ही *ऐंस्तित्यू द फ़्रांस* (Institut de France) अर्थात् 'फ़्रांस का महल' है। इस संस्थान की विषयानुसार पाँच अकादेमियाँ हैं–फ़्रांसीसी साहित्य, स्थापत्य और ललितकला, नीति और राजनीति शास्त्र, विज्ञान, चिकित्सा और जीवविज्ञान और प्राचीन साहित्य और इतिहास। मान्य फ़्रांसीसी विद्वान, लेखक, चिंतक और अनुसंधानकर्ता इन अकादेमियों के आजीवन सदस्य होते हैं। विदेशों में *'अकादेमी फ़्रांसैज़* (Académie Francaise) अधिक प्रसिद्ध है। फ़्रांसीसी भाषा का शोध और मानकीकरण इसका मुख्य ध्येय है। इसके चालीस सदस्यों को 'अमर्त्य' कहा जाता है। 1988 ई. तक यह अकादेमी पुरुषों के क्लब के समान थी, पर तब से तीन प्रसिद्ध



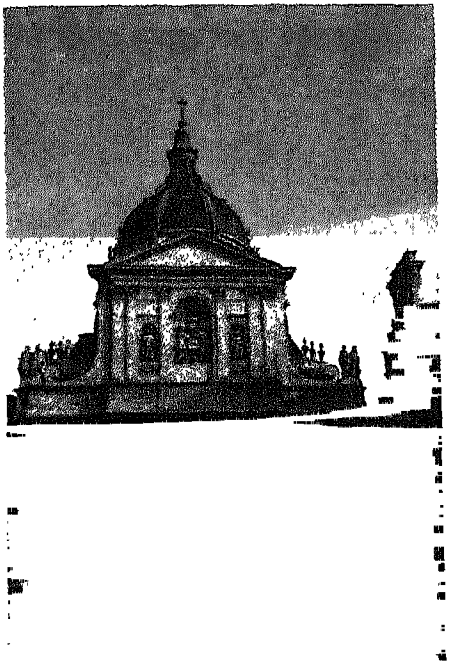
सेन नदी के 'बुकिनिस्त' की दुकान

लेखिकाएँ भी इस संस्थान में चुनी गई हैं।

नोत्र दाम के आसपास सैन नदी के दोनों तटों की पटरियों पर घूमने वालों को एक विचित्र दृश्य आकर्षित करेगा। इनकी मुँडेरों पर पेटियों में रखी पुरानी किताबें सजी दीखती हैं और बाहर पोस्टर और रंगीन चित्र व पोस्टकार्ड। इन अस्थायी स्टालों के मालिक *'बुकिनिस्त'* (bouquiniste) अर्थात् 'किताबवाले' कहलाते हैं क्योंकि प्रचलित 'आरगो' भाषा में पुस्तक के लिए 'बुकें' शब्द का प्रयोग होता है। फ़्रांस के अन्य कई शहर हैं जो नदी-तटों पर बसे है, पर कहीं भी बुद्धिजीवियों और पुस्तक-प्रेमियों के दिल-बहलाव का ऐसा दृश्य नहीं दीखता। इन किताबवालों का धंधा पुराना है। सोलहवीं शती में *ईल द ला सिते*

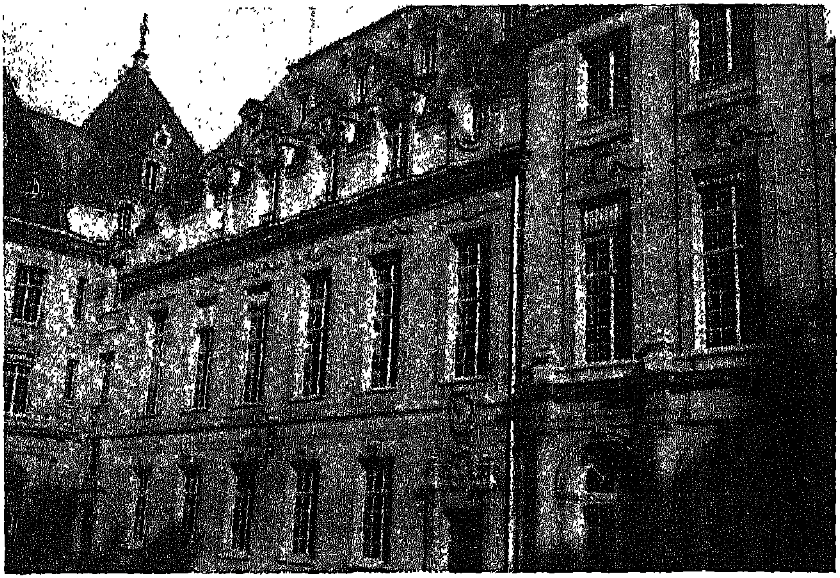
पर फेरीवाले धार्मिक पुस्तकें, पंचांग और जंतरियाँ बेचते थे। पर सत्रहवीं शती के आरंभ में पौं-नफ़ (Pont-neuf) अर्थात् 'नया पुल' बनने पर फ़्रांसीसियों को आकर्षित करने के लिए इन लोगों ने उसके पास ही अपना अड्डा बना लिया। अब इन दुकानों को नियमाधीन कर दिया गया है। अब 'बुकिनिस्त' शिष्टाचार और सार्वजनिक विधि और व्यवस्था के विरुद्ध कोई सामग्री नहीं बेच सकते। उनकी पेटियाँ साहित्यिक और सांस्कृतिक ग्रंथों से भरी रहती हैं। दुकान उठने के बाद सारी सामग्री गहरे हरे रंग की पेटियों में बंद रहती है। *पौं-नफ़* बनने के समय सबसे नया पुल था। उसकी बारह महराबों पर बहुत-से हास्यजनक चित्र खुदे हैं। पर अब यह पैरिस का सबसे पुराना पुल है। इसके बीचोंबीच घोड़े पर सवार राजा *ऑरी चतुर्थ* (Henri IV) की मूर्ति है।

ईल द ला सिते के अतिरिक्त सेंत जनवियैव पहाड़ी के आसपास का इलाका कार्तिये लतें (Quartier Latin) अर्थात् *'लैटिन क्वार्टर'* पैरिस का सबसे पुराना भाग है। यहीं पर फ़्रांस के उत्तर-पूर्वी भाग में जन्मे पादरी *द सौरबों* (de Sorbon) ने सन् 1215 में विश्वप्रख्यात *सौरबोन विश्वविद्यालय* की स्थापना की थी। आरंभ में देश-विदेश के धर्मवैज्ञानिक यहाँ एकत्र होते थे। धीरे-धीरे सभी प्रकार के विद्वानों के लिए यह तीर्थस्थान बन गया। सदियों से सौरबोन विश्वविद्यालय ने हज़ारों लोगों की विचारधारा को प्रेरित किया है और उनके ज्ञान को मानवीय दिशा दिखाई है। यहाँ के विद्यार्थियों और अध्यापकों की सर्जन शक्ति से इसकी ख्याति अक्षत रही है। सन् 1968 में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विस्तार और विद्यार्थियों और अध्यापकों की वृद्धि और शिक्षा-सुधार के बाद इस एक विश्वविद्यालय को, विषय की विशिष्टता के अनुकूल, तेरह विश्वविद्यालयों में विभाजित किया गया है। पर *सौरबोन विश्वविद्यालय* का गिरजाघर और ग्रंथागार पुरानी इमारत में अब भी बरकरार है। यहाँ पर अब विश्वविद्यालय का प्रशासन केंद्र है।



सौरबोन विश्वविद्यालय का गिरजाघर

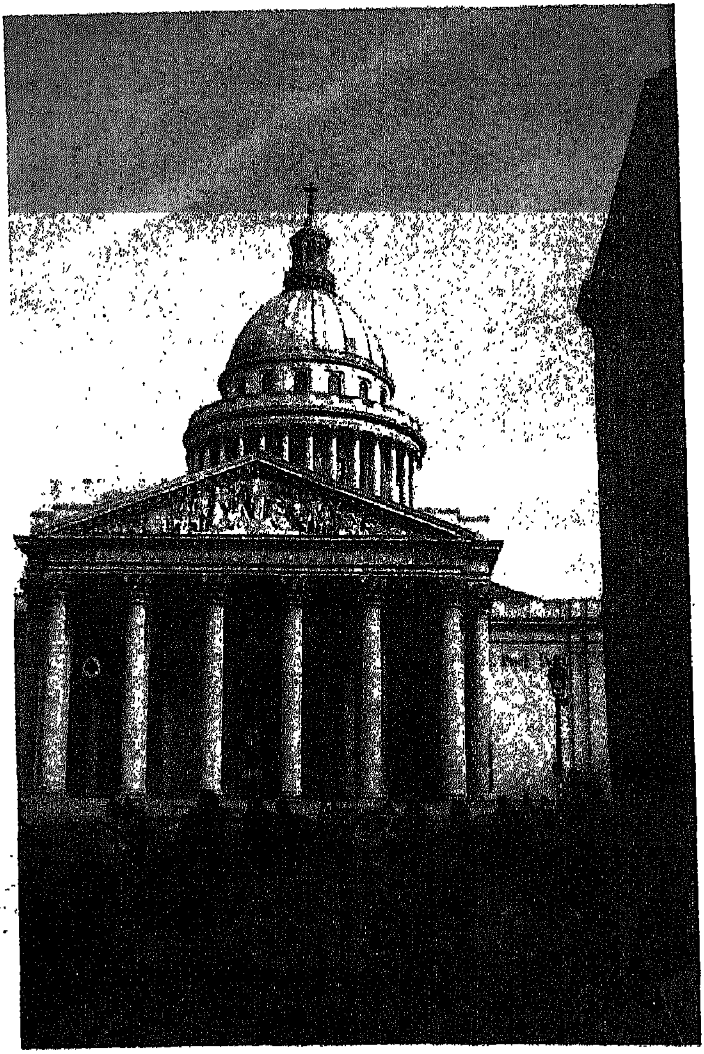
सौरबोन के पास ही गालो-रोमनकालीन स्नानागारों के स्थान पर सोलहवीं शती में *कॉलेज द फ्रांस* (Collège de France) की स्थापना हुई। तत्कालीन *सौरबोन* के संकीर्ण धार्मिक पक्षपात के विरुद्ध बाइबल के वैज्ञानिक, निष्पक्ष और स्वतंत्र अध्ययन के लिए लैटिन, हीब्रू और ग्रीक भाषाएँ सिखाने की व्यवस्था की गई। रूढ़िवादी धर्म वैज्ञानिकों के समक्ष शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने और समझने की आवश्यकता थी। सत्रहवीं और अठारहवीं शती में धर्मविज्ञान के अतिरिक्त यहाँ गणित, चिकित्सा, शल्यचिकित्सा, वनस्पतिविज्ञान, ज्योतिष और अरबी भाषा जैसे अन्य विषयों का अध्ययन आरंभ हुआ। उन्नीसवीं शती के आरंभ से इस संस्थान में भारोपीय भाषा-विज्ञान, भारतविद्या और बौद्ध



आधुनिक सौरबोन विश्वविद्यालय का पुस्तकालय

धर्म के विशेषज्ञों ने फ़्रांसीसी बुद्धिजीवियों की कई पीढ़ियों का पथप्रदर्शन किया। निःशुल्क अध्यापन, जिज्ञासुओं का स्वतंत्र प्रवेश, परीक्षा और डिग्री तथा डिप्लोमा का अभाव इस कॉलेज की विलक्षणता के चिह्न हैं। मानव संस्कृति और पैतृक संपत्ति की विश्वव्यापकता को रेखांकित करना यहाँ के अध्ययन और अनुसंधान का मुख्य ध्येय है। राष्ट्र इस संस्थान को अनुदान देता है और अध्यापक मंडल इसका प्रशासन और नए प्राध्यापकों का चुनाव करता है। यहाँ शिक्षा-दीक्षा के तीन क्षेत्र उल्लेखनीय हैं – गणित और प्रकृति-विज्ञान, दर्शन और समाजशास्त्र तथा इतिहास, भाषा और साहित्य।

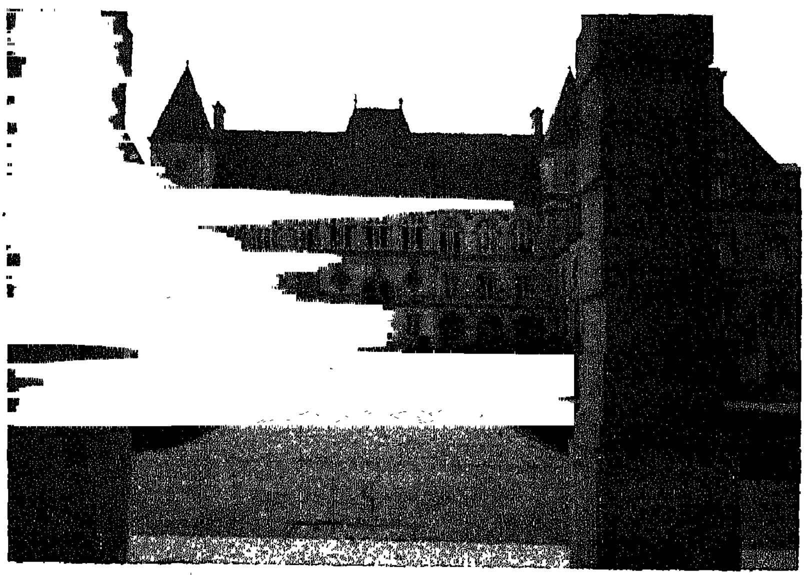
सौरबोन के पास और *सैंत जनवियैव* पहाड़ी पर ही पुराने मठ की जगह उस देवी की आराधना में *पाँथेओं* (Panthéon) नामक मंदिर की रचना फ़्रांसीसी



पॉथेओं (राष्ट्रीय स्मारक)

राज्यक्रांति के समय समाप्त हुई। क्रांतिकारियों ने इस गिरजाघर को बंद करके घोषणा की कि अब से यह राष्ट्रीय युगनायकों का स्मारक होगा। इस घोषणा के बाद से यहाँ पर *वौल्तैर* (Voltaire), *रूसो* (Rousseau), ह्युगो (Hugo) और ज़ोला (Zola) जैसे साहित्यिकों और फ़्रांसीसी समाजवाद के जन्मदाता *जाँ जौरेस* (Jean Jaurès) और नयनहीनों की लिपि के आविष्कारक *लुई ब्रेल* (Louis Braille) की समाधियाँ हैं।

सौरबोन से थोड़ी दूर लुक्संबुर्ग (Luxembourg) नामक बाग़ में राज्यसभा का महल है। संसद के विश्रांतिकाल में पर्यटक इस महल में प्रवेश कर सकते हैं। अपने जन्मस्थान इटली के फ्लोरेंस (Florence) नामक नगर के महल की नकल पर *राजा आँरी चतुर्थ* की विधवा *मारी द मेदिसीस* (Marie de Médicis) ने इस महल की रचना सत्रहवीं शती में करवाई थी। इसका ग्रंथालय भव्य



पैरिस विश्वविद्यालय नगर (सिते यूनिवर्सितैर)

तैलचित्रों से और बाहर का बहुत बड़ा बग़ीचा सुंदर मूर्तियों से अलकृत है। इस बगीचे का एक फव्वारा अत्यंत रोमांचकारी है। साथ के छोटे महल में राज्यसभा के प्रधान का निवासस्थान है। राष्ट्रपति के पद के आकस्मिक रिक्त होने पर राज्यसभा के प्रधान उनका स्थान लेते हैं।

कार्तिये लतें में पैरिस के बुद्धिजीवियों, कलाकारों, अध्यापकों और विद्यार्थियों की भीड़ होना अनिवार्य है। *बूलवार सें मिशेल* (Boulevard St. Michel) जिसे विद्यार्थी 'आरगो' में बूलमिश (Boulemich) कहते हैं, यहाँ का सबसे सजीव राजमार्ग है। पास का *बुलवार सें जर्मे* (Boulevard St. Germain) भी कम रंगीन नहीं। यहाँ के प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं की दुकानों में जो चाहे, प्रवेश कर सकता है। यहाँ की रौनक देखने के लिए ही लोग यहाँ घंटों बिताते हैं। फ़्रांसीसी लेखक और 'अस्तित्ववाद' के प्रचारक *जाँ पोल सार्त्र* (Jean Paul Sartre) और उनकी सहचरी *सिमोन द* बोवुआर (Simone de Beauvoir) ने *बूलवार सें जर्मे* के एक काफ़े हाउस को अमर कर दिया है। पुराने मकानों, हवेलियों और कलाभवनों से भरपूर छोटी-छोटी गलियों में घूमना और छोटे-बड़े रैस्टोरॉं में खाना-पीना सैलानियों के मनोरंजन का आनंदमय साधन है। यहाँ का गिरजाघर बहुत पुराना है। इसके प्रार्थनालय की महराबों के ऊपर भित्तिचित्र बने हैं। यहाँ के पादरी शिलालेखों, पुरानी लिपियों, पुरातत्व विज्ञान और मध्ययुगीन अभिलेखों के विद्वान हुआ करते थे। चित्रकार *पाब्लो पिकासो* (Pablo Picasso) की मृत्यु के बाद से इस गिरजाघर के बाहर बगीचे में उसकी मूर्ति स्थापित की गई है। यह सारा इलाका *अवांगार्द* (Avant garde) साहित्य, दर्शन और कला का केंद्र माना जाता है।

'कार्तिये लतें' के दक्षिण में पैरिस विश्वविद्यालय के फ़्रांसीसी और विदेशी विद्यार्थियों का निवास-स्थान *सिते यूनिवर्सितेर* (Cité Universitaire) अर्थात् *'विश्वविद्यालय नगर'* है। प्रथम महायुद्ध के समय तत्कालीन शिक्षामंत्री ने 'अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग' की योजना बनाई। उनकी धारणा थी कि सभी

राष्ट्रों के भावी नायक और देश-विदेश के विद्यार्थी आपस में संपर्क स्थापित करें। एक दूसरे के भेदों को जानें, सहनशीलता और सह-अस्तित्व की भावना से प्रेरित हों और जान जाएँ कि मानव जीवन की कठिनाइयों की जिगीषा और व्यक्तिगत अनुभूतियाँ और महत्वाकांक्षाएँ एक समान और विश्वव्यापी हैं। दो साल बाद एक फ़्रांसीसी पूँजीपति की सहायता और ख़ाली पड़ी ज़मीन के राष्ट्रीय सरकार के अनुदान से यह योजना कार्यान्वित हो सकी। धीर-धीरे फ़्रांस और विदेशों में धन जमा हुआ और विविध राष्ट्रों की सहायता से छात्रावासों का निर्माण होने लगा। सन् 1925 में पहला छात्रावास खुला। अमरीकी लोकोपकारक *रौकफ़ैलर* (Rockefeller) के दान से 1936 ई. में यहाँ *अंतर्राष्ट्रीय भवन* का निर्माण हुआ। इस भवन में विद्यार्थियों, अतिथियों व अतिथि-प्राध्यापकों के ठहरने की व्यवस्था है और विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास के लिए ग्रंथागार, व्यायामशाला, सिनेमा, रंगशाला, संगीत और नृत्य के हॉल, तैरने का तालाब और बाहर टैनिसकोर्ट इत्यादि सब साधन जुटाए गए हैं। रैस्टोराँ, कॉफ़ी हाउस, बैंक और पोस्ट ऑफ़िस की सुविधा भी उपलब्ध है। पैरिस नगर में अथवा विश्वविद्यालय जाने के लिए *'अंतर्राष्ट्रीय भवन'* से निकलते ही सामने बस और भूमिगत "मेट्रो" (Métro) का स्टेशन है। द्वितीय महायुद्ध से पहले *सिते यूनिवर्सितैर* के केवल बीस 'भवन' थे। अब सत्रह और भवनों का निर्माण हो चुका है। कुल मिलाकर यहाँ दो हज़ार से अधिक लड़के-लड़कियाँ रहते हैं, तीस प्रतिशत फ़्रांसीसी और बाकी विदेशी। सभी भवनों की स्थापत्य कला उनकी राष्ट्रीय प्रणाली के अनुरूप है। भारत के शिक्षामंत्री ने 1954 ई. में 'भारत भवन', का उद्घाटन किया था। यहाँ पर भारतीय तीज-त्यौहार भी मनाए जाते हैं और भारत विषयक व्याख्यानों, गोष्ठियों और प्रदर्शनियों का आयोजन भी होता रहता है। वास्तव में *'विश्वविद्यालय नगर'* में आदर्शवाद और मानववाद के समन्वय का प्रयत्न हुआ है। यहाँ भौगोलिक सीमाओं का उल्लंघन करके सामाजिकता का प्राकृतिक स्फुरण और विश्वव्यापी धारणाओं का परिपाक होता है।

'सिते यूनिवर्सितैर' के उत्तर-पश्चिम में, पर सैन नदी के वाम तट पर ही,

प्रसिद्ध संस्मारक *ऐंवलिद* (Invalides) अर्थात् 'अपाहिजों का निवास स्थान' है। पहले-पहल सत्रहवीं शती में यहाँ अपाहिज सैनिकों का अस्पताल था और पास ही प्रार्थना के लिए गिरजाघर था। यहाँ पर नैपोलियन का मकबरा होने से इसकी ख्याति देश-देशांतर में फैल गई है। गिरजाघर का सुनहरी गुंबद दूर से ही चमकता है। आज भी यहाँ ज़ख्मी सिपाहियों के अस्पताल में उनका इलाज होता है। यहाँ की विशाल इमारतों में सैनिक संग्रहालय और सैनिक स्कूल हैं।

इसके पिछवाड़े *संयुक्तराष्ट्रीय शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संघ* "युनेस्को" (Unesco) का मुख्यालय है। स्तंभों पर आधारित इस मौलिक इमारत के रोमन अक्षर 'वाई' की तरह तीन खंड है। निचले स्थल पर 'शांति' को समर्पित जापानी बग़ीचा है और प्रमुख सभाभवन हैं। भारतरत्न राष्ट्रपति प्रोफ़ेसर राधाकृष्णन ने सन् 1958 में इस इमारत का उद्‌घाटन किया था। कई परिवर्तनों के बाद भी इस इमारत का आकारसंबंधी सामंजस्य अक्षुण्ण है। शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और प्रसारण के माध्यम से मानव हृदय में शांति, सहनशीलता और सह-अस्तित्व की भावना जगाना और सुदृढ़ करना तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना 'युनेस्को' का मुख्य उद्‌देश्य है। 'युनेस्को' क्या है और क्या करता है, इसको जानने की इच्छा से बहुत-से अल्पवयस्कों और विद्‌यार्थियों के समूहों के अतिरिक्त अनेक प्रौढ़ व्यक्ति और पर्यटक भी यहाँ आते हैं। यहाँ पर सदस्यराष्ट्रों की योजनाओं के विषय में कई प्रदर्शनियाँ भी होती हैं।

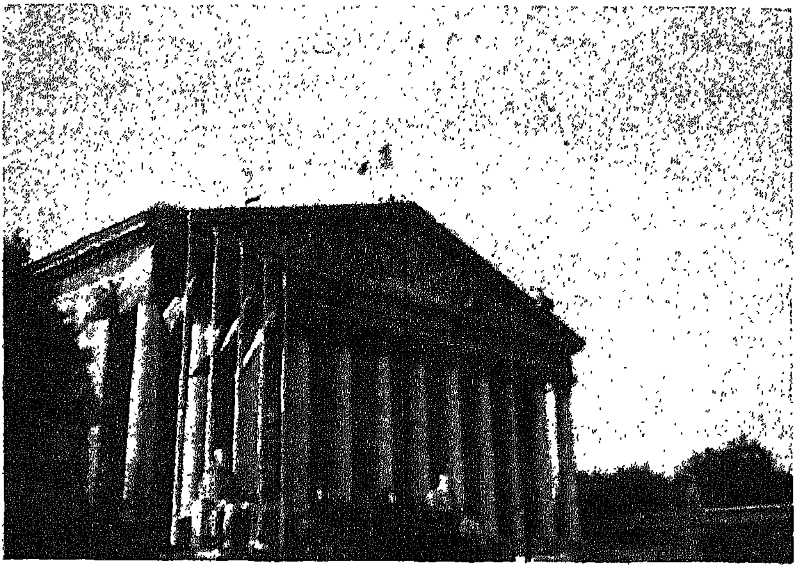
'युनेस्को' से थोड़ी दूर पैरिस का प्रतीक *तूर एफ़ल* (Tour Eiffel) अर्थात् 'आइफ़ल टॉवर' है। सार्वभौमिक प्रदर्शनी के अवसर पर इंजिनियर 'एफ़ल' ने इसकी रचना 1889 ई. में समाप्त की। उनका दावा था कि यह फ़्रांस की सबसे ऊँची मीनार होगी। पर अब तीन सौ मीटर ऊँची इस मीनार से ज़्यादा ऊँची कई गगनचुंबी इमारतें बन गई हैं, उनके सामने इसकी ऊँचाई को अब अद्‌वितीय नहीं माना जा सकता। इसके निर्माण के समय स्थापत्यकला विशेषज्ञों, लेखकों और कलाकारों ने इसे बिल्कुल पसंद नहीं किया था। कुछ के विचार में यह पैरिस के आकाश को कलंकित करता था। वे चाहते थे कि इस मीनार को कहीं



आइफल टॉवर

और विस्थापित कर दिया जाए। पर धीरे-धीरे लोगों ने इसे अपना लिया है और यह प्रसारण का अनुपम माध्यम भी हो गया है। अब यह अटलांटिक महासागर पार के रेडियो, टेलिफ़ोन और दूरदर्शन के प्रेषक के और वायुयानों के लिए मौसम विज्ञान और परिवहन के स्टेशन के काम आता है। इस मीनार की तीन मंज़िलें हैं। तीसरी मंज़िल के ऊपर बीस मीटर ऊँचा एरियल है। उत्साही पर्यटक इसकी 1652 सीढ़ियाँ पैदल चढ़ सकते हैं, पर प्रायः लोग लिफ़्ट से ऊपर जाते हैं। 1982 ई. से 1985 ई. के बीच इसका कायाकल्प हुआ। यहाँ पर इसके इतिहास संबंधी संग्रहालय, रैस्टोराँ तथा सभाभवन भी खुल गए हैं। सन् 1985 में फ़्रांसीसी राष्ट्रपति ने राजीव गांधी के साथ यहाँ से ही भारत मेले का उद्घाटन किया था। खुले और उजले दिनों में *'तूर एफ़ल'* की तीसरी मंज़िल से पैरिस का विहंगम दृश्य अत्यंत मनोहर लगता है। एक ओर सैन नदी, उसके अनगिनत पुल और नदी में चलती कई प्रकार की किश्तियाँ और दूसरी ओर ठीक सामने फ़व्वारों से सुशोभित *त्रोकादेरो* (Trocadéro) का महल और कुछ दूरी पर *साक्रेकर* (Sacré Coeur) का गिरजाघर। *त्रोकादेरो* महल में आज राष्ट्रीय रंगशाला और मानव विज्ञान तथा समुद्रीय संग्रहालय स्थित हैं।

सैन नदी के वाम तट पर ही स्थित *बूरबों महल* (Bourbon Palais) की रचना अठारहवीं शती में आरंभ हुई। राज्यक्रांति के समय से ही यह राजनैतिक विचार विमर्श का घटना-स्थल रहा है। अब यहाँ लोकसभा के अधिवेशन होते हैं। इसके बाह्य भाग की ग्रीक शैली के स्तंभों वाला मंडप उन्नीसवीं शती के आरंभ में जोड़ा गया। इसके दोनों ओर शिल्पकारों की रोमन संरक्षक *देवी मिनर्वा* (Minerva) और न्याय की ग्रीक सरक्षक देवी *थेमिस* (Thémis) की मूर्तियाँ हैं। इस महल के तैलचित्र और मूर्तियों से सुसज्जित बहुत-से कमरों के अतिरिक्त सर्वाधिक प्रभावशाली स्थान हैं– यहाँ के प्रकोष्ठ, सभा भवन और ग्रंथालय। ग्रंथालय में 'सभ्यता के इतिहास' पर आधारित अत्यंत शिक्षाप्रद भित्तिचित्र बने हैं, साथ ही *लासे भवन* (Palais Lassay) है जो लोकसभा के प्रधान का निवास स्थान है।



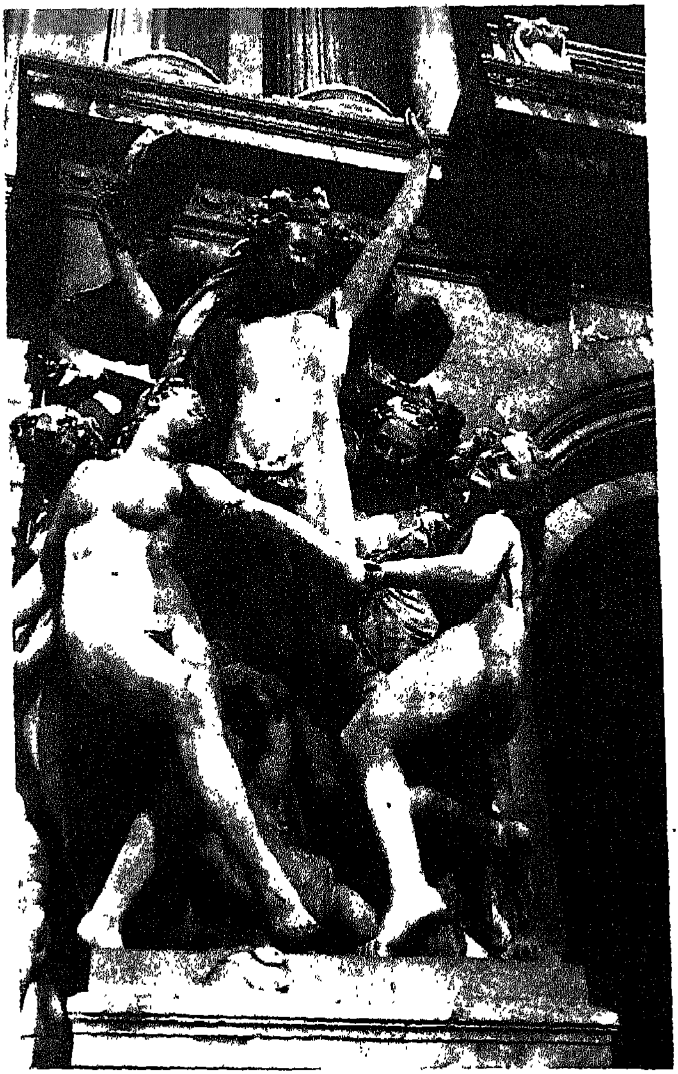
फ्रांसीसी लोकसभा

पौं नफ़ और *सैन* नदी के दक्षिण तट पर *लूव्र* (Louvre) संग्रहालय है। इसकी गणना विश्व के सर्वप्रसिद्ध संग्रहालयों में होती है। यहाँ की मूर्तिकला व चित्रकला का प्राचीन और महत्वपूर्ण संग्रह अद्वितीय है। लगभग दो सौ साल तक यह एक राजमहल था। तेरहवीं शती में यहाँ एक किला था जिसमें राजकोष, शस्त्रागार और अभिलेखशाला थी। चौदहवीं शती में जब पैरिस के दक्षिण-पूर्व में बास्ति (Bastille) का किला बना तो तत्कालीन राजा *लूव्र* में रहने लगे, पर उन्हें यहाँ रहना पसंद न था। सोलहवीं शती में एक बार फिर इसके भाग जागे और पुरानी चारदीवारी गिरा देने के बाद नया राजमहल और एक नया बाग़ बनाने की योजना हुई। तब से एक के बाद एक सभी राजाओं ने *लूव्र* और *त्यूलरी* (Tuilleries) के महलों को बढ़ाया, तुड़वाया और फिर से बनवाया। राज्यक्रांति

के बाद 1793 ई. में राजतंत्र के अंत और गणतंत्र की घोषणा के बाद *लूव्र* के महल में ग्रीक, रोमन, मिस्री इत्यादि पुरातत्त्वीय स्थलों के अवशेषों, मूर्तियों और मध्ययुगीन यूरोपीय कलाकारों के तैलचित्रों का संग्रह किया गया। *त्यूलरी* महल की जगह एक बहुत बड़ा और सुरम्य बाग़ बनाया गया। अब इसका नवीनीकरण हो रहा है।

लूव्र संग्रहालय के पास ही *कॉमेदी फ़्रांसैज़* (Comédie Française) नामक नाटकशाला है। यहाँ *मौलियैर* (Molière) स्वयं अपने नाटकों में अभिनय करता था। यह फ़्रांसीसी भाषा के श्रेष्ठतम उच्चारण का मंदिर है। यहाँ के अभिनेता कठोर राष्ट्रीय प्रतियोगिता के बाद नियुक्त होते हैं। अब मध्यकालीन *मौलियैर* तथा *रासीन* (Racine) इत्यादि नाटककारों के लिखे नाटकों के अतिरिक्त बीसवीं शती के फ़्रांसीसी और विदेशी नाटक भी यहाँ खेले जाते हैं।

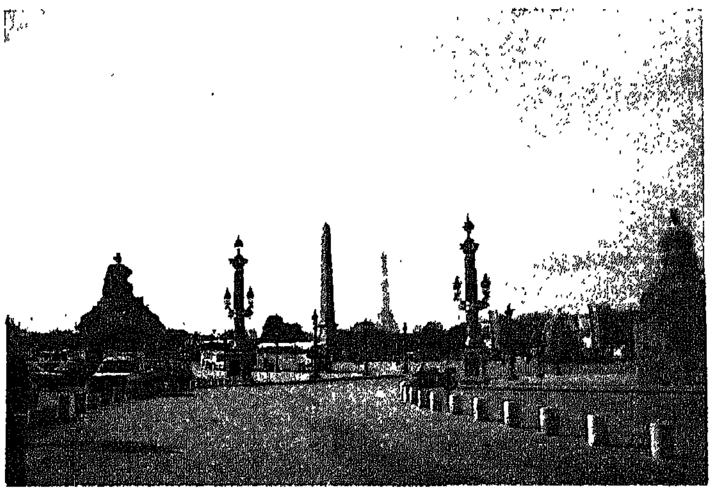
यह नाटकशाला *अवेन्यू द लोपेरा* (Avenue de l'opéra) के पास है। इस अवेन्यू के दूसरे छोर पर *औपेरा* (Opéra) की इमारत है। रात में सारा अवेन्यू रोशनी से जगमगा उठता है। *औपेरा* अर्थात् 'गीतिनाट्य' और *बाले* (Ballet) अर्थात् 'भावनृत्य' पाश्चात्य संस्कृति के अभिन्न अंग है। *औपेरा* की इमारत बहुत सुंदर है। इसके निर्माता *गार्नियै* (Garnier) के नाम पर इस इमारत को *'गार्नियै महल'* भी कहते हैं। उन्नीसवीं शती के मध्य में जब इस *औपेरा* के बनने का सवाल उठा तो 17 प्रतिद्वंद्वियों में से पैंतीस वर्ष के *गार्नियै* को यह काम सौंपा गया। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह दुनिया में सबसे बड़ा थियेटर हॉल है। इसके रंगमंच पर चार सौ पचास कलाकार एक साथ उपस्थित हो सकते हैं और इसके दर्शक भवन में दो हज़ार दो सौ प्रेक्षक बैठ सकते हैं। इसका मध्यवर्ती क्रिस्टल का झाड़ छह टन से भी अधिक भारी है। इसके प्रवेशद्वार और सीढ़ियों पर रंग-बिरंगे कई प्रकार के संगमरमर का प्रयोग हुआ है। निश्चित है कि इस थियेटर हॉल के किसी भी प्रदर्शन का आनंद लेने के लिए पाश्चात्य संगीत के ज्ञान और रसिक हृदय की आवश्यकता है। इस इमारत के अंदर ही संगीत नाटक



औपेरा हाउस के बाहर 'कार्पो' (1827 ई.–1857 ई.) की बनाई 'नृत्य' नामक मूर्ति

अकादेमी के मुख्यालय, ग्रंथालय और संग्रहालय हैं।

लूव्र और *त्यूलरी बाग़* से निकलने पर *प्लास द ला कौनकोर्द* (Place de la Concorde) का विशाल चौक है। इस चौक के चारों ओर फ़व्वारे और मूर्तियाँ

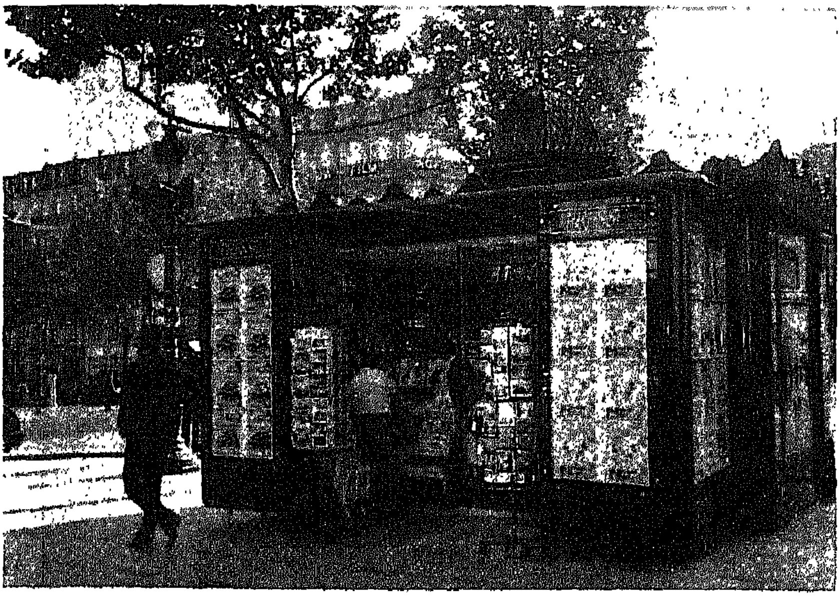


'प्लास द ला कौनकोर्द' का विशाल चौक और सूच्याकार स्तंभ (ओबेलिस्क)

हैं – उत्तरी फ़व्वारा नौपरिवहन का, दक्षिणी फ़व्वारा पोतपरिवहन का और फ़्रांसीसी प्रमुख शहरों की आठ मूर्तियाँ हैं। इसके बीचोंबीच तीन हज़ार तीन सौ साल पुराना और तेईस मीटर ऊँचा सूच्याकार स्तंभ *ओबेलिस्क* (Obélisque) है। फ़्रांसीसी सहायता के इच्छुक मिस्र देश के एक वायसराय ने *लुक्सौर* (Luxor) मंदिर के इस स्तंभ को फ़्रांस को भेंट किया था। इसके पास खड़े होकर पश्चिमोत्तर की दिशा में राजपथ *अवेन्यू द शांज़ेलिज़े* (Avenue de Champs Elysées) से लेकर *आर्क द त्र्यौंफ़* (Arc de Triomphe) तक का भव्य दृश्य अत्यंत मनोहर है।

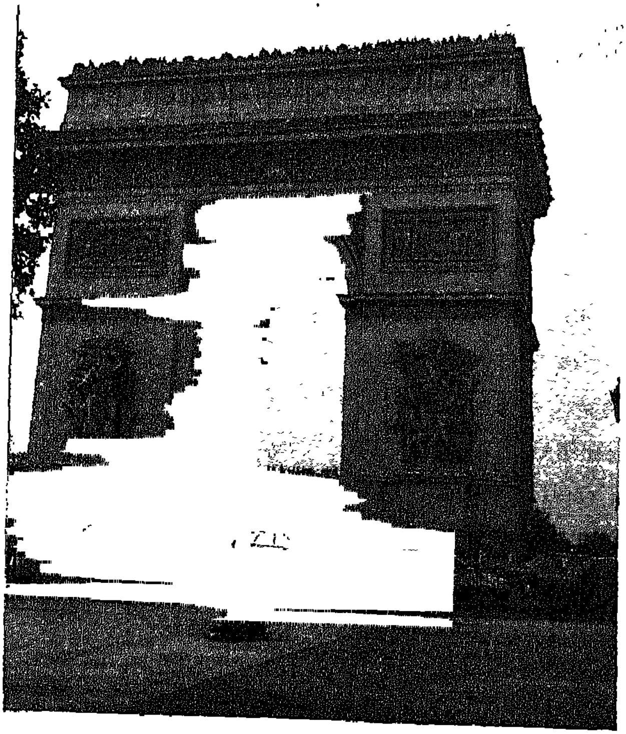
प्लास द ला कौनकोर्द के पास ही राष्ट्रपति का निवास *एलिज़े* महल (Palais de l Elysée) में है। यहाँ पर्यटकों का प्रवेश निषिद्ध है। यहाँ से ही

अवेन्यू द शांज़ेलिज़े अर्थात् 'स्वर्गक्षेत्र राजपथ' में जाया जा सकता है। राष्ट्रीय दिवस चौदह जुलाई को इस सुंदर और लंबे चौड़े राजपथ पर परेड होती है। क्रिसमस के दिनों में सारे मकानों, दुकानों और पेड़ों पर बिजली की बत्तियों की झालरों से यह अवेन्यू जगमगा उठता है। एक समय यहाँ कुलीनवर्ग के लोग निवास करते थे, पर अब यह व्यापार का केंद्र हो गया है और बहुत-से परदेसी यहाँ की अधिकतर इमारतों के मालिक बन गए हैं। अब यह प्रायः सिनेमाघरों, बड़े-बड़े काफ़े, रैस्टोराँ, व्यापारिक कंपनियों के दफ़्तरों और पर्यटक एजेंसियों का घर बन गया है।



अवेन्यू द शांजेलिजे का न्यूज़पेपर स्टैंड

शांज़ेलिज़े अवेन्यू के पश्चिमोत्तरीय सिरे पर *आर्क द त्र्योंफ* (Arc de Triomphe) अर्थात् 'विजय तोरण' नामक ऐतिहासिक संस्मारक है। इसके चारों ओर का चौक *'जैनरल शार्ल द गोल चौक'* के नाम से मशहूर है। अठारहवीं शती के अंत तक पंचभुजीय सितारे के आकार के इस चौक से पाँच सड़कें निकलती थीं। इसीलिए आज भी इसे *एत्वाल* अर्थात् 'सितारा' कहते हैं। अपनी सेना के सम्मान में नैपोलियन ने यहाँ पर 'विजय तोरण' बनवाने का निर्णय किया था पर इसका निर्माण उसकी मृत्यु के पंद्रह साल बाद 1836 ई. में हुआ। पैरिस के नवीकरण के समय इस चौक के चारों ओर बारह अवेन्यू बनाए



आर्क द त्र्योंफ़

गए। उनके नाम नैपोलियन् के पराक्रमों के द्योतक हैं। विजयतोरण की भित्तियों पर उसकी विजय के कुछ दृश्य भी खुदे हैं। पहली मंज़िल पर एक संग्रहालय है जिसमें इस तोरण के निर्माण संबंधी अभिलेख एकत्रित हैं। तोरण की छत पर खड़े होकर पैरिस का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। प्रथम महायुद्ध के बाद हुई शांति की स्मृति में तोरण के बीच में अज्ञात सैनिक की स्मृति में अखंड ज्योति जलती रहती है और प्रत्येक वर्ष ग्यारह नवंबर को राष्ट्रपति की उपस्थिति में यहाँ भव्य समारोहों का आयोजन होता है। अन्य देशों के राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री पैरिस आने पर यहाँ श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

औपेरा के उत्तर में *मौंमार्त्र* (Montmartre) नामक पावन पहाड़ी पर बना *साक्रेकर* अर्थात् 'पावन-हृदय' नामक गिरजाघर है। कहते हैं कि पैरिस के संरक्षक *संत सें दनी* (Saint Denis) इसी इलाके में शहीद हुए थे। इस गिरजाघर में पच्चीकारी का सुंदर काम हुआ है। यहाँ का *प्लास द तर्त्र* (Place de Tertre) अर्थात् 'तर्त्र नामक चौक' बहुत सजीव है। *मौंमार्त्र* की छोटी-छोटी गलियों में सुबह के समय ग्रामीण वातावरण दिखाई देता है पर छुट्टियों के दिन और तीसरे पहर से ही यहाँ भीड़ जमा होने लगती है। अज्ञात औरअप्रसिद्ध पर कुशल कलाकार तैलचित्र अथवा पैंसिल से चित्र बनाते हैं। कुछ तो आशुचित्रण में इतने माहिर होते हैं कि देखते-देखते आपका चित्र बना दें। उन्नीसवीं शती में मौं मार्त्र कलाकारों का अड्डा था। यहाँ वे लोग उन्मुक्त और निश्चिंत जीवन बिताते थे। पर पहले महायुद्ध के बाद से लेखक और कलाकार सैन नदी के वाम तट पर बस गए हैं। *मौं मार्त्र* के इलाके के पास *पिगाल* (Pigalle) में मधुशालाओं और 'भड़कीले पैरिस' के मनोरंजक स्थान हैं। यहीं पर 'मूलेंरूज' (Moulin rouge) अर्थात् 'लाल पनचक्की' नामक मधुशाला में कानकान (Cancan) नृत्य का जन्म हुआ। यह मधुशाला अब भी बहुत प्रसिद्ध है।

पैरिस का आधुनिक रूप पिछले डेढ़-दो सौ साल के परिवर्तनों का परिणाम है। वास्तव में नैपोलियन बोनापार्ट के भतीजे नैपोलियन तृतीय की प्रतिभा और

दूरदर्शिता की प्रशंसा करनी चाहिए। वह कहता था कि पैरिस फ़्रांस का हृदय है। इसलिए वह इसे एक महानगर बनाना चाहता था। पैरिस के नवीकरण का उत्तरदायित्व उसने अपने वित्तमंत्री *बारों द होसमान* को सौंपा। उसने पैरिस की इमारतों को निखारने के लिए पुराने मकानों और इमारतों को गिरवा दिया, घनी आबादी वाले मुहल्लों और छोटी-छोटी गलियों की जगह सड़कों को चौड़ा किया, सीधी लाइनदार सड़कों के दोनों ओर वृक्ष लगवाए। सारे शहर में बाग़-बग़ीचों की व्यवस्था की। आसपास की परिधि को शहर में मिलाकर उसके पूर्व में *वैंसेन* (Vincennes) नामक और पश्चिम में *बुआ द बुलोञ* (Bois de Boulogne) नामक उपवन बनवाए। इन दोनों विशाल स्थानों पर घूमने-फिरने की जगह है और घुड़दौड़ के मैदान हैं। पैरिस के नवीकरण के काम में चालीस साल लगे और सन् 1900 में पैरिस का परिष्कृत रूप बना।

फ़्रांसीसी राज्य और पैरिस की नगरपालिका इस नगर के शृंगार में सतत निरत हैं। सन् 1889 और 1937 की सार्वभौमिक प्रदर्शनियों के अवसर पर और दूसरे महायुद्ध के बाद फ़्रांस की आर्थिक स्थिति सुधरने पर पैरिस में बहुत-सी नई-नई चीज़ें होती रही हैं। पंचम गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति *शार्ल द गोल* ने 'रेडियो और दूरदर्शन भवन' का निर्माण किया, उनके कलामंत्री ने पैरिस की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक इमारतों की सफ़ाई के नियम बनाए और संस्कृति विषयक राजनीति निर्धारित की। दूसरे राष्ट्रपति जार्ज पौम्पी दू (Georges Pompidou) ने पैरिस में अर्वाचीन स्थापत्य कला को प्रोत्साहन दिया और शहर के बीच 'बोबुर्ग' (Beaubourg) इलाके में एक विचित्र कलाकेंद्र बनवाया। इसका मुख्य उद्देश्य कला और दैनिक जीवन का संबंध स्थापित करना है। यहाँ के अर्वाचीन चित्रकला के संग्रहालय में उसके विकास का प्रमाण मिलता है। इंडस्ट्रियल डिज़ाइन केंद्र, ध्वानिकी और संगीत अनुसंधान संस्थान और बच्चों के लिए 'वर्कशाप' इस केंद्र के विशिष्ट विभाग हैं। अध्ययन, अनुसंधान और सूचना तथा प्रसारण के सारे साधन यहाँ उपलब्ध हैं। नाटक, नृत्य, विडियो और

फ़िल्म दिखाने की सुविधा है। फ़िल्म संग्रहालय के साथ लगे सिनेमा हाल में हर सप्ताह लगभग बीस फ़िल्में दिखाई जाती हैं। कभी-कभी यहाँ भारतीय फ़िल्म समारोह का आयोजन भी होता है। फ़्रांस के तीसरे राष्ट्रपति *जिस्कार* देस्तें (Giscard d' Estaing) ने फ़्रांस की सांस्कृतिक और कलात्मक बपौती का मूल्योद्धार करने के लिए *'म्यूज़े दौर से '*(Musée d' Orsay) की कल्पना की और पुराने रेलवे स्टेशन का जीर्णोद्धार करके एक सुदर संग्रहालय खुलवाया। पिछले राष्ट्रपति *'फ़्रांस्वा मितेराँ '* ने जो चार महान योजनाएँ बनाई उनमें से तीन का कार्यान्वयन हो चुका है। सबसे मौलिक योजना थी लूव्र के पुराने महल और संग्रहालय के आँगन में काँच के पिरामिड का निर्माण । कुछ लोगों को यह बिल्कुल पसंद नहीं। गार्नियें महल के औपेरा के साथ-साथ पैरिस के पूर्व में एक दूसरा *औपेरा* बना है। फ़्रांसीसी राज्यक्रांति की द्वितीय शताब्दी के अवसर पर 1989 ई. में नए महातोरण का उदघाटन हुआ। इसके सभी भवनों में गोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन होता है। चौथी योजना पैरिस में महान पुस्तकागार बनवाने की है। राष्ट्रीय पुस्तकागार की सारी संपत्ति– हस्तलिपियाँ, मानचित्र, अभिलेख और पुस्तकें, पत्रिकाएँ तथा आधुनिक इलैक्ट्रॉनिक सामग्री इत्यादि एक स्थान पर एकत्र होंगे। यह महान पुस्तकागार अनुसंधान कर्ताओं और सामान्य जनता के लिए खुलेगा।

पैरिस के पश्चिम में *वर्साई* (Versailles) नामक नगर के महल और बाग़-बग़ीचों में भ्रमण पैरिस की सैर का अभिन्न अंग है। सत्रहवीं शती के आरंभ में यहाँ केवल दलदल और जंगल थे। फ़्रांस के राजा और राजकुमार यहाँ शिकार के लिए आते थे पर सिंहासनारूढ़ होने पर *लुई त्रयोदश* (Louis XIII) ने यहाँ महल बनवाने का निर्णय किया। उसके उत्तराधिकारियों ने इसका विस्तार और परिष्कार किया। सूर्य को अपने राज्य का प्रतीक बनाने वाले राजा *लुई चतुर्दश* (Louis XIV) ने सत्रहवीं शती में इस महल का कायाकल्प किया। अपने राज्य में उसने अनुभवी स्थापत्य कलाविदों की सहायता से महल को सुधारा, पहली मंज़िल पर अपने, रानी तथा राजकुमार के लिए आवास स्थान और शीशमहल

बनवाए। वरिष्ठ कलाकारों से बनवाए फ़र्नीचर, कालीन और दीवार दरियों से उसकी साज-सज्जा करवाई। प्रकृति को चित्रित करने वाले कलाकारों ने यहाँ की नहरों, फ़व्वारों और पाषाण प्रतिमाओं से अलंकृत बाग़-बग़ीचों से सारे पर्यावरण को चमत्कारपूर्ण बना दिया। उसके राज्य में *वर्साई* में राजदरबार भी लगता था। उसके देहांत के बाद उसके परपोते *लुई पंचदश* और उसके पोते *लुई षोडश* (Louis XVI)ने *वर्साई* को अपना लिया। फ़्रांसीसी क्रांति के समय इस राजमहल में लूटमार हुई और *वर्साई* की शान को बहुत धक्का पहुँचा। प्रथम महायुद्ध के बाद 1919 ई. में वर्साई के शीशमहल में ही शांतिसंधि पर हस्ताक्षर हुए। अब यह राष्ट्रीय स्मारक बन गया है। इस राजमहल की देखादेखी यूरोप के अन्य राजाओं की बस यही महत्वाकांक्षा थी कि वे भी अपने देश में वर्साई जैसा महल बनवाएँ। आज भी इस महल की नकलें कई देशों में मिलती है।

4. फ्रांसीसी जीवन की झाँकी

पंचम फ्रांसीसी गणतंत्र के 1958 ई. के संविधान के अनुसार फ्रांस 'ऐकिक राज्य' है। राष्ट्रपति उसकी राजनीतिक प्रेरणा का एकमात्र केंद्र है। राष्ट्र की सत्ता राष्ट्रपति और संसद के दो सदनों में निहित है। राष्ट्रपति प्रधानमंत्री को और उसके प्रस्ताव पर मंत्रिमंडल के अन्य सदस्यों को नियुक्त करता है। उसका और संसद के सदस्यों का निर्वाचन अठारह वर्ष की आयु के 'वयस्क जनमताधिकार' द्वारा होता है। न्यायपालिका शक्ति (लोकसभा और राज्यसभा) और विधायी शक्ति एवं कार्यपालिका शक्ति (राष्ट्रपति और शासन) का पृथक्करण है। स्वतंत्र मैजिस्ट्रेट समूह न्याय का उत्तरदायी है।

फ्रांस का प्रशासन सुव्यवस्थित है। इस देश की सबसे छोटी इकाई 'कम्यून' (जनसमुदाय) प्रशासन का आधार है। 'कम्यून' के निवासी उसके नगरपाल का चुनाव करते हैं। जन्म, विवाह और मृत्यु की सूचना हर नगरपालिका में रजिस्टर करनी होती है। विवाह के बाद हर दंपती को 'परिवार-पुस्तिका' दी जाती है जिसमें पति और पत्नी संबंधी निजी सूचना लिखी होती है, बच्चों के जन्म पर उनके नाम, जन्म तिथि और जन्म स्थान दर्ज किए जाते हैं। जन्म के समय से ही प्रत्येक फ्रांसीसी का 'पहचान-पत्र' बन जाता है। घूमते-फिरते किसी भी व्यक्ति के 'पहचान-पत्र' की किसी भी समय और किसी भी स्थान पर जाँच-पड़ताल करने का पुलिस को अधिकार है। सामाजिक सुरक्षा एवं विधि और व्यवस्था का यह अचूक साधन है।

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से राजकीय अस्पतालों और *सामाजिक सुरक्षा प्रणाली* की सहायता से ग़रीब से ग़रीब फ़्रांसीसी, बीमारी का इलाज करवा सकता है। उसके प्रशासन के लिए सरकार और प्रत्येक व्यक्ति को निर्धारित रुपया देना होता है। लोग अधिकृत डॉक्टरों को दिखा सकते हैं, आवश्यकतानुसार दवाइयाँ ख़रीद सकते हैं और विकट बीमारी के समय राजकीय अस्पतालों में प्रवेश पा सकते हैं। इलाज के बाद नुस्ख़े और दवाइयों की रसीदें देकर नियमानुसार तीन-चौथाई या कुछ ज़्यादा या कुछ कम ख़र्चा सरकार से वापस मिल जाता है। गर्भिणी महिलाओं के बच्चा पैदा होने से पहले और बाद में और नवजात शिशुओं की देखभाल की और सभी व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य सेवा की यह प्रणाली अत्यंत संतोषजनक है। पैसे वाले लोग अपनी पसंद के अनुसार डॉक्टरों और प्राईवेट क्लिनिकों में अपना इलाज करवा सकते हैं, पर यह सौदा मँहगा पड़ता है क्योंकि स्वास्थ्य सेवा अपने नियमानुसार उनके ख़र्चे का थोड़ा-सा ही अंश वापस लौटाती है। फ़्रांस में हर प्रकार के सामान्य तथा विशेषज्ञ डॉक्टरों, नर्सों और मालिश करने वालों की कोई कमी नहीं। अनुसंधान-कर्ताओं की टीमें घातक बीमारियों पर काम करती हैं। प्रजा भी अनुसंधान-कार्य के प्रोत्साहन के लिए यथाशक्ति दान देती है। *'सामाजिक सुरक्षा प्रणाली '* के अधीन देश की आबादी बढ़ाने के लिए शासन लोगों को *'पारिवारिक भत्ता '* देता है। शासन कम पैसे वालों के लिए कम किराये के अपार्टमैंट बनाता है। तीन या अधिक बच्चे होने पर परिवार के लिए रेल या बस में यात्रा करने की और दैनिक जीवन की अनेक सुविधाओं की व्यवस्था करता है। कम पैसे वालों के लिए छह से सोलह साल के बच्चों को स्कूल भेजने के लिए शैक्षिक सत्र के आरंभ में साल में एक बार सहायता देता है। सामाजिक मंत्रालय तथा अन्य ग़ैर-सरकारी संस्थाएँ बेकार लोगों की कठिनाइयाँ दूर करने का प्रयत्न करती हैं। स्वास्थ्य रक्षा के परिणामस्वरूप फ़्रांसीसी प्रायः हृष्ट-पुष्ट होते हैं। अब पुरुष बहत्तर वर्ष और नारियाँ बयासी वर्ष तक जीवित रहने की आशा कर सकती हैं।

सामाजिक और आर्थिक नियमानुसार लोग सप्ताह में कम से कम उनतालीस घंटे काम करते हैं। शनीचर और इतवार को छुट्टी रहती है। यथासंभव सप्ताहांत में या तो लोग बचपन से अपने हाथों से काम करने के लिए अवज्ञा न रखने के कारण अपने अपार्टमैंट या मकान में छोटे-छोटे काम अपने–आप करते हैं या शहर के बाहर सौ-दो सौ किलोमीटर के दायरे में देहात के छोटे-से बंगले में बग़ीचे में काम करते हैं। अधिकतर लोग सप्ताहांत में अकेले या परिवार के साथ समय बिताते हैं। संबंधियों या मित्रों के साथ कम ही लोगों की भेंट होती है। पर फ़्रांसीसियों के जीवन की उल्लेखनीय घटना है उनकी बड़ी छुट्टियाँ।

पचास साल से ज़्यादा पुराने सामाजिक सुधार के नियमानुसार हर क्षेत्र में काम करने वालों को चार या पाँच हफ़्ते की सवेतन छुट्टी मिलती है। कुछ लोग, जिनके नगरों से दूर अपने मकान होते हैं, वे उनकी सफ़ाई और सुधार की योजना बनाते हैं और कुछ शारीरिक और मानसिक कुशल-क्षेम की चिंता करते हैं। वस्तुतः इन छुट्टियों का कार्यक्रम बनाना फ़्रांसीसियों के लिए एक धार्मिक व्रत-सा हो गया है। जुलाई और अगस्त में बच्चों की गर्मियों की छुट्टियाँ होने पर लोग शहरों से दूर भागने की चेष्टा करते हैं। सारे साल काम करने के बाद वे परिवार सहित ताज़ी हवा खाने, पहाड़ों पर सैर करने या समुद्रतट पर घूमने, तैरने या व्यायाम करने के अनमोल अवसर से लाभ उठाना चाहते हैं। महीनों पहले से प्रोग्राम बनाने होते हैं क्योंकि रेल, हवाई जहाज़ और किराए के मकानों को पहले से आरक्षित करना होता है। कुछ लोग अपनी मोटरों में बाहर जाते हैं। फ़्रांस के राजपथ और प्रधान सड़कें इतनी अच्छी हैं और संचार इतना सुव्यवस्थित है कि लोग बिना रोक-टोक एक सौ दस किलोमीटर की रफ़्तार से गाड़ी चला सकते हैं। इन छुट्टियों में साठ लाख से अधिक फ़्रांसीसी मोटर गाड़ियों में एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं। इनमें से कुछ कैंपिंग के लिए निर्धारित स्थानों पर छुट्टियाँ बिताते हैं। दफ़्तरों, अस्पतालों और कारखानों इत्यादि में सामान्य जीवन की गति धीमी पड़ जाती है। पैरिस में ही इन दिनों

फ़्रांसीसी कम और पर्यटक अधिक दिखाई देते हैं। यहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम कम हो जाते हैं। इसीलिए कुछ सालों से प्रादेशिक स्थानों में संगीत, नाटक नृत्य और सिनेमा के समारोहों का आयोजन होने लगा है।

कुछ सालों से फ़्रांसीसी अपनी चार-पाँच सप्ताह की छुट्टियाँ एक साथ नहीं लेते। वे प्रायः पंद्रह-बीस दिन के लिए ही बाहर जाते है और अधिकतर अपने अपार्टमैंट में ही रहते हैं। कुछ लोग बच्चों की जाडे की दस–बारह दिन की छुट्टियों में 'स्कीइंग' करने पहाड़ों पर जाते हैं। पर ये छुट्टियाँ बहुत मँहगी पड़ती हैं– पहाड़ पर मकान का किराया, 'स्कीइंग' के लिए विशिष्ट कपड़े, जूते और सब प्रकार की सामग्री तथा बर्फ़ीले स्थानों पर जाने के टिकट– सभी कुछ मँहगा होता है।

कुछ लोग छुट्टियों में विदेश जाते हैं– प्रायः यूरोप और अमरीका के देशों में। जुलाई-अगस्त में वहाँ मौसम सुहाना होता है। परिचित पाश्चात्य सांस्कृतिक पर्यावरण से उनके जीवन में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। कुछ लोग भारत और एशिया के देशों में जाते हैं, पर प्रायः दिसंबर की छुट्टियों में वहाँ जाना अधिक पसंद करते हैं। ये लोग फ़्रांसीसी लेखक *'ब्लैज़ सांद्रार '* (Blaise Cendrar) के अनुयायी प्रतीत होते हैं। उसका कहना था कि ' विदेश जाना अन्य देशों से अनुराग अवश्य बढ़ाता है पर साथ ही वह अपने देश के प्रति प्रेम सुदृढ़ कर देता है।' बाहर जाने से अपने देश के गुण अधिक और दोष कम दिखाई देते हैं। मातृभूमि का प्रेम बढ़ जाता है। विदेश जाने से पहले फ़्रांसीसी प्रायः अच्छी तैयारी करते हैं– विदेशी संग्रहालयों, ऐतिहासिक स्मारकों और जनसंपर्क तथा जीवन की नई-निराली विशेषता की खोज करते हैं।

फ़्रांसीसी जीवन का परिचय उसकी द्विमुखी जनता से भली–भाँति मिल सकता है। एक ओर पैरिस और पैरिस के आसपास के बृहत्तर पैरिस प्रदेश का जीवन और दूसरी ओर फ़्रांसीसी प्रदेशों का जीवन। यद्यपि इन सब फ़्रांसीसियों का फ़्रांसीसीपन अखंड है तथापि इन दोनों क्षेत्रों के जीवन की गतिविधि, रहन-सहन और आचार-विचार में पर्याप्त भेद हैं। सारे देश में जनता असमान रूप

से बँटी हुई है। फ़्रांस की साठ प्रतिशत खेती की भूमि पर लगभग सात प्रतिशत कृषक रह गए हैं। उद्योगों के विकास के कारण नगरों का नवीकरण हो रहा है और उपनगरों की जनसंख्या बढ़ती जा रही है। फ़्रांस की जनता के लगभग बीस प्रतिशत लोग पैरिस और बृहत्तर पैरिस प्रदेश में रहते हैं। फ़्रांस की दो-तिहाई जनता नगरों और उपनगरों में रहती और काम करती है। लगभग बाईस लाख लोग पैरिस नगर में रहते हैं। पैरिस के बाद आने वाले *'ल्यों'* और *'मार्सेई'* नामक शहरों की जनसंख्या दस लाख से कुछ ही अधिक है। फ़्रांस के अन्य नगरों की गणना मध्यम या लघु श्रेणी में होती है।

सामान्यतया नगरों के जीवन के तनाव से बचने के लिए अधिकतर नगर निवासी समीपस्थ ग्राम क्षेत्रों में जाकर बस रहे हैं। पर पैरिस और बृहत्तर पैरिस के लोगों का जीवन अपेक्षाकृत कठोर और जटिल है। उनका वातावरण भिन्न है। समय की कमी उन्हें सदा सताती दीखती है। पर ऐसा नहीं कि अन्य फ़्रांसीसियों की तरह वे जीवन की उमंग से वंचित हों। ये लोग प्रायः उत्तेजित, श्रांत और असंतुष्ट प्रतीत होते हैं और प्रादेशिक लोग शांत, विश्रांत और संतुष्ट दिखाई देते हैं। पैरिस में ख़रीदने या किराये पर लेने के लिए अपार्टमैंट मँहगे हैं और सभी लोग उपनगरों के गगनचुंबी अपार्टमैंटों और बहुजातीय जनता के बीच रहना पसंद भी नहीं करते। ऐसी परिस्थिति में ये लोग असंतुष्ट न हों तो क्या हों। पैरिस में रहने वाले लोग यदि उपनगरों में और उपनगरों में रहने वाले लोग पैरिस में काम करते हैं तो निश्चय ही परिवहन की समस्या उठती है। कहते हैं कि प्रतिदिन लगभग बीस लाख लोग एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं। लोग या तो अपनी मोटर में या यथासंभव सबअर्बन ट्रेन में या मैट्रो और बसों में यात्रा करते हैं। ऐसे बिरले ही लोग हैं जो घर और काम के स्थान की दूरी मिटा सकें। घर से कार्यस्थल को जाने-आने में प्रायः चालीस से पचास मिनट सुबह और उतना ही समय शाम को लगाना होता है। कुछ लोग तो मोटरों की भीड़ से बचने के लिए उपनगर के अपने मकान से सुबह साढ़े सात बजे निकलते हैं और शाम को आठ बजे से पहले घर नहीं पहुँचते। इस प्रकार जब वे घर

लौटते हैं तो खाना खाने के और थोड़ा-बहुत दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने के बाद नींद के सिवा उन्हें कुछ और नहीं भाता। अवकाश का कोई समय मिलता है तो सप्ताहांत में। उनके लिए घर ही स्वतंत्रता और विश्राम का अंतिम शरणस्थान बन जाता है जहाँ वे जो चाहें कर सकते हैं। वे परिवार का सुख और ऐसी चीज़ों का आनंद लेते हैं जो उनके स्वत्व को सार्थक बनाएँ। बृहत्तर पैरिस के सामान्य लोगों के दैनिक जीवन का चित्र उपभाषा 'आरगो' के तीन शब्दों में मिलता है– '*बूलो*' (Boulot) अर्थात 'काम', '*मेत्रो* ' (Métro) अर्थात् 'परिवहन साधन' और '*दोदो*' (Do Do)अर्थात् 'नींद'। इस सूत्र में अत्युक्ति का अंश स्पष्ट है।

अधिकतर फ़्रांसीसी अपार्टमैंटों में रहते हैं। उपनगरों और ग्रामीण क्षेत्रों में बँगले और छोटे–छोटे कुटीर भी मिलते हैं। पर मकानों और दुकानों की सुरक्षा फ़्रांसीसी जीवन की महत्वपूर्ण समस्या है। इसीलिए प्रायः लोग बिजली और इलैक्ट्रॉनिक्स ख़तरे के अलार्म का प्रयोग करते हैं। इसकी घंटी की बहुत तीखी आवाज़ सारे मुहल्ले में अनधिकृत व्यक्तियों को दुश्चेष्टा की चेतावनी देती है। बैंकों और दुकानों में 'विडियो कैमरे' पास से गुज़रने वालों का चित्र प्रदर्शित करते हैं। ऊँची इमारतों के अपार्टमैंटों में रहने वालों के लिए हर इमारत में '*कोंसियेर्ज* ' मैं अर्थात् 'संरक्षक' की नियुक्ति होती है। वह निचली मंज़िल पर छोटे-से अपार्टमैंट में रहता है, इमारत की चौकीदारी और सफ़ाई करता है और निवासियों की डाक बाँटता है। आवश्यकतानुसार वही पुलिस अथवा आग बुझाने वाले दल को बुलाता है। छुट्टियों में लोगों के इधर-उधर जाने पर वही उनके अपार्टमैंट की देखभाल भी करता है। इस सब काम के लिए उसे वेतन भी मिलता है और बिना किराये के निवास स्थान में बिजली, गैस, टेलीफ़ोन तथा अन्य सुविधाएँ भी मुफ़्त होती हैं। कहीं-कहीं इस काम के लिए दंपती नियुक्त होते हैं, आदमी माली का काम करता है और औरत बाकी सब काम करती है। निवासियों से उसका निजी संबंध स्थापित होने से निवासी त्यौहारों और खुशी के मौकों पर उसे इनाम-इकराम भी देते हैं।

पुराने समय में 'कोंसियेर्ज' धार्मिक संस्थानों और बड़ी हवेलियों का संरक्षक हुआ करता था। वह नवागंतुकों और अतिथियों का स्वागत और पथ प्रदर्शन भी करता था। अठारहवीं शती में यह काम औरतें ही करती थीं। उन्नीसवीं शती में वे मध्यवर्ग के लोगों और अकेले रहने वालों के जीवन का केंद्र बन गईं। वे ही उनका सीने-पिरोने का काम करतीं, कपड़ों पर इस्त्री करतीं और आवश्यकता होने पर अकेले व्यक्तियों के भोजन का प्रबंध भी करतीं। यह संस्था फ़्रांस में ही नहीं, कई पाश्चात्य देशों में बहुत समय से चली आ रही है। एक फ़्रांसीसी लेखक के अनुसार 'कोंसियेर्ज' के बिना एक नगर इतिहास रहित लगता है– बिना नमक और काली मिर्च के शोरबे के समान, निःस्वाद ! यह सच है कि 'कोंसियेर्ज' के बिना नई इमारतों का वातावरण अमानवीय लगता है।

पर अब समय बदल रहा है। न अच्छे भरोसे के लोग इस व्यवसाय को पसंद करते हैं, न नगर निवासी उनके रहने का ख़र्च उठा सकते हैं। उनकी संख्या कम होती जा रही है। उनके स्थान पर अब लोग कई प्रकार के साधन अपनाते हैं– सुरक्षा के लिए *'डिजीकोड'* (Digicode), *इंटरफ़ोन* अथवा *'विडियोफ़ोन'* (Vidéo-Phone) लगवाते हैं जिससे हर कोई इमारत में बिना अनुमति के प्रवेश न कर सके। लोग सफ़ाई के लिए कंपनियों को ठेका देते हैं और डाक-वितरण के लिए डाक के डिब्बे लगवा लेते हैं।

हर विकसित समाज की तरह फ़्रांस में शिष्टाचार का प्रधान स्थान है। यहाँ साधारण नियमों का प्रायः पालन होता है, पर खाने के समय विशेष ध्यान रखना होता है। इस अवसर पर प्रमुख उद्‌देश्य होता है लोगों से जान-पहचान करना और शांतिमय वातावरण में ऐसे विषयों पर विचार-विनिमय करना जिनमें सभी लोग भाग ले सकें। खाने के समय चुप्पी साधने वाले लोगों को फ़्रांसीसी अधिक पसंद नहीं करते। इसलिए वार्तालाप के ऊँचे स्वर, छुरी-काँटे से रकाबियों को छूने की खनखनाहट, सूप पीते समय सुड़प-सुड़प या खाने के समय चपचप और खाने के बाद डकार लेना ठीक नहीं समझा जाता। खाना समाप्त होने के बाद चल उठना भी उन्हें पसंद नहीं। थोड़े समय बाद तक वार्तालाप जारी रखना

होता है।

पाकशास्त्र फ़्रांसीसी जीवन का स्वादिष्ट अंग है। फ़्रांस, भारत, चीन या जापान जैसे कुछ ही देश हैं जिन्होंने अपनी संस्कृति, भूमि, जलवायु, खाद्य और पेय पदार्थों के अनुकूल पाकशास्त्र का परिष्कार किया है। आश्चर्य नहीं कि एक फ़्रांसीसी राजा ने कहा था– 'अच्छा खाना और पीना ही पृथ्वी पर स्वर्ग का दूसरा नाम है।'

फ़्रांसीसी धरती विविध और उत्तम अनाज, तरकारियाँ और फल देती है। कृषक खेती के साथ जानवरों, मुर्गियों और अन्य पक्षियों का बड़े चाव से पालन-पोषण करते हैं और माहीगीर समुद्र से भिन्न प्रकार की मछलियाँ और खाद्य शुक्तियाँ निकालते हैं। गाय के दूध के प्रयोग के बाद बचे दूध से अच्छे-से-अच्छा मक्खन, दही और पनीर बनता है। कहते हैं कि फ़्रांस में गाय, बकरी और भेड़ के दूध से तीन सौ साठ से अधिक प्रकार के पनीर बनाए जाते हैं। इस विविधता का कारण फ़्रांसीसी प्रदेशों की प्राकृतिक समृद्धि और पनीर बनाने वाले कुटीर-उद्योगों की बहुलता है। अनाजों में फ़्रांसीसी प्रायः गेहूँ की रोटी का प्रयोग करते हैं। ये रोटियाँ– गोल, छोटी और डबल रोटी– सभी तरह की होती हैं। फ़्रांस की विलक्षण रोटी *'बागैत'*(Baguette) है। 250 ग्राम की यह रोटी लंबे डंडे की तरह होती है। बेकरी के लोग 'बागैत' और *'क्रुआसाँ'*(croissant) (चंद्रकला जैसा) और अन्य खाद्य पदार्थ जैसे पेस्ट्री, केक इत्यादि सुबह सात बजे से एक बजे तक और तीसरे पहर से शाम साढ़े सात बजे तक बेचते हैं। बहुत-से लोग बेकरी से सेंडविच तथा अन्य पदार्थ लेकर और एक फल खाकर ही अपनी भूख मिटा लेते हैं।

फ़्रांस में पीने के लिए पानी का प्रयोग कम होता है– वह सब जगह स्वादिष्ट नहीं होता। मज़ाक यह मशहूर है कि पानी मेढ़कों के लिए होता है। फ़्रांस के पहाड़ी और ज्वालामुखीप्रधान कटिबंधों के स्रोतों के पानी का प्रयोग सैकड़ों सालों से हो रहा है। रासायनिक विश्लेषण के अनुसार गठिया, बदहज़मी, दमा इत्यादि बीमारियों को दूर करने के लिए भी स्रोतों का पानी बोतलों में बिकता है। स्रोतों

के स्थानानुसार ही उनके नाम पड़े हैं, जैसे *'एवियाँ'*(Evian), *'वितैल '*(Vittel), *'विशी'*(Vichy) इत्यादि। जो लोग सोडे का पानी पसंद करते हैं वे *'पेरियें '* (Perrier) का प्रयोग करते हैं।

इस देश में कई प्रकार की शराब बनती और प्रयुक्त की जाती है। एक लेखक ने कहा था–'भगवान ने पानी की सृष्टि की और मानव ने मदिरा की'। अंगूर की उपज और इससे बनी लाल, गुलाबी और सफ़ेद शराब, शैंपेन और ब्रांडी को कौन नहीं जानता ? अंगूर के अतिरिक्त फ़्रांस में प्रायः सभी फलों से रस और शरबत तो बनते ही हैं, पर 'अलकोहल' और 'लिकर' भी बनती हैं। जैसे ब्रांडी, वैसे ही सेब से *'कालवादोस'*(Calvados) नामक 'अलकोहल' और पेय 'साइडर'(Cidre) और नाशपाती तथा अलूचों से कई प्रकार की अलकोहल बनती है। लोग *'बीयर '*(Beer) और *व्हिस्की* (Whisky) भी पीते हैं, पर 'व्हिस्की' यहाँ बनती नहीं।'लिकर'(Liqueur) फलों के सत और चीनी मिलाकर रासायनिक ढंग से बनती है। कुछ पत्तियों और जड़ी-बूटियों के सम्मिश्रण से *'अपेरेतिफ़'*(Apéritif) भी फ़्रांस में बनते हैं जो क्षुधावर्धक पेय होते हैं। इन सब पेय पदार्थों का उपयोग रूढ़िबद्ध है। *'अपेरेतिफ़,' 'पोर्तों '* (Porto), 'व्हिस्की' और *'शैंपेन'* खाने से पहले ली जाती है। कुछ लोग सारा खाना 'व्हिस्की ' या 'शैंपेन' के साथ खाते हैं। शराब और *साइडर* खाने के साथ और *'ब्रांडी,' 'कालवादोस '* या *'लिकर '* खाने के बाद लिए जाते हैं। पकवान के अनुसार लाल, गुलाबी या सफ़ेद शराब का उपयोग होता है। पाकशास्त्र में पेय पदार्थों ने कला का पद ग्रहण कर लिया है। खाना स्वादिष्ट इसलिए भी होता कि सारे व्यंजन दो या तीन बार पैंठ लगने पर ताज़े खरीदे जा सकते हैं। शासन की ओर से खाने-पीने की चीजों में मिलावट करने पर सज़ा दी जाती है। आश्चर्य नहीं कि फ़्रांसीसी अपने खाने-पीने के इतने आदी हैं कि उन्हें विदेशों में जाने पर कहीं का खाना पसंद नहीं आता। अंग्रेज़ी प्रधानमंत्री चर्चिल का कहना था– 'मैं खाने-पीने के मामले में बहुत मीन-मेख निकालने वालों में नहीं, सबसे अच्छे

खाने-पीने से ही मैं संतोष कर लेता हूँ ।'पाकशास्त्री हमें सदा याद दिलाते हैं कि "हमारा शत्रु मेज़ पर है।" इसीलिए फ़्रांसीसी लोग किसी भी खाद्य अथवा पेय पदार्थ की अति नहीं करते।

फ़्रांस का ऐसा कोई गाँव या नगर नहीं जहाँ घर से बाहर खाने या पीने की सुविधा न हो। हर जगह कम से कम एक *'काफ़े '* (Café) ज़रूर होता है। तंबाकू, सिगरेट और दियासलाई इत्यादि बेचने का सरकार का एकाधिकार होने से कुछ 'काफ़े' के मालिकों को यह सामग्री बेचने का लाइसेंस दे दिया जाता है। ऐसे काफ़े के बाहर *'तबा '* (Tabac) अर्थात् 'तंबाकू बेचने का स्थान' शब्द लिखा होता है और लाल रंग की वर्तिका टँगी होती है। यहाँ पर डाक के टिकट और टेलीफ़ोन के 'कार्ड' भी मिलते हैं, कुछ में घुड़दौड़ के दाव भी लगाए जा सकते हैं। ऐसे 'काफ़े' में लॉटरी के टिकट भी बिकते हैं। 'बार,' 'काफ़े', 'ब्रासरी' (Brasserie) व *रैस्टोराँ* फ़्रांसीसी जीवन के आवश्यक अंग हैं। 'बार' में केवल पेय पदार्थ मिलते हैं। 'काफ़े' में चाय, कॉफ़ी और अन्य पेय पदार्थों के अतिरिक्त *'सैंडविच '* या *'हौट डोग '* इत्यादि चीज़ें मिलती हैं। *'ब्रासरी '* का नाम उसके पीतल के काउंटर से पड़ा । यहाँ रात देर तक पेय पदार्थ तो मिलते ही हैं, दोपहर को फ़्रांसीसी खाना भी मिलता है। जो लोग दोपहर का खाना न घर से लाते हैं, न घर जाकर खाते हैं, वे या तो काम की जगह पर कैंटीन में या ' काफ़े' और 'ब्रासरी' में दोपहर का खाना खाते हैं। 'रैस्टोराँ' में केवल खाना ही मिलता है। उनकी श्रेणी के अनुसार खाना सस्ता या मँहगा होता है। पाकशास्त्र विशेषज्ञ उनकी श्रेणियाँ निर्धारित करते हैं। इन सब जगहों पर पेय और खाद्य पदार्थों की मूल्य सहित सूची बाहर लगी रहती है जिससे ग्राहक पहले से ही सावधान हो जाए। गर्मियों के दिनों में और जाड़ा शुरू होने से पहले हर शहर की प्रमुख सड़कों की पटरियों पर 'काफ़े' और 'रैस्टोराँ' इत्यादि के मालिक मेज़-कुर्सियों को बाहर लगा देते हैं। यहाँ लोग खाने-पीने के साथ इच्छा और अवकाश के अनुसार आते-जाते लोगों के हावभावों का तमाशा भी देख लेते है। सारे फ़्रांस और विशेषकर पैरिस में यह रोचक अनुभव सुलभ है। बुद्धिजीवी 'रैस्टोराँ' में

वाद-विवाद, व्यापारी अपना व्यापार और राजनयिक राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों के उत्तर खोजते हैं। घर पर पर्याप्त जगह न होने पर विद्यार्थी 'काफ़े' में घंटों पढ़ाई कर लेते हैं। नवयुवकों और नवयुवतियों तथा प्रेमियों के लिए ये संकेत-स्थान हो जाते हैं। पैरिस के बड़े और प्रसिद्ध 'रैस्टोराँ' में लेखक हर वर्ष अक्तूबर-नवंबर में मिलकर साल की सर्वप्रथम मौलिक कृतियों का चुनाव करते हैं। आजकल 'काफ़े' 'ब्रासरी' और *'रैस्टोराँ'* के लिए अनौपचारिक ढंग से प्राय: एक शब्द *'बिस्त्रो'*(Bistrot) का प्रयोग होता है। रूसी भाषा के इस शब्द का अर्थ है– 'जल्दी' ! कहते हैं कि नैपोलियन की विरोधी शत्रु की फ़ौजों के लोग मदिरा पीकर अपनी प्यास बुझाने के लिए मदिरालयों में जाते थे और वेटर को 'बिस्त्रो' कहकर बुलाते थे। तभी से इस शब्द का प्रयोग आरंभ हुआ।

इन स्थानों में शाकाहारी के लिए खाने में कठिनाई होती है। पर कुछ 'काफ़े' *'ब्रासरी '* और *'रैस्टोराँ '* के आदमी इतने सुशील होते हैं कि अपने ग्राहकों की भूख मिटाने के लिए वे कुछ न कुछ प्रबंध कर ही निकालते हैं। वैसे फ़्रांस में और विशेषकर पैरिस में हर विदेशी को अपने देश का खाना मिल सकता है। यहाँ भारतीय, पाकिस्तानी, चीनी, इटालियन और थाई इत्यादि रैस्टोराँ की कमी नहीं।

फ़्रांस के हर नगर में सब प्रकार के सामानों के लिए छोटी-बड़ी सभी तरह की दुकानें है। बड़े-बड़े शहरों में जगह-जगह पर उत्तरी अफ़्रीका के कंबोज और वियेतनाम के और पैरिस में भारत तथा पाकिस्तान के लोगों की दुकानें हैं। बड़े-बड़े 'जनरल स्टोर' और *'डिपार्टमैंटल स्टोर'* भी हैं। विज्ञापन घोषणा करते हैं कि *'डिपार्टमैंटल स्टोर'* में सुई से लेकर हाथी तक खरीदा जा सकता है। कुछ बड़े शहरों की विशिष्ट दुकानों की सजावट देखते ही बनती है। बच्चों के स्कूलों के सत्रारंभ और क्रिसमस और नववर्ष के समय दुकानों की सजावट अद्वितीय होती है और खूब भीड़ होती है। जब लोगों को बड़ी दुकानों में जाने का समय नहीं मिलता तो वे साधारण उपयोग की सामग्री, कपड़े-लत्ते व घरेलू सामान डाक से ख़रीदते हैं। दो-तीन मुख्य व्यापार केंद्र साल में मौसम के अनुकूल

ग्राहकों को सूची-पुस्तकें भेजते हैं। ज़रूरत के सामान का चुनाव करके ग्राहक पहले से चैक द्वारा रुपया भेज देते हैं और सप्ताह या दस दिन के भीतर आर्डर का सारा सामान घर बैठे मिल जाता है।

आधे से अधिक फ्रांसीसियों को फूलों से प्रेम है। उनके मकानों, बँगलों और अपार्टमैंटों के भीतर और बाहर छज्जों पर फूल लगे रहते हैं। कुछ नगर पालिकाएँ तो सबसे उत्तम सजावट के लिए पारितोषिक भी देती हैं। फ्रांस के अधिक से अधिक नगर पुष्पों से सुशोभित रहते हैं। त्यौहारों और विशेष अवसरों पर लोगों के घरों में फूलों की सजावट से वहाँ की रौनक बढ़ जाती है। किसी के यहाँ खाने पर निमंत्रित होने पर अतिथि फूल ले जाते हैं। गिरजाघरों में प्रार्थना की वेदी पर फूल सजे रहते हैं। अच्छे रैस्टोराँ की मेज़ों पर भी फूलों के गुलदस्ते ग्राहकों का स्वागत करते हैं। अंत्येष्टि के अवसर पर शव पेटी को फूलों से सजाया जाता है। मृत बच्चों और युवाजनों की मृत्यु पर सफ़ेद और अन्य लोगों के लिए गुलाबी, लाल या अन्य किसी भी रंग के फूलों का प्रयोग होता है। दो नवंबर को प्रियजनों की स्मृति में कैथोलिक धर्मावलंबी श्राद्ध दिवस पर श्मशान भूमि में फूलों से ही अपने बंधुओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

इन सब उपयोगों के अतिरिक्त यूरोप में बहुत समय से फूलों की भाषा की परंपरा भी चली आ रही हैं। रसिक हृदय और प्रेमी जब संकोचवश अपनी प्रेयसी को स्पष्टतया अपने भावों का संदेश नहीं भेज पाता तो वह फूलों की शरण लेता। मौन फूल पर्याप्त मात्रा में प्रेम की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। उनका अपना चमत्कार है। क्षणभंगुर जीवन में वे समुद्र की लहरों की तरह उठते हैं और आंतरिक भावों को प्रकट कर सकते हैं। पर फ्रांस में पुष्पमालाओं के प्रयोग से न विवाह का परिपाक होता है, न अतिथियों के प्रति स्वागत भाव की अभिव्यक्ति होती है।

पर्यावरण को शुद्ध रखने के पक्षपातियों से बहुत पहले ही फ्रांसीसियों ने हरे-भरे और फूलदार बाग़-बग़ीचों का महत्व समझ लिया था। हर शहर की नगरपालिका उसको हरे और फूलों से भरे चौकों से सुसज्जित करती है। *पैरिस,*



फूलों का बाजार

वर्साई और *फ़ौनतेनब्लो* (Fontainebleau) के तथा अन्य महलों के बाग़-बग़ीचों का वैज्ञानिक, कलात्मक और सुव्यवस्थित निर्माण इस तथ्य का साक्षी है। इनकी रचना शैली के आधार पर ही ' फ़्रांसीसी' बाग़ों की ख्याति हुई। झूलते-मँडराते वृक्षों और झाड़ियों में घर किए हुए इनमें चहकते पक्षियों की और फ़व्वारों के पानी की कलकल ध्वनि कानों को और रंग-बिरंगे फूलों की सुसज्जित क्यारियों और मूर्तियों का दृश्य आँखों को सुख देता है। इन जगहों के तंग बजरीले रास्तों पर घूमने से सारी थकान दूर हो जाती है। छोटे-बड़े पुरुष व नारी सभी को छुट्टियों में बग़ीचों में काम करने का शौक है। कुछ लोग जगह होने पर फूलों के अतिरिक्त अपने गुज़ारे के लिए तरकारियाँ भी उगाते हैं। कहते हैं कि यह शौक फ़्रांसीसियों की पैतृक कृषक मनोवृत्ति का अवशेष है। यह प्रवृत्ति मालियों और श्रमिकों के बढ़ते वेतन के साथ और भी तीव्र हो गई है। इसीलिए तिरानवे प्रतिशत फ़्रांसीसी अपने बग़ीचे की देखभाल और सज्जा स्वयं ही करते है।

निस्संदेह उचित यंत्र और परामर्श-साहित्य सुलभ होने से उन्हें बहुत सहायता मिलती है।

राष्ट्रों के बीच आदान-प्रदान बढ़ने पर फ़्रांसीसी जीवन भी बाह्य प्रभावों से दूर नहीं रह पाया। इनमें सबसे प्रमुख प्रभाव उत्तरी अमरीका का है। उस सभ्यता के प्रतीक *'जीन'* (Jean) और *'टी-शर्ट'* (T-Shirt) तथा *'कोका-कोला'* और *'हैमबर्गर'* (Hamburger) सर्वत्र विद्यमान हैं। *'मैकडौनल्ड'* ने फ़्रांस के कोने-कोने में दुकानें खोल ली हैं। *'फास्ट फूड'* ने फ़्रांस में घर कर लिया है। अमरीकी रेडियो, टी.वी. संगीत और सिनेमा का प्रभाव सर्वव्यापक है। जब पैरिस के बाहर 'यूरो डिज़नी लैंड' (Euro Disneyland) की योजना बनी तो लोग उसके विरुद्ध थे। पर अब उसके खुलने पर फ़्रांसीसी ही नहीं, यूरोप के अन्य लोग भी वहाँ जाते हैं। बहुत-से लोग या तो जौगिंग करते हैं, नहीं तो कम से कम *जौगिंग* के वस्त्र और जूते पहन कर अमरीकनों की नकल करते हैं। निश्चय ही आज के विश्व में किसी भी बाह्य प्रभाव के अच्छे और बुरे परिणामों की आलोचना करना कठिन है, पर अमरीका के प्रभाव के प्रति फ़ासीसियों की दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होती हैं– कुछ और विशेषकर युवाजन अमरीकी जीवन शैली को अपना आदर्श मानते हैं और कुछ अपनी संस्कृति के गौरव को सुरक्षित रखने की इच्छा से अमरीकी जीवन शैली की अवहेलना करते हैं।

5. फ़्रांसीसी परिवार : नारी और पुरुष

संयुक्त राष्ट्र संघ की 1948 ई. की *सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा* के अनुसार परिवार ही समाज और राष्ट्र का आधार है। फ़्रांस में भी परिवार सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु है। पर यहाँ परिवार की कल्पना संकीर्ण होती जा रही है। वह भारत के संयुक्त परिवार की तरह नहीं है। यहाँ परिवार प्रधानतया माता-पिता और अपने बच्चों तक ही सीमित है। सुगठित होने से उसकी अपनी जीवन शैली और दस्तूर हैं। यह कल्पना आदरणीय है– इसीलिए हर वर्ष मई में *मातृदिवस* और जून में *पितृदिवस* मनाया जाता है। बच्चे अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता दिखाने के लिए उन्हें विशेष उपहार भेंट करके अपने स्नेह का प्रदर्शन भी करते हैं। इस प्रकार फ़्रांस में परिवार एक छोटा-सा गुट ही प्रतीत होता है। हर परिवार का वातावरण उसकी परंपरा तथा आर्थिक और सामाजिक स्थिति के अनुकूल होता है। इसकी प्रतिमा का साधारणीकरण संभव नहीं। पर पुराने और कुलीन परिवारों का रूप बदलता जा रहा है। आज के फ़्रांसीसी परिवार के भीतर प्रायः समस्याएँ उठ रही हैं।

परिवार की संकीर्ण कल्पना के मुख्य नायक और नायिका दंपती होते हैं। पति-पत्नी बनने से पहले लड़का और लड़की स्वतंत्रतया अपना जीवन संगी चुनते हैं। माता-पिता की अनुमति औपचारिक ही होती है। पहले सगे-संबंधियों और कुछ मित्रों की उपस्थिति में निवास स्थान के नगरपाल के सामने सिविल विवाह मनाया जाता है। रजिस्टर पर हस्ताक्षर होते हैं। इसका अर्थ होता है कि

पति-पत्नी आजीवन अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पालन और एक दूसरे की सहायता की प्रतिज्ञा करते हैं। इस सिविल विवाह के बाद इच्छानुसार लोग गिरजे में धार्मिक विवाह भी करते हैं। तत्पश्चात् महाभोज या पानगोष्ठी का आयोजन होता है। विवाह का विधिविधान समाप्त होने पर दंपती प्रमोदकाल के लिए मनोनीत स्थान पर चले जाते हैं।

परिवार का चरमोत्कर्ष बच्चों से है। पति-पत्नी का प्रयास रहता है कि बच्चों का लालन-पालन ढँग से हो। बच्चा पैदा होने से पहले ही दोनों हर प्रकार की तैयारी करते हैं। अस्पताल में जाकर पहले से ही उन्हें पता चल जाता है कि भावी बच्चा लड़का होगा या लड़की। इसी समय से वे उसका नाम चुन लेते है। उसकी वेशभूषा इत्यादि की तैयारी करते हैं। पैदा होते ही बच्चे का बहुत लाड़-प्यार होता है। स्वभाव से और कानून की दृष्टि से माता-पिता लड़के-लड़की में कोई भेद नहीं करते। उनकी एकमात्र चिंता यही होती है कि वे बच्चे को वे सारी सुविधाएँ दें जिनसे उसका जीवन सफल और सुखी हो। आरंभ से ही बच्चे की साज-सज्जा और खिलौनों पर वे बहुत-सा पैसा ख़र्च करते हैं। उसके स्वास्थ्य के लिए उसे मोटर में विशिष्ट सीट पर बिठाकर या बच्चागाड़ी में लिटाकर वे बच्चे को हर मौसम में बाहर बाग़-बग़ीचों में घुमाते हैं। वे बच्चों के साथ यथासंभव अधिक-से-अधिक समय बिताते हैं। कुछ बड़े होने पर बच्चों के साथ सिनेमा, नाटक, सर्कस इत्यादि तमाशों में अथवा संग्रहालयों में जाते हैं। कई घरों में बच्चों को पियानो, वायलिन, गिटार (Guitare) तथा अन्य संगीत वाद्यों की अथवा गायन और विशेषकर लड़कियों को *'बैले'* नृत्य की शिक्षा दिलवाते हैं। कुछ माताएँ लडकियों को घर के काम में भी लगाती हैं।

बड़े होने पर लड़के-लड़कियाँ अपने व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करना चाहते हैं। *मानवाधिकार* के प्रभाव से अठारह साल की उम्र में राजनीतिक मताधिकार पाने से वे अपने जीवन की दिशा स्वयं ही निश्चित करना चाहते हैं। वे अपनी स्वतंत्रता का सुखद स्वप्न देखते हैं। बीस-बाईस वर्ष की आयु में वे अपने माता-

पिता का आश्रय छोड़कर अलग रहने लगते हैं। माता-पिता भी चाहते हैं कि वे स्वावलंबी हों। पर इसका अभिप्राय यह नहीं कि वे माता-पिता की सहायता न लें अथवा उनसे संबंध तोड़ लें। पढ़ाई समाप्त न होने पर अलग रहकर भी वे पढ़ाई समाप्त करते हैं। साथ ही आवश्यकतानुसार पैसा कमाने के रास्ते भी खोजते हैं। कई विद्यार्थी दुकानों या रैस्टोराँ इत्यादि में काम करते हैं तो कई लोककल्याण की योजनाओं में भाग लेते हैं। बीस वर्ष की आयु में लड़कों को राष्ट्रीय सेवा भी करनी होती है– या तो फ़ौज में भरती होकर या विदेशों में फ़्रांसीसी सहयोग कार्यक्रम में भाग लेकर। छुट्टियों में लड़के और लड़कियाँ काम ढूँढते हैं। उनमें से कुछ समुद्रतट पर या पहाड़ों के मनोरम स्थानों में 'बच्चों के दलों' में मॉनिटर बन जाते हैं। इस प्रकार उनकी यात्रा और रहने-सहने के ख़र्च के अतिरिक्त उन्हें कुछ जेबख़र्च भी मिल जाता है।



ग्रीष्मावकाश में समुद्रतट पर बच्चों का दल

छुट्टियों में बच्चों के दलों की प्रथा ही निराली है। छुट्टियों में माता-पिता के व्यस्त होने पर वे अपने बच्चों को इन दलों में भेज देते हैं। इस प्रकार

कुछ समय के लिए बच्चे माँ-बाप से अलग रहकर सामूहिक जीवन का अभ्यास प्राप्त करते हैं। इस प्रथा की उत्पत्ति सौ साल से भी पुरानी है। स्विट्ज़रलैंड के प्रोटेस्टेंट धर्मावलंबी अपनी भौतिक समस्याओं के समाधान के लिए पादरियों का सहयोग ढूँढते थे और कुछ समय के लिए बच्चों को उनकी निगरानी में छोड़ देते थे। इसी प्रकार इटली में भी *'दौन बोस्को'*(Don Bosco) नाम के पादरी ने कैथोलिक धर्मावलंबियों की सहायता के लिए बच्चों के दल इकट्ठे किए थे। अब फ्रांस में छुट्टियों के दिनों में कई माता-पिता इस प्रणाली से लाभ उठाते हैं।

फ़्रांसीसी परिवार में पिता का प्रभुत्व अब भी दृष्टिगोचर होता है। पर वास्तव में गृहस्थिन ही यदि कहीं बाहर काम न करे तो, परिवार की कर्ता-धर्ता होती है। पति की आर्थिक और नैतिक सहायता से वही घर की व्यवस्था और बच्चों की देखभाल करती है। शाम को काम से लौटने पर, सप्ताहांत में अथवा छुट्टियों में पति घरेलू काम में या बच्चों की देखरेख में पत्नी का हाथ बँटाता है। पत्नी को विविध यंत्रों और मशीनों की और कुछ घरों में अपनी मोटर की सहूलियत भी होती है। अधिकांश गृहस्थियों में नौकर या नौकरानी रखना संभव नहीं, पर मालकिन *'ओ पैर'* (Au paire) लड़कियों से सहायता ले सकती है। इस प्रणाली के अनुसार फ़्रांस में शिक्षा प्राप्त करने वाली, भाषा सीखने की उत्सुक अथवा फ़्रांसीसी गृहस्थ जीवन के अनुभव से आकृष्ट विदेशी लड़कियाँ रहने की जगह और कुछ जेबख़र्च पाकर नियमित घंटों के लिए घर के काम में अथवा छोटे बच्चों की देखभाल में मालकिन की सहायता करती हैं। कुछ मध्यवर्ग के परिवार काम के लिए सप्ताह में कुछ घंटों के लिए नौकरानी की मदद लेते हैं। मालकिन उस पर पूरा भरोसा करती है, चोरी या धोखाधड़ी के किस्से बहुत कम सुनने में आते हैं। इस तरह नौकरानियाँ कुछ ही घंटों में घर का सारा आवश्यक काम निबटा देती हैं।

निस्संदेह छोटे बच्चों के साथ परिवार को छोटी समस्याओं का और बड़े बच्चों के साथ बड़ी समस्याओं का समाधान करना होता है। बहुत कुछ ध्यान

रखने पर भी पाश्चात्य और फ़्रांसीसी समाज पर बाह्य आघात और प्रघात ऐसे होते हैं कि परिवार बच्चों का कैसे भी पालन करे, वे कुसंगत से बचकर स्वाध्याय, आत्मनियंत्रण और विवेक से ही इनका सामना कर सकते हैं। युवावस्था में पदार्पण करने पर उन्हें अपने क्रियाजगत और भावजगत में सामंजस्य लाना होता है। ग़लतियाँ करने पर वे स्वयं ही उत्तरदायी होते हैं। लड़के-लड़कियों का निर्बाध साथ स्कूल से आरंभ होता है। स्वतंत्रता के वातावरण में धीरे-धीरे कक्षा की मैत्री विविध रूप अपना लेती है। भविष्य की चिंता अथवा तैयारी उन्हें एक दूसरे के अधिक पास ला देती है। उनमें से कुछ अपनी मनोवृत्तियों और उपलब्धियों के अनुरूप साथी न मिलने पर अथवा आत्मविश्वास की कमी होने पर अथवा अन्य व्यक्ति के साथ असफल जीवन बिताने की शंका से अकेले रहना पसंद करते हैं, अपने व्यक्तित्व को पूर्णतया विकसित करने का प्रयास करते हैं। अन्य व्यक्ति प्रेमपाश में बँधने के बाद शादी किए बिना ही अपने संगी के साथ रहने का निर्णय कर लेते हैं, इस प्रकार प्रत्येक साथी की स्वतंत्रता सुरक्षित रहती है और आपस में अनबन होने पर वे स्वतंत्र तथा पृथक होने का निर्णय कर सकते हैं। अन्य व्यक्ति स्वतंत्रतया अपना साथी चुनने के कुछ ही वर्षों बाद अनुभव करते हैं कि आपसी जीवन असहनीय है तो आपसी समझौते अथवा अदालत के निर्णय के अनुसार विवाह-विच्छेद कर लेते हैं। उपरिनिर्दिष्ट अंतिम दो परिस्थितियों में यदि उनके बच्चे हों तो सभी का जीवन अशांत हो जाता है। समस्या दुरूह हो जाती है। आजकल कुछ समय साथ रहने के बाद अथवा विवाह के बाद साठ प्रतिशत युवाजन विलग हो जाते हैं। अकेले प्रौढ़ व्यक्ति या अलग हुए माँ या बाप की संख्या और समस्याएँ पाश्चात्य और फ़्रांसीसी परिवार की शोचनीय विलक्षणता है।

फ़्रांसीसी समाज और परिवार में नारी की सत्ता निर्विवाद है। पति और पत्नी के बीच तनाव का मुख्य कारण है–*नारी सुधार आंदोलन* के बाद नारी का जागरण, अपने स्वत्व की अभिव्यक्ति की माँग और समाज की मनोवृत्ति में परिवर्तन। अपने साथ नारी की समानता मानना फ़्रांसीसी पति के लिए स्वाभाविक

नहीं । वह पत्नी को प्रधानतया प्रेम का पात्र, बच्चों की माता और गृहस्थिनी के रूप में अधिक और स्वतंत्रता की इच्छुक व्यक्ति के रूप में कम ही देखता है। समाज ने भी नारी को मताधिकार सन् 1945 में ही दिया। कई ऐसे संस्थान हैं जहाँ पर नारियों का प्रवेश अभीष्ट न था। पर अब नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भाग लेना चाहती है और पति की सहयोगिनी बनना चाहती है। वह इस प्रतीक्षा में रहती है कि बच्चे बड़े हों तो वह अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करे। परिणामस्वरूप अब दूसरा पलड़ा भारी हो गया है और नारी अधिक उत्साही होती जा रही है। शादी के मामले में प्रायः वह ही निर्णय लेती है और विवाह-विच्छेद के विषय में फ़्रांसीसी कानून उसकी अधिक रक्षा करता प्रतीत होता है।

आज के फ़्रांस में पिछहत्तर प्रतिशत नारियाँ काम करती हैं। कुछ अंतःसुखाय, कुछ आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए और कुछ जीवन की मँहगाई के समक्ष गृहस्थी की आमदनी बढ़ाने के लिए। विवाहित महिलाएँ प्रायः स्कूलों, विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थाओं, अनुसंधान केंद्रों और प्रयोगशालाओं में नियुक्त होती हैं। बहुत-सी नारियाँ डॉक्टर अथवा नर्स बनती हैं या औषधालयों में काम करती हैं। राजनीति के क्षेत्र में वे ग्रामीण, नागरिक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर चुनावों में सफल होती हैं। वे नगरपालिका के प्रधान, विधानसभा के सदस्य और मंत्री पद पर भी पहुँचती हैं। सन् 1991 में एक महिला फ़्रांस की प्रधानमंत्री भी थी। प्रबंधकीय और व्यापारिक क्षेत्र में कई महिलाएँ उच्च और महत्त्वपूर्ण पदों पर आरूढ़ हैं। कितनी ही नारियाँ लेखिका बनकर प्रसिद्ध हुई हैं। दफ़्तरों, बैंकों, दुकानों तथा नाटक, संगीत, दूरदर्शन,रेडियो और सिनेमा के क्षेत्र में नारियों की कमी नहीं। पत्रकारिता में इनका स्थान प्रधान हो रहा है।

पर घर के बाहर काम करना विवाहित नारियों के लिए समस्याजनक भी हो रहा है। बच्चों के लिए नगरपालिका में "क्रैश" इत्यादि की सहायता होने पर भी इनको अपने व्यावसायिक और वैयक्तिक जीवन में समन्वय करना पड़ता है। नारी पर ही घर का और बाहर का बोझ आ पड़ता है। काम करने वाले पति-पत्नी के लिए आवश्यक हो जाता है कि वे एक स्थान पर काम करें और यह

सदा संभव नहीं होता। दोनों ही काम करने के बाद थके हुए घर लौटते हैं तो तनाव के अवसर निरंतर उपस्थित होते हैं। वे बच्चों के साथ भी कम समय बिता सकते हैं। कभी-कभी एक साथ छुट्टियाँ भी नहीं ले पाते। तात्पर्य यह कि परिवार का जीवन कुंठित-सा हो जाता है। जीवन की कठिनाई और बच्चों की ठीक देखरेख न कर सकने के कारण अधिकतर दंपती परिवार को एक या दो बच्चों तक ही सीमित रखते हैं।

अधिकांश परिवारों में, जहाँ पति-पत्नी दोनों ही काम करते हैं वहाँ इनका सामाजिक जीवन भी सीमित हो जाता है। छोटे परिवार के छोटे निवासस्थान में अतिथियों के ठहराने का तो सवाल ही नहीं उठता। अपने दैनिक जीवन में व्यस्त रहने, बंधुओं और मित्रों के मकानों की दूरी व यातायात की कठिनाई के कारण उनसे मिलने-जुलने का कार्यक्रम पहले से ही बनाना होता है। पहले से मिलने की तिथि निश्चित किए बिना मिलने या लोगों के घर जाने की संभावना कम रहती है। लोग प्रायः टेलीफ़ोन पर बातचीत करके ही अपने संबंध को सजीव रखते हैं। पैरिस में तो एक इमारत में रहते हुए भी अधिकांश परिवारों के लोगों के पास इतना भी समय नहीं कि वे पड़ोसियों से सौहार्द बढ़ा सकें। कदाचित् नगरों और उपनगरों से बाहर प्रदेशों में लोगों के साथ मिल बैठना अधिक सरल है।

गृहस्थ जीवन और पेशों की ज़िम्मेदारी के प्रतिबंध होने पर भी फ़्रांसीसी औरतें अपना स्त्रीत्व बनाए रखती है। आभ्यंतर आत्मविश्वास और बाह्य समाज में अपनी सजीव प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए वे स्वस्थ और कर्मशील रहने का प्रयत्न करती हैं। शारीरिक व्यायाम और योग इत्यादि द्वारा अपने शरीर को सुडौल और आकर्षक बनाती हैं। सारी ही फ़्रांसीसी औरतें परियाँ तो नहीं होतीं पर वे वेश, प्रसाधन और श्रृंगार भंडारों में रूपविन्यास और अपनी साजसज्जा व वेशभूषा पर बहुत ध्यान देती हैं। फ़्रांसीसी औरतों की शोखी जगत प्रसिद्ध है। प्रौढ़ावस्था में और बच्चे होने पर भी उनकी गति और हावभाव देखकर उनकी उम्र ठहराना आसान नहीं। अधिक से अधिक लंबे समय तक वे तरुण रहना

चाहती हैं। · ·

नारी श्रंगार का एक प्रमुख माध्यम है— इत्र तथा ऐसे ही अन्य महकदार पदार्थ। स्त्री अपने व्यक्तित्त्व, आयु, मनोवृत्ति, चेहरे और बालों और त्वचा के रंग के अनुरूप विशेष पदार्थ चुनती है। इत्र से ऐंद्रिक जागृति होती है। अच्छा इत्र वह है जो भावुकता उत्पन्न करे और प्रीतिकर ऐंद्रिक आघात कर दे, स्वत्व और आत्मविश्वास का वर्धन करे और सामाजिक संपर्क में मृदुता ला दे। इसीलिए फ्रांस में गंधी व्यापार इतना पुराना और परिष्कृत है।

नारियों के वस्त्रों के संबंध में '*कूचूरिए*'(Couturier) अर्थात "ड्रैस डिज़ाइन" वस्त्रोद्योग का उल्लेख आवश्यक है। फ़्रांसीसी विषयभोगी समाज के उद्योगपति नारी को सभी रंगों में रंग देते हैं। वे नारी को विलास और उल्लास का पात्र समझकर उसके शरीर के प्रसाधन को मुख्य मानते हैं। इसीलिए नारी के मौलिक वस्त्रों और अन्य उपकरणों की प्रदर्शनियाँ करते हैं। हर प्रकार के कपड़ों, लोमचर्म और चर्मवस्त्रों की निराली से निराली रचना करते हैं। निश्चय ही ये वस्त्र अत्यंत मँहगे होते हैं। सामान्य आमदनी के परिवार तो इनको ख़रीदने का स्वप्न भी नहीं देख सकते । इन वस्त्रों का प्रदर्शन करने वाली नवयुवतियाँ अपने अद्‌भुत सौंदर्य के लिए ही चुनी जाती हैं। फ़्रांसीसी वस्त्रोद्योगी '*ईव सें लोराँ*'(Yves St. Laurent) और '*पियैर कार्दे*' (Pierre Cardin) तो भारत में भी प्रसिद्‌ध होने लगे हैं। ऐसे लोगों की मौलिक कल्पना के कारण ही विश्वभर में वस्त्रों का कौशल निर्धारित होता है।

पाश्चात्य और फ़्रांसीसी समाज में नर और नारी सभी अधिक से अधिक समय तक स्वस्थ, तरुण और स्वावलंबी रहना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि वयोवृद्‌ध लोग अकेलापन अनुभव करें तो आश्चर्य नहीं। बच्चों का अपना परिवार स्थापित होने पर बूढ़े माता-पिता की देखभाल दूर से या टेलीफ़ोन पर बातचीत करके ही अधिक होती है। निश्चय ही इतवार या छुट्‌टियों में अथवा त्यौहारों और शादी ब्याह के अवसरों पर बड़ा परिवार एकत्र होता है और वयोवृद्‌ध लोगों को अपने पोते-पोतियों, धेवते-धेवतियों का स्नेह भी मिलता है। वास्तव में माता-

पिता के विवाह-विच्छेद के अवसर पर उन दोनों की खींचातानी से दूर दादा-दादी, नाना-नानी इत्यादि बच्चों को लाड़-प्यार और मनोवैज्ञानिक स्थिरता देने का प्रयत्न करते हैं।

अवकाश-प्राप्त और वयोवृद्ध नर-नारी अपने जीवन को निरर्थक न समझें, इसलिए उनके क्लब और संघ बनाए गए हैं। यहाँ समवयस्क लोगों के साथ वे शतरंज या ब्रिज जैसे अंतरीय खेलों में व्यस्त रहते हैं। ये क्लब विदेश यात्राओं की व्यवस्था भी करते हैं और बुज़ुर्ग लोग सुविधापूर्वक देश-देशातर का भ्रमण करते हैं। रेल और हवाई जहाज़ की यात्रा में पैंसठ वर्ष से ऊपर की आयु के लोगों को आधी कीमत की छूट मिलती है।

कई नगरों में प्रवर-विश्वविद्यालय भी खुल गए हैं। ये सामान्य संस्थानों की तरह नहीं होते। उनमें वृद्ध लोगों के लिए विशेष कार्यक्रम रखे जाते हैं। अपाहिज या लंबे रोगों से ग्रस्त वृद्ध लोगों को उनके परिवार विशिष्ट भवनों में भरती करवा देते हैं जहाँ उनकी सब आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर डॉक्टर व नर्सें चौबीस घंटे इनकी सेवा में तत्पर रहते हैं। अब ऐसी इमारतें भी बनने लगी हैं जहाँ वयोवृद्ध लोग अपने अपार्टमैंट ख़रीद लेते हैं। यहाँ खाने-पीने इत्यादि घर की सारी सुविधाओं का आयोजन एक सोसायटी करती है और लोगों को घर का-सा वातावरण और सेवा मिल जाती है।

6. फ़्रांसीसी और पशु-पक्षी

पशु-पक्षियों के प्रति विशेष सौहार्द फ़्रांसीसियों की विलक्षणता है। आश्चर्य की बात है कि आधे से अधिक फ़्रांसीसी परिवार जानवर पालते हैं। कुत्ते, बिल्लियाँ, लाल मछलियाँ, चिड़ियाँ, तोते, मैना तथा अन्य जीव-जंतुओं को पालने से विदेशी लोग फ़्रांसीसियों को सनकी ठहरा सकते हैं, पर इस विलक्षणता को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। इसका वैयक्तिक और सामाजिक क़ारण है।

बचपन से ही पशु-पक्षियों की कथाएँ सुनकर और शिशु साहित्य पढ़कर लड़के और लड़कियाँ कुत्ते या बिल्ली इत्यादि रखना चाहते हैं। बच्चों की पालतू जानवर रखने की इस माँग को माता-पिता टाल नहीं पाते। वे समझते हैं कि इस प्रकार बच्चे अपने उत्तरदायित्व को समझने लगेंगे। धीरे-धीरे बच्चों और पालतू जानवरों के बीच एक अनोखा संबंध स्थापित हो जाता है। बड़े होने पर वे घर के बाहर कहीं भी जानवरों की शारीरिक दुर्दशा को सहन नहीं कर सकते। उनको परेशान करने, दुत्कारने, उन पर पत्थर फेंकने, ठोकर या डंडा मारने की बात करना तो व्यर्थ ही है। प्रायः फ़्रांसीसी मानते हैं कि जानवरों से उन्हें अत्यधिक प्यार मिलता है। बचपन से ही बाग़-बग़ीचों में झीलों और सरोवरों की बत्तखों और जलमुर्गियों और कबूतरों तक को वे रोटी के टुकड़े या दाना देते हैं और उनके प्रति अपने स्नेह को प्रकट करते हैं। इस प्रकार उन्हें आत्मसंतोष भी मिलता है।

अकेले रहने वाले लोगों के लिए पालतू जानवर, विशेषकर कुत्ता या बिल्ली उनकी भावुकता की अभिव्यक्ति का साधन, उनके एकाकी जीवन का साथी और सहारा और उनकी दिनचर्या का बहाना बन जाते हैं। कुछ व्यक्ति अपने घर की सुरक्षा के लिए कुत्ते रखते हैं। कहते हैं कि फ़्रांस में लगभग एक सौ पचहत्तर नसलों के कुत्ते मिलते हैं। टैक्सी चलाने वाले पुरुष और नारी और कुछ नेत्रहीन अपने पथ-प्रदर्शन के लिए प्रायः *लैब्राडोर* नसल का कुत्ता चुनते हैं। फ़्रांसीसी पुलिस के कुत्तों की ख्याति तो देश-विदेश तक फैली है। उन्होंने मैक्सिको और भारत के भूकंप में कितनी ही जानें बचाई हैं और नशीली सामग्री को पकड़ने में सीमा शुल्क के कितने ही अधिकारियों की सहायता की है।

फ़्रांस में नगरपालिकाओं के नियमानुसार जानवरों के सड़कों पर अकेले विचरने का निषेध है। सार्वजनिक स्थानों पर इनके मालिकों को इन्हें अपनी निगरानी में रखना होता है। प्रायः सारे शहरों में इनको ख़रीदने की और इनकी सफ़ाई की विशिष्ट दुकानें हैं। वैसे प्रायः लोग अपने मित्रों या पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापन द्वारा पालतू जानवर प्राप्त कर लेते हैं। उनको साफ़-सुथरा रखने के विषय में पूरा साहित्य मिलता है। उनके बीमार पड़ने पर विशिष्ट डॉक्टर और चिकित्सालय हैं। कुछ लोग उनका बीमा भी कराते है। सामान्यतया पालतू जानवरों के खाने का सामान अलग होता है। कुत्ते और बिल्लियों के खाने के विषय में तो बहुत अनुसंधान के बाद कई उद्योग खुल गए हैं। वे अधिक-से-अधिक स्वादिष्ट और स्वास्थ्यकर खाने के डिब्बे या सूखी टिकड़ियाँ बनाते है। कुछ मालिक तो उनको इतना लाड़-प्यार करते हैं कि मानो वे घर के ही सदस्य हों।

छुट्टियों या विदेश यात्रा के समय लोग पालतू जानवरों को प्रायः अपने साथ ही ले जाते हैं या मित्रों के पास छोड़ जाते हैं। नहीं तो उनके खाने-पीने और रहने-सहने का ख़र्चा देकर विश्वस्त पशु-पालन-गृहों में उन्हें छोड़ देते हैं। यूरोप में ऐसे होटल भी हैं जहाँ यात्रियों के साथ उनके पालतू जानवरों का भी

कुल मिलाकर कुत्ता या बिल्ली जैसे पालतू जानवर रखना काफ़ी महँगा पड़ता है। फ़्रांसीसी उनके स्वास्थ्य और शिक्षा का विशेष ध्यान रखते हैं और वे घर में हर जगह मँडराते दीखते हैं। यह सच है कि लोगों का इन जानवरों से विशेष स्नेह हो जाता है।

पैरिसनिवासियों के कुत्तों के प्रति प्रेम का प्रमाण *'आनियैर'*(Asnières) नामक स्थान का कब्रिस्तान है जहाँ पत्थरों पर खुदे लेखों को पढ़कर पर्यटक द्रवित और आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

फ़्रांसीसियों के इस अनुपम सौहार्द के कारण "पशु-पक्षियों के मित्रों" के कई संघ बन गए हैं। उनके अधिकारों को सुरक्षित रखना और मानव के शोषण से उन्हें बचाना इन संघों का उद्देश्य है।

7. फ़्रांस में मनोरंजन और खेलकूद

विश्व के अन्य विकसित देशों की तरह फ़्रांस में भी मनोरंजन और खेलकूद के कई साधन हैं। यहाँ के निवासी अपनी इच्छा, आवश्यकता और अवकाश के अनुसार उनका उपयोग कर सकते हैं। कुछ लोग सांस्कृतिक और कुछ शारीरिक विकास ढूँढते हैं तो कुछ इन दोनों के यथासंभव सम्मिश्रण से लाभ उठाते हैं। सामान्यतया पैरिस और अन्य प्रमुख नगरों में नाटक, *'औपेरा'* और *"बाले"* भावनृत्य तथा धार्मिक संगीत, वाद्य संगीत और समूह गान जैसे प्राचीन और रेडियो, सिनेमा और दूरदर्शन जैसे अर्वाचीन माध्यमों के कार्यक्रम प्रायः सारे देश में जनता को उपलब्ध हैं। फ़्रांस संग्रहालयों का देश भी है। यहाँ फ़्रांसीसी इतिहास, संस्कृति और धरोहर व देश-देशांतर के संबंध में रोचक और बहुमूल्य तत्वों और प्रमुख स्थानों और व्यक्तियों से संबद्ध स्मारक एकत्र हैं। इन संग्रहालयों में जाकर लोग फ़्रांस और उसके अतीत के गौरव की जानकारी पा सकते हैं।

सिनेमा, रेडियो और दूरदर्शन जनता के मनोरंजन, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष शिक्षा और सांस्कृतिक उन्नयन तथा सूचना प्रसारण के साधन हो सकते हैं पर फ़्रांसीसी जनता के लिए वे प्रधानतया सूचना और मनोरंजन के माध्यम हैं। 'लुई ल्यूमियैर' (Louis Lumière) और उसके भाई *औगयुस्त ल्यूमियैर* (Auguste Lumière) ने नए प्रकार के फ़ोटोग्राफ़ी के यंत्र द्वारा सौ साल पहले फ़्रांसीसी सिनेमा के आविष्कार में सहायता दी। उनके बाद *'आबेल गांस'* (Abel Gance) ने मूकचित्रों को सजीव बना दिया और *'रने क्लैर'* (René Clair) के यथार्थवादी

चलचित्रों ने *चार्ली चैपलिन* की फ़िल्मों को प्रभावित किया। फ़्रांस में बोलपट का श्रीगणेश 1927 में हुआ।

तब से बहुत- से नाटककार और उपन्यासकार इस नए माध्यम से आकृष्ट हुए और उनके सहयोग से फ़्रांसीसी सिनेमा का अनेक दिशाओं में विकास होने लगा। मानव जीवन के विभिन्न पक्षों के कलात्मक और व्यंग्यात्मक चित्रण पर आधारित फ़िल्में बनने लगीं। यथार्थता से प्रेरित गंभीर भावों और कला की निर्बाध अभिव्यक्ति तथा तकनीकी कौशल से फ़्रांस के दिग्दर्शकों ने कम पैसे और कम समय में अनेकों मौलिक फिल्में बनाईं। सामाजिक फ़िल्मों की एक नई लहर बहने लगी। इसके पक्षपाती *'फ़्रांसुआ त्र्युफ़ो'(François Truffaut)*, जिसका बावन बरस की कम उम्र में ही स्वर्गवास हो गया था, कहता था कि "मैं उन फ़िल्मों में रुचि नहीं ले सकता जिनमें जीवन की धड़कन न सुनाई दे।" *जार्ज सिमनों*(Georges Simenon) के अनगिनत फ़्रांसीसी उपन्यासों के आधार पर जासूसी फ़िल्में भी बनीं। इन उपन्यासों का नायक पुलिस कमीशनर मेग्रे (Maigret) अब भी फ़्रांसीसी जनता का मनोरंजन करता है। अंतरिक्ष, मानव के कौतूहल का विषय रहा है। फ़्रांसीसी लेखक *जूल वेर्न* (Jules Verne) के वैज्ञानिक-गल्प के उपन्यासों से प्रेरित भी बहुत-सी फ़िल्में बनीं। इस शती के आरंभ में *'जार्ज मेलिएस'*(Georges Méliès) जिस विषय की फ़िल्म का पहले दिग्दर्शक था उसका शीर्षक था–"चंद्रमा की यात्रा"। इस शती के पाँचवें दशक में ऐसी सबसे अधिक फ़िल्में बनी थीं। फ़िल्में चाहे अमरीका, ब्रिटेन या अन्य किसी देश में बनी हों, फ़्रांसीसी लोग उन सबमें बहुत दिलचस्पी लेते हैं।

मार्सेल कारने'(Marcel Carné)' और *जाँ दलानुआ* (Jean Delannoy), *क्लोद शाब्रोल*(Claude Chabrol), *गोदार* (Goddard), *अलें रने* (Alain Resnais), क्लोद ललूश (Claude Lelouche) जैसे फ़्रांसीसी दिग्दर्शकों के नाम अमर हैं और आज का फ़्रांसीसी सिनेमा पहले की तरह ही मौलिक और मनोरंजक है। पर यह भी सच है कि फ़्रांस में हर साल दिखाई जाने वाली चार सौ फ़िल्मों में केवल एक तिहाई फ़्रांसीसी होती हैं। फ़्रांसीसी दिग्दर्शकों के लिए अमरीकनों

की तरह फ़िल्म बनाने में पूँजी लगाना संभव नहीं। फिर भी फ़्रांसीसी हर प्रकार की "अच्छी" फ़िल्मों से अपना मनोरंजन करते हैं।

पिछले दशक की प्रमुख फ़िल्मों के नाम इस प्रकार हैं– *लूर्स* (L'ours) (भालू का बच्चा), *वान गौग*(Van Gogh) (इस कलाकार का जीवन चरित), उन्नीसवीं शती के लेखक *एदमों रोस्ताँ* (Edmond Rostand) के नाटक *'सिरानो द बर्जराक '* (Cyrano de Bergérac) का फ़िल्मी रूपांतर और *'कामि क्लोदेल '*(Camille Claudel) (मूर्तिकार *रोदें*(Rodin) की कलाप्रवीण संगिनी *कामि क्लोदेल* का संघर्षपूर्ण जीवन चरित)।

इस देश में विदेशी फ़िल्में मौलिक भाषा या फ़्रांसीसी भाषांतर अथवा फ़्रांसीसी अवशीर्षकों के साथ दिखाई जाती हैं। भारतीय फ़िल्मों के प्रति फ़्रांसीसी जनता की रुचि बढ़ती ही जा रही है। यहाँ बहुत-सी भारतीय फ़िल्मों का प्रदर्शन होता है और भारतीय फ़िल्म समारोहों का आयोजन भी होता है। इन अवसरों पर हिंदी, बंगला, तमिल, तेलुगु और मराठी तथा कन्नड़ भाषा के चित्र भी दिखाई देते हैं। यद्यपि *श्याम बेनेगल, मृणाल सेन, विमल राय* तथा *मीरा नायर* इत्यादि दिग्दर्शकों के चित्र अधिकतर दिखाए जाते हैं पर भारतीय फ़िल्मों का उल्लेख होते ही सब एकदम *सत्यजीत राय* का नाम ले उठते हैं। उनकी सारी ही कृतियाँ फ़्रांस के विभिन्न नगरों में दिखाई जाती हैं। उनकी सत्तरवीं वर्षगाँठ के अवसर पर उनके जीवन और कृतित्व संबंधी फोटो सहित एक बहुमूल्य ग्रंथ 1991 ई. में प्रकाशित हुआ था।

हर वर्ष फ़्रांसीसी जनता *कान*(Cannes) नामक नगर के अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह की प्रतीक्षा करती है। मई के महीने में *रिवियेरा*(Riviéra) अथवा फ़्रांस के नीलम तट के इस नगर में विश्व के दिग्दर्शक उपस्थित होते हैं। दस दिन तक यहाँ हर प्रकार की सैकड़ों फ़िल्मों का प्रदर्शन होता है और पारितोषिक वितरित होते हैं। इस समारोह का उद्देश्य है– सीमाओं को तोड़ना-जीवन और कला की सीमा को, युद्ध और शांति की सीमा को, स्मृति और विस्मृति की सीमा को, रूढ़िवाद और आधुनिकता की सीमा को। फ़्रांस्वा त्र्युफ़ो के शब्दों में यह

अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह एक विशालकाय दर्पण है जिसमें प्रदर्शित फ़िल्में विश्व के सभी देशों की संस्कृति, सभ्यता और भावी परिवर्तनों को प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करती हैं।

राजकीय एकाधिकार होने से बहुत समय तक राजकीय रेडियो और दूरदर्शन जनता का मनोरंजन और सेवा करते रहे हैं, पर राजनीतिक चुनावों के परिणामस्वरूप सत्ता बदलने पर प्रसारण और कार्यक्रम की नीति और उनका कार्यान्वयन करने वाले उच्चाधिकारियों का परिवर्तन भी होता था। ज़ाहिर है कि किसी भी सत्ता के लिए प्रसारण माध्यम शासन के बलवान शस्त्र होते हैं। इसीलिए राजनीतिक दलों को सदा यही शिकायत रहती थी कि प्रसारण के कार्यक्रम और विशेषकर राजनैतिक समाचार निष्पक्ष नहीं होते। बहुत वाद-विवाद के बाद 1981 ई. में यह निर्णय हुआ कि राजकीय रेडियो और दूरदर्शन के साथ-साथ इनके प्राइवेट उद्योगों को भी प्रोत्साहन देना चाहिए। अतः आज के प्रसारण गगन में चार राजकीय रेडियो और अठारह सौ "स्वतंत्र" रेडियो जनता का मनोरंजन करते हैं। राजकीय *फ़्रांस ऐंतर*(France Inter) सामान्य, *फ़्रांस म्यूज़िक*(France Musique), संगीत प्रधान, *फ़्रांस क्युलच्युर*(France-Culture), संस्कृति प्रधान और *फ़्रांस ऐंफ़ो* (France Info) केवल समाचार के कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। "स्वतंत्र" रेडियो का कार्यक्रम उनकी विशिष्ट जनता की रुचि और आवश्यकताओं के अनुरूप होता है। अपने-अपने वैयक्तिक, तकनीकी और आर्थिक संसाधनों के अनुसार कुछ का कार्यक्रम चौबीसों घंटे भी चलता है। प्रायः संगीत पर सूचना का थोड़ा-सा अंश हर एक में रहता है। इनमें से कुछ जैसे *जैज़, रौक, पौप,* और रै संगीतपरक हैं तो कुछ धार्मिक, आर्थिक और वित्तीय विषयों पर केंद्रित हैं। कुछ केवल नवयुवकों के लिए और कुछ वृद्ध जनता के लिए अपना कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। ''दूर शिक्षा'' के लिए *''रेडियो-सौरबोन ''* पैरिस से अपने कार्यक्रम प्रसारित करता है।

इसी प्रकार ''राजकीय'' और "स्वतंत्र" दूरदर्शन का सह-अस्तित्व भी है। राजकीय दूरदर्शन के दो चैनल हैं– "फ़्रांस दो" और "फ़्रांस तीन"। ये और स्वतंत्र

चैनल "एक" और "छह" निःशुल्क हैं। उनका अधिकतर रुपया विज्ञापनों से आता है। चौथी चैनल *कनाल प्ल्युस* (Canal Plus) के कार्यक्रम प्राप्त करने के लिए मासिक शुल्क देना पड़ता है। इसके कार्यक्रम "सिनेमा" और "खेलकूद" पर केंद्रित हैं। पाँचवीं चैनल भी निःशुल्क है— इसके रात सात से बारह बजे तक के कार्यक्रम फ़्रांसीसी-जर्मन सहयोग से बनते हैं। दिसंबर 1994 ई. से यह "ज्ञान और प्रशिक्षण के कार्यक्रम" प्रसारित करने लगी है। सभी चैनल हर आयु की जनता को आकर्षित करना चाहती हैं और उनमें से प्रत्येक बच्चों के लिए कार्टून, सर्कस और पशुपक्षी संबंधी कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। सन् 1960 से रंगीन टेलीविज़न और कुछ समय से "विडियो कासेट रिकार्डर" के आने से टेलीविज़न फ़्रांस में एक "सामाजिक दानव" जैसा बन गया है। कभी-कभी, कहीं-न-कहीं कार्यक्रम निस्संदेह रोचक होते हैं। पर प्रायः वयोवृद्ध व्यक्तियों के एकाकीपन को व पति-पत्नी के बीच संवाद के विषयों की कमी को दूर करने व बच्चों के लिए स्कूल के बाद दिल बहलाने के इस सीधे-सादे और सुलभ माध्यम से सभी लोग मनोरंजन करते प्रतीत होते हैं। प्रादेशिक और क्षेत्रीय विविधता और स्वत्व की सुरक्षा के लिए देशीय शासनों ने "केबल टी.वी. की व्यवस्था भी की है।

टी.वी. और रेडियो पर पौप संगीत के "टॉप पचास" गायकों का निर्वाचन भी होता है और रिकार्डों की कंपनियों में होड़ रहती है।

फ़्रांस में लगभग चौरानवे प्रतिशत घरों में दूरदर्शन के सैट हैं। एक चौथाई घरों में दो सैट हैं। अनुमान है कि शीघ्र ही हर घर में तीन सैट आ जाएँगे। टेलीविज़न और रेडियो के कार्यक्रमों की पत्रिकाओं में पाँच साप्ताहिक ऐसे हैं जिनकी दस लाख से अधिक प्रतियाँ बिकती हैं और एक पत्रिका की तो तीस लाख से अधिक प्रतियाँ हर सप्ताह बिकती हैं।

घर बैठे मनोरंजन करने वालों के अतिरिक्त फ़्रांस में बहुत-से ऐसे लोग भी हैं जो अपनी इच्छा से बाहर निकलते हैं। वे संग्रहालयों में जाकर, पुस्तकों की संगति में अवकाश का समय बिताकर, खेलकूदों में भाग लेकर या खुले क्षेत्रों में घूम-फिरकर प्रकृति के चमत्कार से वस्तुतः अपना मनोरंजन करते हैं। कुछ

लोग तो सप्ताहों पहले नाटक, औपेरा, बाले अथवा संगीत के कार्यक्रम के टिकट ख़रीदने के झंझट और उनकी मँहगाई से भी हतोत्साहित नहीं होते।

आज के फ़्रांस में संग्रहालय प्राचीन अवशेष, चित्रकला, मूर्तिकला, उत्कीर्ण चित्रों और खाकों की पैतृक संपत्ति के निर्जीव भंडार न रहकर संस्कृति के सक्रिय केंद्र हो गए हैं। विद्यार्थियों, सामान्य जनता और बच्चों के लिए प्रयोगशालाएँ, औडिटोरियम, लाइब्रेरियाँ और गोष्ठियों के हॉल अधिकतर संग्रहालयों का अभिन्न अंग हो गए हैं। फ़्रांस में लगभग तीस राष्ट्रीय और उतने ही प्रदेशीय संग्रहालय हैं। छोटे-बड़े नौ सौ संग्रहालय राष्ट्र के अधीन हैं। अकेले पैरिस शहर में ही अस्सी संग्रहालय हैं जिनमें से एक दर्जन से अधिक विश्वविख्यात हैं। कलाभवनों की प्रदर्शनियों की तो कोई गिनती ही नहीं।

बहुत-से लोग मनोरंजन के लिए पुस्तकें भी पढ़ते हैं। पिछली शती के एक लेखक ने कहा था– "जब मैं सोचता हूँ कि मुझे कितनी पुस्तकें पढ़ना बाकी है तो मैं आश्वस्त हो जाता हूँ कि मेरा जीवन सुख से बीतेगा।" ऐसे बहुत-से लेखक और पाठक हैं जिनके विचार में पुस्तकें पढ़ने के सुख से बढ़कर कोई अन्य सुख नहीं। इस प्रकार उपन्यासों और कथाओं के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा मानव हृदय की धड़कन का आभास, विदेशों के यात्रा संबंधी ग्रंथों से विश्वदर्शन और वैज्ञानिक ग्रंथों द्वारा ब्रह्मांड के कल्पना-जगत में भ्रमण हो सकता है। "पॉकेट बुक्स" फ़्रांसीसियों को बहुत आकर्षित करती हैं।

लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए फ़्रांसीसी साहित्य अकादमी, बुद्धिजीवियों की समितियाँ और अन्य संस्थाएँ उपन्यासकारों, कवियों और युवा लेखकों को हर वर्ष दर्जनों पुरस्कार देती हैं। सितंबर-अक्तूबर से "सीज़न" शुरू होते ही नए ग्रंथों की सूचनाएँ और आलोचनाएँ छपने लगती हैं और पारितोषिक समितियों की बैठकें होने लगती हैं। पुरस्कृत पुस्तकों के प्रकाशित होते ही दो-तीन महीनों में ही उनकी एक-डेढ़ लाख प्रतियाँ बिक जाती हैं। जनता में पुस्तकों के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए पिछले बारह साल से पैरिस तथा अन्य शहरों में पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन होता है। पैरिस के वार्षिक मेले में संपूर्ण देश

के और अन्य फ़्रांसीसी भाषी देशों के प्रकाशक भाग लेते हैं। प्रसिद्ध लेखक इस अवसर पर ग्राहकों की पुस्तकों पर अपने हस्ताक्षर करते हैं। मार्च 1993 में पैरिस के पुस्तक मेले के अवसर पर भारतीय और फ़्रांसीसी प्रकाशकों की गोष्ठी में उनके परस्पर सहयोग को बढाने पर विचार हुआ। विश्व के विभिन्न देशों की संस्कृतियों में फ़्रांसीसियों की रुचि को देखते हुए यह आश्चर्य की बात नहीं कि यहाँ अनेक विदेशी भाषाओं के ग्रंथों के अनुवाद होते हैं। हिंदी, बंगला और तमिल इत्यादि ग्रंथों के मूल भाषा से बहुत-से फ़्रांसीसी अनुवाद फ़्रांस से प्रकाशित होते हैं। पश्चिम-दक्षिणी *'अंगुलैम'*(Angoulême) नामक नगरी में हर वर्ष व्यंग्य और हास्यचित्रों के निर्माताओं का सम्मेलन होता है। *तें तें*(Tin-Tin) और उसके कुत्ते *'मीलू'* की भारत और तिब्बत में यात्रा भी प्रकाशित हुई थी। माने हुए अभिनेता प्रसिद्ध लेखकों की कृतियों के पाठ के रिकार्ड बनाते हैं और प्रसिद्ध नाटकों के वीडियो कासेट भी जनता का मनोरंजन करते हैं। लोग संग्रहालयों और अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित व्याख्यानों में भी भाग लेते हैं।

फ़्रांसीसी सभी प्रकार की पत्रिकाओं, मैगज़ीनों और विशिष्ट साहित्य से भी अपनी जानकारी बढ़ाते हैं। कुछ घर और उद्यान संबंधी, कुछ पाकशास्त्र और मदिरा संबंधी, कुछ बाल साहित्य और खेलकूद संबंधी समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं को पढ़ते हैं तो कुछ राजनीतिक और वित्तीय विषयों के प्रकाशनों को नियमित रूप से पढ़ते हैं।

फ़्रांस में छोटे-बड़े सभी शहरों में समाचार पत्र बेचने वालों की दुकानों का होना अनिवार्य-सा हो गया है। यहाँ स्थानीय तथा राष्ट्रीय समाचार-पत्र, तस्वीर कार्ड, प्रादेशिक पर्यटन संबंधी मानचित्र और सभी लोगों के मनोरंजन की प्रचलित तथा अन्य पुस्तकें भी मिलती हैं। ये दुकानें इस प्रकार सजी होती हैं कि पुस्तकों को जानने और ख़रीदने की अभिलाषा स्वतः जाग जाती है। पैरिस में तथा कई और नगरों में पुस्तक विक्रेता इतने सचेत होते हैं कि वे सलाहकार का काम भी करते हैं।

विश्व के अन्य देशों की तरह फ़्रांस में खेलकूद पसंद करने वाले दो प्रकार के लोग हैं– एक वे जो अपनी उच्चाकांक्षा के अनुरूप अत्यंत परिश्रम करके खेलकूद में स्वयं भाग लेकर सफल होते हैं और दूसरे वे जो अन्य लोगों को भाग लेते देखकर ही आनद उठाते हैं। फ्रांसीसी लोग जल, थल, हिम अथवा पर्वतों पर लगभग सारे ही वैयक्तिक और सामूहिक खेलों में भाग लेते हैं पर वे क्रिकेट नहीं खेलते। दुनिया का यही एक ऐसा प्रमुख खेल है जिसकी नफ़ासत न वे समझते हैं और न समझने की कोशिश ही करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में वे प्रायः नाम भी कमाते हैं। जैसे 1992 ई. में *बार्सेलोना में* आयोजित ओलंपिक खेलों के अवसर पर फ़्रांस ने क्रमशः सोने के आठ, चाँदी के पाँच और काँसे के सोलह पदक जीते । जापानी खेल "जूडो" में एक लड़की ने और तीरअंदाज़ी में एक लड़के ने स्वर्णपदक और "पिंग पौंग" में एक लड़के ने रज़त पदक पाया। पदक प्राप्त करने वाले चौंसठ देशों में से स्वतंत्र राष्ट्रमंडल (भूतपूर्व सोवियत संघ), अमरीका,जर्मनी, चीन, क्यूबा, स्पेन, दक्षिण कोरिया और हंगरी के बाद फ़्रांस का नवाँ स्थान रहा। जुलाई सन् 1996 में अटलांटा (अमरीका) में आयोजित ओलंपिक खेलों में फ़्रांस ने और भी प्रगति का प्रदर्शन किया। वहाँ 1900 ई. और 1924 ई. के बाद फ़्रांसीसी खिलाड़ियों को अद्‌वितीय सफलता प्राप्त हुई। वहाँ फ़्रांस ने क्रमशः सोने के पंद्रह, चाँदी के सात और काँसे के पंद्रह पदक जीते। जापानी खेल जूडो, 'एस्क्रिम' और साइकल के क्षेत्रों में फ़्रांस ने कुल सैंतीस पदकों में से बाईस पदक प्राप्त किए। एक फ़्रांसीसी लड़की ने 400 मीटर और 200 मीटर की दोनों दौड़ों में प्रथम स्थान और सोने के पदक प्राप्त किए। अटलांटा में पदक प्राप्त करने वाले 79 देशों में से इस बार अमरीका, रूस, जर्मनी और चीन के बाद फ़्रांस का पाँचवाँ स्थान रहा। दुख की बात है कि हम भारतीय प्रायः हॉकी की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सर्वप्रथम रहा करते थे पर बार्सेलोना और अटलांटा में हॉकी की भारतीय टीम को कोई पदक नहीं मिला। सौभाग्यवंश अटलांटा में टैनिस के भारतीय खिलाड़ी *आर्लियेंदो पईस* ने कॉसे का पदक प्राप्त किया।आर्लियेंदो

की टीम में क्रमशः जर्मनी, आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान तथा औरतों की टीम में स्पेन, जर्मनी और ब्रिटेन को पदक मिले।

निश्चय ही फ़ास और अन्य देशों के खिलाड़ियों की विजय का कारण यहाँ के क्रीड़ा जगत की सुव्यवस्था है। इसके दो कारण प्रतीत होते हैं। पहला यह कि बचपन से ही भावी खिलाड़ी उच्चकोटि की प्रतियोगिताओं में भाग लेना चाहते हैं। उनका निष्पक्ष चुनाव और विधिवत् प्रशिक्षण होता है। दूसरा कारण यह कि नगरपालिकाएँ, क्षेत्रीय समितियाँ, व्यवसाय और राष्ट्रीय प्रशासन निश्चित नीति के अनुसार खेलकूद की संस्थाओं को आर्थिक सहायता देते हैं। सरकार और सभी उच्चाधिकारी यहाँ अधिक से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहते हैं। इससे खिलाड़ियों को ही नहीं, सारे देश को आर्थिक तथा वित्तीय लाभ भी होते हैं।

फ़्रांस की जनता में फ़ुटबॉल, साइकिल रेस और टैनिस सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। फ़ुटबॉल की निम्न व्यवस्था से फ़्रांस के क्रीड़ा जगत की व्यवस्था का किंचिन्मात्र अनुमान हो सकता है। आठ और दस वर्ष की आयु से ही सारे देश के भावी खिलाड़ियों का चुनाव होने लगता है। ये "बच्चे" विभिन्न क्लबों के प्रशिक्षण केंद्रों में भरती होते हैं जो वस्तुतः बोर्डिंग स्कूल की तरह होते हैं। यहाँ "बच्चे" आधे दिन पढ़ाई करते हैं और परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। भोजन और विश्राम के बाद तीसरे पहर फुटबॉल खेलते हैं। एक प्रशिक्षक उनकी निगरानी करता है। क्रमिक सफलता के अनुसार पहले छोटे "कैडेट", फिर "जूनियर" और अंत में "सीनियर" खिलाड़ी बन जाते हैं। "तीसरी" श्रेणी के बाद "दूसरी" और फिर "पहली श्रेणी" की टीमों में उन्हें खेलने का अवसर मिलता है। इन प्रशिक्षण केंद्रों के शारीरिक नियंत्रण से कभी-कभी खिलाड़ी ऊबकर फुटबॉल खेलना छोड़ देते हैं। पहली श्रेणी में खेलने वाले फुटबॉल को अपना पेशा ही बना लेते हैं। तब उन्हें बहुत मोटी तनख्वाह और हर मैच में सफल होने पर भत्ता भी मिलता है। कुछ खिलाड़ी तो करोड़पति भी हो जाते हैं। वे बीस-बाईस वर्ष से बत्तीस-तेतीस साल तक ही फुटबॉल खेल पाते हैं। बहुत परिश्रम के बाद वे इतना थक

जाते हैं कि उन्हें यह पेशा छोड़ना पड़ जाता है। पर दस-बारह साल के बीच क्लब उन्हें हर प्रकार की सुविधा देता है। डॉक्टर, प्रशिक्षक, अंगमर्दक, रसोइया– सभी उनकी ख़ातिर-तवाज़ो में लगे रहते हैं। प्रमुख क्लब अपने सदस्यों से चंदा जमा करते हैं क्लब की जीवन संबंधी पत्रिका प्रकाशित करते हैं और क्लब के '*सूवनीर*' बेचते हैं। यूरोप, अफ़्रीका और दक्षिण अमरीका के बहुत-से विदेशी खिलाड़ी क्लबों में खेलते हैं। जाड़ों में दिसंबर-जनवरी के महीनों में कोई मैच नहीं होते। यही खिलाड़ियों की छुट्टियों के दिन होते हैं। पर इस समय वे गरम देशों में ग़ैर-सरकारी मैच खेलने जाते हैं। उनकी असली छुट्टियाँ गर्मियों में जून में होती हैं। "चैंपियनशिप" और "फुटबॉल कप" की व्यवस्था "फ़्रांसीसी फुटबॉल संघ" करता है। सन् 1991 में इसकी पहली शताब्दी मनाई गई थी। यह संघ ही रैफ़री, राष्ट्रीय टीम के निर्देशक और उसकी सहायता से राष्ट्रीय टीम के खिलाड़ियों की नियुक्ति करता है। इस संघ की प्रबंधक और अनुशासन समितियाँ सब क्लबों का नियंत्रण करती हैं। फ़्रांस में छोटे-बड़े कुल मिलाकर फुटबॉल के 2000 क्लब हैं और पंद्रह लाख फुटबॉलर। पाँच सौ खिलाड़ियों ने तो फुटबॉल को अपनी आजीविका का माध्यम ही बना लिया है।

जुलाई के महीने में बाईस दिन तक फ़्रांस की आँखें '*टूर द फ़्रांस*'(Tour de France) अर्थात् 'साइकिल रेस' पर गड़ी रहती हैं। अनुभवी निदेशकों की निगरानी में दो सौ से अधिक फ़्रांसीसी और विदेशी टोलियाँ इस प्रतियोगिता में भाग लेती हैं। तीन हज़ार किलोमीटर की फ़्रांस की परिक्रमा बाईस चरणों में पूरी करनी होती है। हर चरण का फ़ासला 160 से 240 किलोमीटर होता है और सीधी-सादी, चढ़ती-उतरती व पथरीली सड़कों पर प्रत्येक चरण एक दिन में ही समाप्त करना होता है। विजयी साइकिल सवार लगभग 45 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से साइकिल चलाता है। हर रोज़ शाम को प्रत्येक चरण का विजेता घोषित होता है। प्रतियोगी जिस-जिस प्रदेश में से गुज़रते हैं वहाँ तमाशबीनों की भीड़ लगी रहती है। जो साक्षात् रेस नहीं देख सकते वे रेडियो या टी.वी. पर उसका अनुसरण करते हैं। सारी परिक्रमा समाप्त होने पर

परम विजेता का जुलूस पैरिस के '*शांज़ेलिज़े* अवेन्यू' पर उतरता है। उसको हज़ारों फ्रैंक और एक पीली टी. शर्ट मिलती है।

इस साइकिल रेस की पहली शती 1991 ई. में मनाई गई थी। शुरू में पैरिस और *बौर्दो* नामक दक्षिण-पश्चिमी नगर की 580 किलोमीटर की दूरी पूरी करने के लिए केवल 28 शौकीनों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था। उसके बाद उत्तर-पश्चिमी नगर '*ब्रेस्ट*' और पैरिस की वापसी की 1200 किलोमीटर की दूरी पार करनी होती थी। उस समय दो-तिहाई सड़कें ऊँची-नीची और पथरीली थीं और कोई भी 10 किलोमीटर से अधिक साइकिल नहीं चला सकता था। इस '*पैरिस ब्रेस्ट*' की रेस के उतावले अपना काम छोड़कर समाचार-पत्रों के दफ़्तरों में नतीजा देखने को भागते थे। पिछले सौ साल में साइकिल उद्योग में बहुत प्रगति हुई है और साइकिलों की बिक्री बेहद बढ़ गई है। रेस और साधारण प्रयोग की फ़्रांसीसी साइकिल बनाने वालों, स्पोर्ट मैनेजरों, प्रतियोगियों और पब्लिसिटी व्यवसाय के लोगों के लिए साइकिल व्यवसाय आमदनी का पूरा धंधा बन गया है।

मई में फ़्रांस में *रोलाँ गारोस*(Roland Garros) मैदान में अंतर्राष्ट्रीय टैनिस प्रतियोगिता का उतना ही महत्व है जितना ब्रिटेन के "विंबलडन" और अमरीका के 'फ़्लशिंग मीडो' की प्रतियोगिता का। लाल मिट्टी के इस कोर्ट का नाम फ़्रांसीसी हवाई अफ़सर *रोलाँ गारोस* की स्मृति में रखा गया है। उसने 1913 ई. में भूमध्यसागर को पहली बार पार किया था और हवाई जहाज़ की पंखड़ियों के बीच से निशाना मारने की तरकीब का आविष्कार किया था। पहले महायुद्ध में हवाई लड़ाई के दौरान तीस वर्ष की आयु में उसका देहावसान हो गया था।

फ़्रांस में लोग खेलकूदों में अधिक रुचि लेने लगे हैं और रेडियो, टी.वी, तथा लिपिबद्ध प्रैस द्वारा उनके कार्यक्रमों और समाचारों को अधिकाधिक सुनते, देखते और पढ़ते हैं। ये सभी माध्यम उपरिनिर्दिष्ट कार्यक्रमों के अतिरिक्त एथलैटिक्स, रगबी, बास्केटबॉल, बौक्सिंग, वॉलीबॉल, गोल्फ़, घुड़दौड़, मोटर रेस, सर्फ़ इत्यादि पर और जाड़ों में *स्की* की राष्ट्रीय यूरोपीय और अंतर्राष्ट्रीय

प्रतियोगिताओं पर "रिपोर्ताज" और साक्षात व्याख्या प्रसारित करते हैं। इस प्रसारण के बाहुल्य से बच्चे छोटी उमर से ही विशेष खेलकूदों में रुचि लेने लग जाते. हैं।

व्यायाम के आदी कुछ लोग सुबह-शाम या कम से कम सप्ताहांत में जौगिंग करते है अथवा बाग़-बग़ीचों में घूमते हैं या मोटर में शहर के बाहर जाकर गोल्फ़ खेलते हैं। पैसे वाले लोग क्लबों के सदस्य बनकर व्यायामशालाओं अथवा तालाबों में तैरने के लिए जाते है, स्वीडिश *"सोना "* तथा व्यायाम के अन्य साधनों का उपयोग करते हैं। साप्ताहिक अथवा मासिक पत्रिकाओं में दिए योग अथवा व्यायाम के अभ्यास करते हैं। कुछ व्यायाम यंत्र खरीदकर घर पर ही अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। कुछ प्राकृतिक स्रोतों के आसपास बसे नगरों में जलचिकित्सा अथवा समुद्रीय तट पर स्थित समुद्रीय जल-चिकित्सा और शैवाल का उपयोग करने वाले विश्रामगृहों में तीन-चार सप्ताह बिताते हैं और कुछ नौ-परिवहनों पर देश-विदेश की यात्रा करते हैं।

कम पैसे वाले परिवार के लिए पैरिस में और उसके आस-पास मनोरंजन के नए साधन उपलब्ध होने लगे हैं। तैरने के शौकीन लोगों के लिए पैरिस नगर में ही *'अकुआ बूलवार'*(Aqua Boulevar) अर्थात् 'जलक्रीड़ा केंद्र' खुला है। यहाँ पर समुद्रतट जैसा कृत्रिम वातावरण बनाया गया है। पृथ्वी पर खूब सारी बालू बिखेर दी गई है जहाँ तैरने के बाद लोग मन बहलाते हैं। पैरिस के उत्तर में *आस्तेरिक्स ग्राम* (Asterix Village) परिवारों का मनोरंजन करता है। यहाँ रोमन आक्रमणकारियों के विरुद्ध प्रसिद्ध गोलुआ योद्धा और उसके साथी ओबेलिक्स की कथा का सजीव चित्रण हुआ है। कैलीफ़ोर्निया में डिज़नीलैंड, फ़्लोरिडा में डिज़नीवर्ल्ड और टोकियो में डिज़नीलैंड के बाद अब पैरिस से पच्चीस किलोमीटर पूर्व की ओर फ़्रांस का डिज़नीलैंड खुल गया है। इस संबंध में यह उल्लेख करना आवश्यक है कि इस प्रकार के "मनोरंजन पार्क" कोई नई बात नहीं। लगभग दो सौ साल पहले "आस्ट्रिया" की राजधानी "वियेना" में *"लूना*

पार्क " और ठीक डेढ़ सौ साल पहले "डेनमार्क" की राजधानी "कोपनहेगेन" में "*टिवोली पार्क* " की स्थापना हुई थी। पैरिस में ही सवा सौ साल पहले बना आज के महात्मा गांधी पथ पर स्थित "मनोरंजन उद्यान" अब भी परिवारों और बच्चों का मन बहलाता है।

प्राकृतिक पर्यावरण तथा पशु-पक्षियों की सुरक्षा के लिए पिछले पच्चीस साल से फ़्रांस के केंद्रीय और क्षेत्रीय शासनों ने छह राष्ट्रीय और चौबीस क्षेत्रीय "आरक्षक पार्क" निर्धारित किए हैं। वादियों, चट्टानों, तालाबों तथा झीलों से भरी प्रत्येक वनस्थली प्रकृति प्रेमियों के विहार और वनस्पति-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान और भूविज्ञान के विद्यार्थियों को अध्ययन का अद्वितीय अवसर प्रदान करती है।

सरकारी लॉटरियों, घुड़दौड़, और द्यूतक्रीड़ा से भी लोग मनोरंजन करते है। कुछ लोग तो पैसा दाँव पर लगाकर अपना भाग्य आज़माते हैं, *कसीनों* में खेलते हैं। फ़्रांस के कई नगरों में दुलकी , सबाध और सपाट घुड़दौड़ के बहुत-से प्रसिद्ध मैदान हैं। सप्ताह में चार बार कहीं-न-कहीं घुड़दौड़ होती है। इनमें देश-विदेश के घोड़े भी भाग लेते हैं। इस विषय की विशेष पत्रिकाओं को पढ़कर घोड़ों की वंशावली पढ़ने के बाद ही लोग पैसा लगाते हैं। कुछ लोग तो घुड़दौड़ में जीतने से ही अपना निर्वाह करते हैं। साल में दो-तीन अवसर ऐसे होते हैं जब फैशनेबल कपड़ों में सजी औरतों और मर्दों को देखते ही बनता है। घुड़दौड़ से पेशेवर लोगों को तो आमदनी होती ही है, शासन को भी टैक्स की आय से बहुत रुपया मिलता है।

8. शिक्षा, विज्ञान और चित्रकला

किसी भी देश की प्रगति का सर्वप्रधान आधार मनुष्य है और उसके बिना प्राकृतिक और औद्योगिक संसाधनों का मूल्यवर्धन असंभव है और मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास का आधार है शिक्षा। इससे ही मनुष्य आत्मोन्नयन, समाज सेवा और लोक कल्याण कर सकता है और समाज में अपना उचित स्थान पा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति औपचारिक ढँग से पाठशाला में और अनौपचारिक ढँग से अपने आप शिक्षा प्राप्त कर सकता है। शिक्षा विशेषज्ञों के अनुसार आज के संचार साधन भी अनौपचारिक शिक्षा के अदृश्य माध्यम बन गए हैं। फ्रांस में प्रत्येक व्यक्ति इन सब सुविधाओं का उपयोग कर सकता है।

इस विकसित देश में शिक्षा के उद्देश्यों और उसकी प्रणाली पर सदा से ही मनन होता आया है। अन्य देशों की तरह यहाँ भी बच्चों को राष्ट्र का भविष्य माना जाता है और उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अठारहवीं शती के अंत की राज्यक्रांति के बाद नागरिक और वैज्ञानिक शिक्षा को संस्कृति का आधार माना गया और शिक्षा के प्रशासन का केंद्रीकरण हुआ। सब नागरिकों को एकसमान शिक्षा देने का निर्णय हुआ। हर कम्यून (क्षेत्रीय जन-समुदाय) में प्राथमिक पाठशाला खोली गई। लगभग सौ साल से फ्रांस में शिक्षा अनिवार्य, निशुल्क और धर्मनिरपेक्ष है, अगरचे मध्ययुगीन कैथोलिक धर्माधीन शिक्षा की परंपरा के कारण ग़ैर-सरकारी संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा दी जाती है। इन संस्थाओं में तथा नागरिकों और उद्योगों द्वारा स्थापित अन्य संस्थानों में

कार्यक्रम, शिक्षा के आयामों और शिक्षकों के स्तर का नियंत्रण शिक्षा मंत्रालय ही करता है। वह उनको थोड़ी-बहुत आर्थिक सहायता भी देता है। सारे देश में वही उपाधियों का निर्णय करता है।

आज के फ़्रांस की शिक्षा-संबंधी राजनीति के दो प्रधान उद्देश्य हैं—पहला स्मरण शक्ति को महत्व न देकर व्यक्तियों की मनन-विवेचन और विचारों की अभिव्यक्ति की शक्ति को बढ़ाना और उनके स्वत्व का विकास करना और दूसरा जीवन के विविध क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उचित प्रशिक्षण देना जिससे संपूर्ण समाज की उन्नति हो सके। फ़्रांसीसी शासन शिक्षा को प्राथमिकता देता है। सारे राष्ट्रीय बजट में शिक्षा के बजट का सर्वप्रथम स्थान है। फ़्रांस में एक-तिहाई लोगों की आयु बीस वर्ष से कम है और छह से सोलह वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा निःशुल्क है। प्राथमिक कक्षा के छात्रों को नगरपालिका और बड़े बच्चों को सरकार की ओर से बिना मूल्य पाठ्यपुस्तकें दी जाती हैं। ग़ैर-सरकारी स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में कुछ संकायों को छोड़कर शुल्क नाममात्र को ही है।

आरंभ से उचित वातावरण में पले बच्चे और वयस्क समझ जाते हैं कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों और सोपानों में सफल होना आवश्यक है। इनमें प्रतियोगिता की भावना जागृत हो जाती है। वे जानते हैं कि जीवन निर्वाह के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिष्ठावान पद व पारितोषिक प्राप्त करने का एकमात्र माध्यम प्रतियोगिताओं में उत्तीर्ण होना है। शिक्षा परिश्रमी नर और नारियों की "पहले मैं, पहले मैं" की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करती है और समाज का स्तर ऊँचा उठा देती है।

यद्यपि फ़्रांस में भी शिक्षा के प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चस्तरीय स्तर हैं, फिर भी अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली के अभ्यस्त हम भारतीयों को इस देश की शिक्षा विषयक शब्दावली भ्रम में डाल सकती है। यहाँ पूर्व-प्राथमिक स्तर पर दो से पाँच वर्ष तक के बच्चों की कक्षा को *मातर्नेल* (Maternelle) कहते हैं, मानो अध्यापिकाएँ माँ की तरह बच्चों के व्यक्तित्व को उभारती हों। उनके सहयोग

से मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ प्रत्येक बच्चे के विकास पर ध्यान देते हैं। यहाँ बच्चा अपने पर्यावरण का और रूप-रंगों का भेद करना सीखता है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के अंत तक फ़्रांस में पहली से दसवीं, ग्यारहवीं अथवा बारहवीं कक्षा की चर्चा नहीं होती, प्रत्युत ग्यारहवीं से पहली और अंतिम कक्षा से पास होने पर ही माध्यमिक शिक्षा की उपाधि *बकालोरिया* (Baccalauréat) प्राप्त होती है। छह से दस साल की आयु तक की शिक्षा प्राथमिक पाठशाला में, ग्यारह से चौदह साल की आयु तक माध्यमिक शिक्षा के प्रथम सोपान की शिक्षा "कॉलेज" में और पंद्रह, सोलह और सत्रह वर्ष की आयु तक माध्यमिक शिक्षा के दूसरे सोपान की शिक्षा *लीसे* (Lycée) में होती है। प्राथमिक शिक्षा के पाँच साल बच्चों के जीवन के बहुमूल्य वर्ष होते हैं। इसी समय वे ढँग से फ़्रांसीसी बोलना, पढ़ना और लिखना सीखते हैं और गणित, इतिहास-भूगोल के पाठ्यक्रमों से परिचय करते हैं। साथ ही सुनागरिकता, शिष्टाचार, सामूहिक जीवन और हाथ के कार्य के प्रति आदरभाव का पाठ भी पढ़ते हैं। इन वर्षों में ही वे अपनी विलक्षण संस्कृति के ढाँचे में ढल जाते हैं। कॉलेज के चार साल में सब छात्रों के लिए पाठ्यक्रम एक समान होता है। वे फ़्रांसीसी भाषा, गणित, इतिहास-भूगोल, विदेशी भाषा, नागरिक शिक्षा, विनियोगार्थ विज्ञान, कला, तकनीकी और शारीरिक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करते हैं। आधुनिक यंत्र-तंत्रों के युग में उन्हें कंप्यूटर का उपयोग भी सिखाया जाता है। कॉलेज के अंतिम वर्ष में जब छात्र चौदह वर्ष का होता है तो उसे तीन विषयों में विशेष कुशलता प्राप्त करनी होती है– फ़्रांसीसी भाषा, लिपि और व्याकरण का निर्दोष अभ्यास, गणित में ठीक उत्तर और उसके विशदीकरण की क्षमता, विदेशी भाषा, अंग्रेज़ी में कथा-कहानी पढ़ने और शुद्ध भाषा में वार्तालाप की सामर्थ्य अभिवांछित है। इन्हीं वर्षों में छात्र को वैयक्तिक मनन व काम को जल्दी और ढँग से संपन्न करने, ठीक प्रकार से नोट लेने और अनुक्रमणिका बनाने का प्रोत्साहन दिया जाता है। किशोरावस्था के इन वर्षों में मस्तिष्क के विकास और सर्वांगीण शिक्षा ग्रहण करने से ही कदाचित् बड़े होने पर फ़्रांसीसी सचेत, सक्रिय और स्वावलंबी हो जाते हैं।

कॉलेज से निकलने पर या तो छात्र *बकालोरिया* की पढ़ाई करते हैं या मन न होने पर या रुपया कमाने की आवश्यकता से सामाजिक जीवन संबंधी खाने-पीने, रहने-सहने, मकान की सफ़ाई-सुथराई, रेडियो व टी.वी. की मरम्मत अथवा लकड़ी या बिजली इत्यादि के विविध प्रकार के कामों की दीक्षा लेते हैं। यह दीक्षा उन्हें या तो छोटे और मध्यम वर्ग के कारखानों में या औपचारिक ढँग की व्यावसायिक शिक्षा की संस्थाओं में मिलती है। यहाँ की परीक्षा पास करने पर उन्हें डिप्लोमा मिल जाता है। '*लीसे*'(Lycée) के तीन वर्ष में पाठ्यक्रम विविध शाखाओं में विभाजित हो जाता है– जैसे दर्शन और साहित्य, समाज शास्त्र और अर्थ विज्ञान, गणित और भौतिक विज्ञान, कृषि और जीव विज्ञान, गणित और रसायन शास्त्र, तकनीकी और कम्प्यूटर शिक्षा इत्यादि। माध्यमिक शिक्षा की चरमावस्था *बकालोरिया* उच्चतर शिक्षा में प्रवेश का पासपोर्ट है। लिखित परीक्षा में सफल होने वाले विद्यार्थी ही मौखिक परीक्षा के लिए आमंत्रित होते हैं। प्रत्येक फ्रांसीसी बच्चे का लक्ष्य इस परीक्षा में उत्तीर्ण होना है।

उच्चस्तरीय स्तर पर विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त फ्रांस में तकनीकी संस्थान और कृषि उद्योग, व्यापार और सेवा के क्षेत्रों की शिक्षा-दीक्षा के लिए अनेक राजकीय महाविद्यालय भी हैं। यहाँ चुनाव के बाद ही प्रायः प्रवेश मिलता है। इन संस्थाओं में विद्यार्थियों की प्रवेश नीति, कार्यक्रम के निर्णय, अनुसंधान और सामान्य व्यवस्था का उत्तरदायित्व यहाँ के प्रशासकों पर है। कुछ समय से एक ओर तो उद्योगों और व्यवसायों की सहायता से ग़ैर-सरकारी संस्थाएँ भी खुल गई हैं और दूसरी ओर विद्यार्थियों के भविष्य के कल्याण के लिए व्यवसायों के साथ उनके सहयोग की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इसके विशिष्ट उदाहरण अंगूर की शराब के उत्पादन एवं मदिरा संबंधी विश्वविद्यालय हैं।

विश्वविद्यालयों का शिक्षाक्रम तीन सोपानों में विभाजित है। दो साल के पहले सोपान के बाद डिप्लोमा, उसके एक साल बाद *लिसांस*(Licence) और उसके दो साल बाद *मेत्रीज़* (Maîtrise) मास्टर की उपाधि। मेत्रीज़ की उपाधि दूसरे सोपान पर पहुँचने पर मिलती है। तीसरे सोपान पर तीन से पाँच साल

तक अनुसधान के बाद " डॉक्टरेट" की उपाधि मिलती है।

प्राथमिक स्तर के अध्यापकों का प्रशिक्षण *'एकोल नौर्माल'*(Ecole Normale) में होता है पर माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की नियुक्ति सामान्यतया *'कापैस'*(CAPÈS) या *'अग्रेगास्यों'* (Agrégation) की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में रिक्त स्थानों की संख्या के अनुसार उच्चतम स्थान पाने से होती है। विद्यार्थी 'लिसांस' के एक साल बाद *कापैस* और *मैत्रीज़* के बाद *अग्रेगास्यों* की प्रतियोगिता में बैठ सकते हैं। केवल अत्यंत बुद्धिमान और परिश्रमी विद्यार्थी ही इन कठिन प्रतियोगिताओं में सफल होने का प्रयत्न करते हैं।

फ़्रांस में विद्यार्थी होना जीवन का सबसे अधिक रोचक अनुभव है। बचपन से ही प्रायः युवाजन समय के सदुपयोग और स्वतंत्रता का पाठ सीख चुके होते हैं। वे अपनी इच्छानुसार जीवन और भविष्य बना या बिगाड़ सकते हैं। समाज की ओर से उन्हें हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध है– कम कीमत के रेस्टोराँ में खाना, बस, रेल व हवाई जहाज़ में आधी कीमत में यात्रा और संग्रहालयों में प्रवेश, सिने-क्लब, संगीत और नाटक संघ व लोक कल्याण सेवा में भाग लेने की संभावना इत्यादि। कुछ विद्यार्थी अपनी मनोवृत्ति के अनुकूल प्रतियोगिताओं की तैयारी में इतने लगे रहते हैं कि उन्हें अन्य किसी काम के लिए समय ही नहीं होता। अधिकतर गंभीर व्यक्ति किताब के कीड़े हुए बिना अध्ययन, प्रतियोगिता और जीवन को सुखी बनाने में सामंजस्य स्थापित करके हर प्रकार की सुविधा से लाभ उठाते हैं। कुछ अठारह वर्ष की आयु में मताधिकार पाने के कारण राजनीतिक दलों का आश्रय लेते हैं। उच्छृंखल विद्यार्थी तो केवल अपना समय बरबाद ही करते हैं। विदेशी विद्यार्थियों को फ़्रांसीसी संस्थाओं में प्रवेश पाने के लिए "उपाधियों की तुल्यता" की आवश्यकता होती है। फ़्रांसीसी दूतावास इस विषय में उनकी सहायता करते हैं।

पश्चिम यूरोप और अमरीका की तरह फ़्रांस की एक विलक्षण संस्था है– अवकाशप्राप्त तथा वयोवृद्ध व्यक्तियों के लिए कई प्रकार के प्रवर विश्वविद्यालय। काम छोड़ने के बाद जो लोग समय का सदुपयोग करना चाहते

हैं वे इन विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी बन जाते हैं, किसी उपाधि के लिए नहीं बल्कि अपने व्यक्तिगत आनंद के लिए। इस प्रकार के कुछ विश्वविद्यालयों में जिल्दसाज़ी, फूल-पौधों का ज्ञान या पौटरी इत्यादि के काम सिखाए जाते हैं। कुछ में भिन्न देशों के धर्म, इतिहास, संस्कृति और कला इत्यादि पर व्याख्यानों का आयोजन होता है। इसी प्रकार प्रौढ़ शिक्षा के बहुत से संस्थान हैं जहाँ लोग काम करते हुए भी अपने जीवन और सामाजिक स्तर को ऊँचा करने के लिए शाम को या सप्ताहांत में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करते हैं।

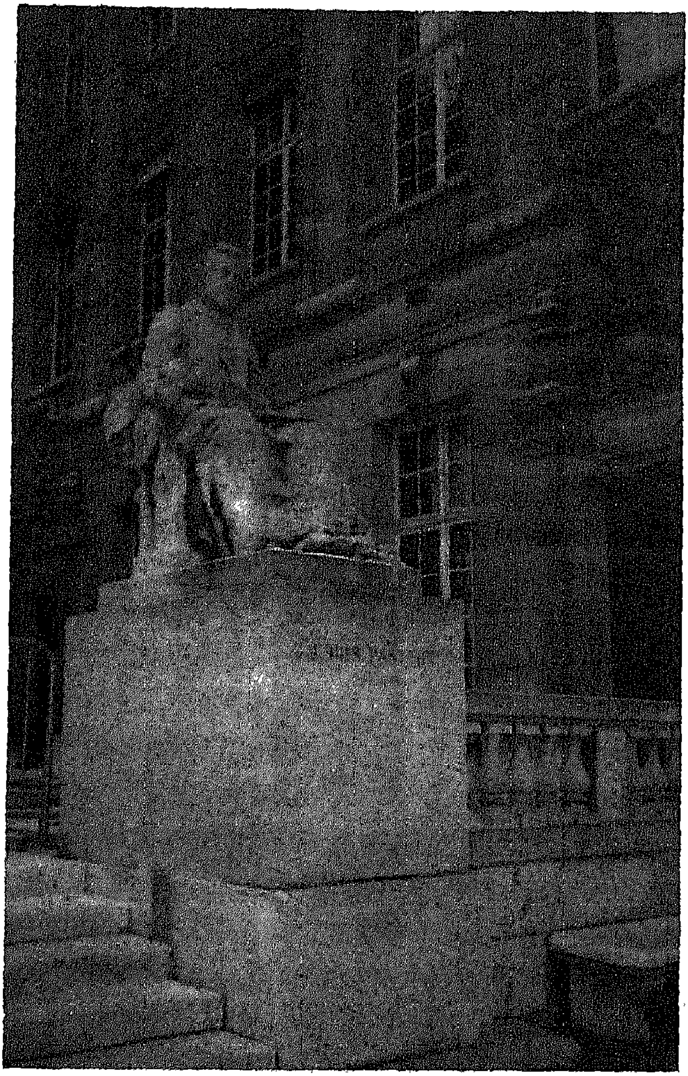
निःसदेह फ़्रांस की प्रगति का रहस्य उसकी शिक्षा पद्धति और उसमें वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावहारिक प्रशिक्षण की प्रधानता है। शिक्षा संस्थाओं के कार्यक्रमों, अध्यापकों की लगन और अनौपचारिक बाह्य वातावरण तथा संग्रहालयों की विविधता से युवाजन विज्ञान और तकनीकी को समझने और समाज में उनके प्रयोग की आवश्यकता के प्रति सचेत हो रहे हैं। ग्यारह से सत्रह वर्ष की'आयु के छात्रों के लिए गणित तथा भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव शास्त्र और चिकित्सा शास्त्र इत्यादि का कार्यक्रम उनको आधारभूत ज्ञान देता है। उद्योग, दूरसंचार, वायुयान यात्रा, पर्यटन व्यवसाय और व्यापार व्यवस्था इत्यादि के दैनिक जीवन के सभी क्षेत्रों में महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में कंप्यूटरों के उपयोग के सामान्य और विशिष्ट कार्यक्रमों का विकास हो रहा है। यहाँ वैज्ञानिक विषयों पर व्याख्यान मालाओं का आयोजन होता है। रेडियो और दूरदर्शन इन विषयों पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। मानव शरीर, स्वास्थ्य और चिकित्सा, मानव का इतिहास और ब्रह्मांड का रहस्य, अंतरिक्ष की खोज, आकाश, नक्षत्र और उपग्रह, नदियाँ और समुद्र, पर्वत और ज्वालामुखियाँ, जंगल और पशुओं का जीवन, दूषित पर्यावरण व ऊर्जा शक्ति के सुख और दुखदायक परिणाम इत्यादि कोई भी ऐसे विषय नहीं जिस पर साधारण व्यक्ति यदि चाहे तो जानकारी न पा सके। वैज्ञानिक ज्ञान आज के शिक्षित व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो रहा है। वैज्ञानिक, तकनीकी और औद्योगिक संस्कृति के निरंतर विकास के समक्ष मनुष्य तटस्थ नहीं रह पा रहा है। इस संस्कृति के

विकास के लिए वैज्ञानिक शिक्षा संबंधी व्यावहारिक कार्यक्रमों की योजनाओं के विषय में शासन, संस्थाएँ, शिक्षक, विशेषज्ञ और प्रचारक सभी अपना उत्तरदायित्व मानते हैं। प्रयत्न यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने संसार को समझे और अपनी स्थिति के अनुसार उसके भविष्य की रचना में भाग ले।

वास्तव में संस्कृति के वैज्ञानिक पुट की परंपरा फ्रांस में पुरानी है। सत्रहवीं शती के साहित्यकार और दार्शनिक '*देकार्त*'(Descartes) ने अपने '*दिस्कूर द ला मेथोद* '(Discours de la Méthode) अर्थात् 'विचार पद्धति पर प्रवचन' नामक ग्रंथ में निष्पक्ष विचारधारा की पद्धति को रेखांकित किया था। उसके अनुसार सत्य की खोज अवलोकन और अनुभव पर निर्भर है, किंवदंती पर नहीं। ज्ञान की प्रत्येक विशिष्ट समस्या का समाधान उसके विविध अंगों के विचारशील विश्लेषण से ही हो सकता है। अपने आलोचनापूर्ण विचारों को सुव्यवस्थित ढँग से सँजोने के बाद ही परिणामों का पुनर्विवेचन और आवश्यकतानुसार संशोधन करना चाहिए। अठारहवीं शती के '*दिदरो*' नामक साहित्यकार और विश्वकोश के संपादक ने अपने "विज्ञान, कला, साहित्य और व्यवसाय के तार्किक साहित्यकोश" नामक ग्रंथ में इन विविध विषयों के पारस्परिक संबंधों के आधार पर ज्ञान की व्यापकता सिद्ध की। इसीलिए फ्रांसीसियों की आरंभिक शिक्षा-दीक्षा ज्ञान की इस बहुमुखी कल्पना पर आश्रित है। शुरू से ही "सामान्य संस्कृति" संबंधी विषय इनके व्यक्तित्व का विकास करते हैं, विषयों का विशेषीकरण बाद में होता है।

आधुनिक कल्पना के अनुसार विज्ञान का श्रीगणेश यूरोप में सत्रहवीं शती में हुआ माना जाता है। इसमें फ्रांस का प्रधान स्थान था। यह अठारहवीं और उन्नीसवीं शती में और भी प्रतिष्ठित हो गया। विद्वानों की सर्वप्रथम शास्त्रीय पत्रिका फ्रांस में सत्रहवीं शती में प्रकाशित हुई। अठारहवीं शती के अंत में "शिल्प और व्यवसाय के शिक्षालय" और ''प्रकृति के इतिहास के संग्रहालय" की पैरिस में स्थापना हुई। शिक्षालय आज भी नवयुवकों के लिए विविध शिल्प के प्रशिक्षण का केंद्र हैं। संग्रहालय में तत्कालीन फ्रांसीसी यात्रियों, अन्वेषकों तथा मिशनरी

पादरियों द्वारा लाए गए देश-विदेशों के फूल-पौधे, जड़ी-बूटियाँ अथवा विचित्र खनिज पदार्थ एकत्र किए जाते थे। विदेशी जीव-जंतुओं का संग्रह होने पर इस संस्था का विस्तार हुआ। यहाँ पर तापग्रह और प्रयोगशालाएँ बन गईं। धीरे-धीरे यह वनस्पति विज्ञान, जीवविज्ञान और खनिज विज्ञान की प्रख्यात अनुसंधान संस्था हो गई है। यद्यपि *सौरबोन* नामक फ़्रांस के विश्वविद्यालय की स्थापना तेरहवीं शती में हो चुकी थी, फिर भी राज्यक्रांति के बाद से ही अनेक प्रतिभाशाली चिंतकों, विज्ञान की नई-नई शाखाओं और पद्धतियों के अविष्कारकों और खोजकर्ताओं का उदय हुआ। पर तब ये विद्वान विज्ञान के व्यावहारिक उपयोगों के प्रति उदासीन थे और कदाचित् इसीलिए वे विश्व में अधिक प्रसिद्ध न हुए। आदर्शवादी होने की वजह से वे आर्थिक लाभ के लिए भी अनुसंधान नहीं करते थे। पर उन्होंने विज्ञान के मंदिर के निर्माण में अथवा मानव-जाति के उपकार में कमी नहीं की। उदाहरणतः भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में ही हम भारतीय अंग्रेज़ी शब्द *'एम्पियर मीटर'* का प्रयोग करते हैं। बिजली के इस धारामापी यंत्र का नामकरण फ़्रांसीसी वैज्ञानिक *'आंपैर'*(Ampére) का स्मरण कराता है। रेडियम की खोजकर्ता भौतिक शास्त्री श्रीमती *'मारी क्यूरी'*(Marie Curie) सौरबोन विश्वविद्यालय की सर्वप्रथम प्राध्यापिका थीं। उन्हें व उनके पति *'पियैर क्यूरी'*(Pierre Curie) को तथा अणु संघटन की विशेषज्ञा उनकी पुत्री 'ईरेन'(Iréne) और उनके पति *'जोलियो क्यूरी'*(Joliot Curie) को नोबेल पुरस्कार मिले थे। फ़्रांस में *क्यूरी* परिवार के इन चार सदस्यों को नोबेल पुरस्कार मिलने की कथा सर्वविदित है। जीव वैज्ञानिक 'लुई पास्तर'(Louis Pasteur) ने चिकित्सा विज्ञान में क्रांति कर दी। अपने शोधकार्य से उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि शराब इत्यादि पेय पदार्थों में किण्वन सूक्ष्म कीटाणुओं द्वारा होता है। इस अनुसंधान के परिणामस्वरूप शराब, बीयर और रेशम के फ़्रांसीसी उद्योग की सुरक्षा हो सकी। अब तो पास्तरीकरण का प्रयोग सामान्य हो गया है। संसर्ग तथा संक्रमण से फैलने वाले कीटाणु जनित रोगों से मानव जाति को बचाने का काम भी उनके अथक परिश्रम का परिणाम है। उन्होंने ही पागल कुत्ते के



सौरबोन के आँगन में 'लुई पास्तर' की मूर्ति

काटने से होनेवाले रोग के टीके तैयार किए। पैरिस के "पास्तर संस्थान" में उनकी समाधि का निम्न अभिलेख जीवन में आदर्श की सत्ता और आवश्यकता को रेखांकित करता है– "वह मनुष्य धन्य है जिसमें भगवान विराजमान हैं, जिसमें सौंदर्य का आदर्श और उसको चरितार्थ करने की अभिलाषा है, जिसमें कला का आदर्श, मातृभूमि का आदर्श और धार्मिक मूल्यों का आदर्श विद्यमान है।" जीव रसायन के पथप्रदर्शक *क्लोद बरनार* (Claude Bernard)ने आनुवंशिकता और पर्यावरण के परस्पर संबंध का गूढ़ अध्ययन किया और चिकित्सा शास्त्रियों को शरीर और जीव संबंधी आंतरिक रचनातंत्र पर अनुसंधान करने की प्रेरणा दी।

पहले विश्वविद्यालय ही उच्चस्तरीय शिक्षा और अनुसंधान के केंद्र हुआ करते थे। पर बीसवीं शती और दूसरे महायुद्ध के बाद से विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान का विस्तार और विशेषीकरण हुआ। राष्ट्रीय, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति और देश की सुरक्षा में विज्ञान के संपूर्ण सहयोग की आवश्यकता थी। प्रकृति, मानव और समाज के पारस्परिक संबंधों के अध्ययन से विज्ञान की शाखाएँ-प्रशाखाएँ निकलीं। इनकी क्रियाओं-प्रक्रियाओं का अध्ययन होने लगा। आधारभूत अनुसंधान और विज्ञान के व्यावहारिक उपयोग के रास्ते ढूँढे गए। विश्वविद्यालयों में तो सदा से अनुसंधान के लिए रुपये की कमी थी और विज्ञान के हर क्षेत्र में रुपये की अधिकाधिक आवश्यकता होने लगी। राष्ट्र ने विश्वविद्यालयों के बाहर कृषि, स्वास्थ्य व चिकित्सा, दूरसंचार, अणु ऊर्जा तथा अंतरिक्ष की खोज इत्यादि विषयों के लिए अनुसंधान के स्वायत्त संस्थान खोले । ग़ैर-सरकारी धर्मार्थ संघ भी कैंसर, एड्स और कोढ़ जैसे रोगों के लिए अनुसंधान को प्रोत्साहन देने लगे। उद्योगों के पृथक अनुसंधान का विकास होने लगा।

इस प्रकार अनुसंधान एक प्रकार का नया पेशा हो गया। सभी विषयों में अनुसंधान के विकास, निदर्शन और समन्वयन के उद्देश्य से शासन ने 'वैज्ञानिक अनुसंधान के राष्ट्रीय केंद्र' की स्थापना की। यहाँ विज्ञान का व्यापक अर्थ लेकर

मानव विज्ञान, समाज विज्ञान और विज्ञान तथा तकनीकी के हजार से अधिक खोजकर्ता काम करते हैं। यह केंद्र स्थायी रूप से वैज्ञानिक परिस्थिति का विश्लेषण, प्रयोगशालाओं की स्थापना और संपोषण, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विचार-विनिमय के लिए सम्मेलनों और गोष्ठियों का आयोजन और वैज्ञानिक ग्रंथों का प्रकाशन करता है। आवश्यकतानुसार यह विद्वानों को आर्थिक सहायता भी देता है। इस केंद्र ने स्वदेशी वैज्ञानिक संस्थाओं, विद्वानों और उद्योगों के बीच तथा पचास से अधिक विदेशी संस्थानों से परस्पर सहयोग के समझौते किए हैं।

विज्ञान और तकनीक की अनुसंधान और आविष्कार संस्थाएँ अधिकतर पैरिस में स्थित हैं। पर लगभग पच्चीस साल हुए, फ्रांसीसी शासन ने विकेंद्रीकरण की नीति के अनुसार चालीस नगरों में '*तेक्नोपोल*'(Technopole) अर्थात् 'तकनीकी सहयोग के केंद्र' खोलने की योजना बनाई थी। आज बीस *तेक्नोपोल* काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुसंधान केंद्र, प्रयोगशालाएँ तथा प्रमुख उद्योग इनमें भाग लेते हैं। प्रत्येक *तेक्नोपोल* भोज्य पदार्थ, स्वास्थ्य, दूर संचार इत्यादि कोई भी विषय चुनता है और सहयोगी संस्थाओं के वैज्ञानिक, तकनीकी और आर्थिक संस्थानों की सहायता से चुने हुए विषय में अनुसंधान और उसके परिणामों के व्यावहारिक उपयोग ढूँढता है। प्रत्येक *तेक्नोपोल* के वैज्ञानिक, तकनीकी और कंप्यूटर सूचना सहायक – तीन खंड होते हैं।

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सामान्य जनता की रुचि, उत्सुकता और जिज्ञासा को प्रोत्साहन देने के पैरिस और उसके बाहर कई स्थान हैं। पैरिस के "*पाले द ला देकुवैर्त* "(Palais de la Déconverte) अर्थात् "खोज और आविष्कार भवन" में ब्रह्मांड की रचना का वर्णन है। नक्षत्रशालाओं में प्रत्येक नक्षत्र का पृथक कक्ष है। निदर्शन, प्रयोग, रेखालेख और व्याख्यान के माध्यम से और वृत्तचित्रों की सहायता से विविध आविष्कारों के विकास और सौर मंडल के रहस्यों को यहाँ समझाया जाता है। पैरिस के उपनगर '*विलैत*'(Villette) में विज्ञान और उद्योग का पूरा प्रदर्शन क्षेत्र है। यहाँ विज्ञान के इतिहास और मानव

जीवन पर उसके प्रभाव संबंधी बहुत-से यंत्र-तंत्रों की स्थायी प्रदर्शनी है। कई कक्षों में भू-मंडल व अंतरिक्ष के स्वरूप तथा तकनीकी और प्रसारण की तथा विविध उपग्रहों और इंद्रधनुष के विकास की कथा बताई गई है। नक्षत्रशाला में नवग्रहों, धूमकेतु, आकाशगंगा, सप्तर्षि मंडल और सौर सिद्धांत को समझाया गया है। यहाँ के ईज़ादघर *'इन्वेंटोरियम'* (Inventorium) में तीन से छह और छह से दस-बारह साल के बच्चों को वैज्ञानिक ईजादों को समझाने के लिए दो कक्ष हैं। *'एक्स्प्लोरा'* (Explora) की स्थायी प्रदर्शनी में चार प्रधान विषयों को रेखांकित किया गया है– नक्षत्र, पृथ्वी और ब्रह्मांड, मानव और पर्यावरण, प्रकृति और पुरुष तथा भाषा और संचार। पर यहाँ का सबसे अनोखा स्थान है *'जेओद'*(Géode)। यह अर्धगोलाकार सिनेमामंडप है। इसके चित्रपट पर प्रेक्षक के चारों ओर होने वाली घटना का शाब्दिक और दार्शनिक रूप प्रस्तुत किया जाता है। संचार-संग्रहालय में श्रव्य-प्रेक्ष्य सामग्री एकत्र है। छोटे और बड़े सभी इसके सदस्य बनने पर यहाँ से सामग्री उधार ले सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए विविध प्रदर्शनियों का आयोजन भी होता है।

पैरिस से लगभग छह सौ किलोमीटर पश्चिम की दिशा में *ब्रेस्त* नामक पत्तन में *ओसेयानोपोलिस* (Océanopolis) अर्थात् 'समुद्रीय नगर' भ्रमण और ज्ञान का केंद्र है। समुद्रतट पर स्थित बड़े झींगे के आकार की शीशे की पारदर्शी इस सफ़ेद इमारत में समुद्रीय संग्रहालय है। यहाँ विविध और विचित्र जीवित जलचरों की स्थायी प्रदर्शनी है। साथ ही नौ-परिवहन, समुद्र में सुरक्षा के साधन, अंतस्सागरीय जीवन और समुद्रीय शैवाल के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान का विवरण भी दिया गया है। सभाभवन में वीडियो कैसेट का अविरत प्रदर्शन और व्याख्यानों का आयोजन होता है।

पाश्चात्य चित्रकला पर विचार करते ही फ़्रांस की ओर ध्यान जाता है। पिछले डेढ़-दो सौ साल से पैरिस चित्रकला का केंद्र बन गया है। कहते हैं कि आज पैरिस में लगभग सत्तर हज़ार चित्रकार चित्रकला की सेवा में लगे हैं। वास्तव में कला के विश्वव्यापी दृष्टिकोण और कलाविशेषज्ञों तथा आलोचकों

की संख्या के कारण फ़्रांस में अपनी प्रतिभा की मान्यता पाना सभी चित्रकारों का लक्ष्य बन गया है। फ़्रांसीसियों के अतिरिक्त विदेशों के, जैसे स्पेन के पिकासो, हालैंड के वान गौग, पूर्वी यूरोप के '*शगाल*'(Chagall) और '*कांदिंस्की*'(Kandinsky) जैसे चित्रकारों ने इस देश में ही अपनी कला का श्रीगणेश किया और यहीं से उनकी ख्याति देश-देशांतर में फैली थी। आज के प्रमुख भारतीय चित्रकारों ने फ़्रांस में रहकर पाश्चात्य चित्रकला और मूर्तिकला का अध्ययन किया है। कुछ तो फ़्रांस में रहकर यहाँ के विभिन्न कलाभवनों में अपनी प्रदर्शनियाँ करते हैं और कुछ यहाँ कई साल रहने के बाद भारत लौटकर अपनी कला का परिपाक कर रहे हैं।

फ़्रांसीसी चित्रकला का आरंभ मध्ययुग में हुआ। हस्तलिपियों के सूक्ष्मचित्र, कैथीड्रलों के रंग-बिरंगे शीशे से सजे वातायन और अन्य प्रमाण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। रोमन और ग्रीक सभ्यता के प्रभाव ने और इटली के मूर्तिकारों और कलाकारों ने सत्रहवीं शती में फ़्रांस के चित्रकारों को रंग-सज्जा की सीख दी। तब से हर प्रदेश में विशिष्ट शैली का विकास हुआ। अपनी प्रतिभा और कल्पना के अनुकूल किसी ने ग्रामीण, किसी ने गृहस्थ और किसी ने धार्मिक जीवन की घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया। अन्य कलाकारों ने अपने हितैषियों की छवियाँ बनाकर उनके अहम् को तुष्ट किया और अपना स्वार्थ सिद्ध किया। इस शती के *निकोला पूसैं* (Nicolas Poussin) ने बाइबल की कथा के आधार पर सर्वप्रसिद्ध चित्र "प्रलय" बनाया और प्राचीन मूर्तियों के आधार पर मानवीय चित्रों के फलक बनाए। इस शती में '*शार्ल लब्रैं*'(Charles Lebrun) राजकीय चित्रकार नियुक्त हुआ। उसने *लूव्र* राजमहल की *"अपोलो गैलरी"* को और *वर्साई* के महल की "शीशे की गैलरी" की भीतरी छत को अपने चित्रों से सजाया। चित्र और मूर्तिकला की राजकीय अकादेमी की स्थापना पर वह इसका प्रधान नियुक्त हुआ। उसने फ़्रांस के चित्रकारों, वास्तुकलाविदों और मूर्तिकारों का निर्देशन किया। इस समय से ही राज और कला का संबंध घनिष्ठ हो गया। तब से ही फ़्रांस ने कला के क्षेत्र में इटली का स्थान ले लिया। सत्रहवीं शती के अंत

और अठारहवीं शती के आरंभ में राजतंत्रवादी विनोद और उल्लास के वातावरण में चित्रकार प्राकृतिक दृश्यों के बीच कुलीनवर्ग के लोगों और मनोहर वाटिकाओं में विचरती सुसज्जित सुंदरियों का चित्रण करते थे, पर राज्यक्रांति के बाद उनका विरोध हुआ। नैपोलियन के समय से फिर राज और कला के संबध को स्फूर्ति मिली। प्रसिद्ध चित्रकार *दाविद* (David) राजकीय कलाकार नियुक्त हुआ। प्राचीन ग्रीस की मूर्तियों से प्रेरित होकर उसने अपने संरक्षक नैपोलियन के जीवन और संग्राम पर आधारित अनेक बड़े-बड़े चित्र बनाए। उसके अधिकतर चित्र कथाप्रधान हैं।

अठारहवीं शती के अंत में *'दलाक्रुआ'*(Delacroix) और *'कोरो'*(Corot) नामक स्वछंदतावाद के दो रोमांटिक कलाकारों का जन्म हुआ। अंग्रेज़ी चित्रकला के प्रभाव से स्वच्छंद प्रकृतिचित्रण और उसमें रंग का आकर्षक उपयोग इस शैली की विलक्षणता है। *कोरो* को तो प्रकृति का उपासक कहा जा सकता है। उसके वंसत ऋतु, उषाकाल और गोधूलि वेला के चित्र बहुत ही सुंदर हैं। इस शैली के *'मिय्ये'* (Millet) ने देहाती दृश्यों में यथार्थता की खोज की और *'कूर्बे'*(Courbet) ने *कलाकार को 'प्रकृतिवाद का प्रचारक '* ठहराया। स्पष्ट है कि इन सब चित्रकारों के चित्र वास्तविक स्थितियों में बनने से ही इतने सजीव हो पाए हैं।

उन्नीसवीं शती में 'प्रभाववाद' *(इंप्रेशनिज़्म)* के उदय से फ़्रांसीसी कला में एक प्रकार की क्रांति आ गई। इस शैली के मुख्य कलाकारों ने पैरिस को हिला दिया। उनके विषय, रंग और तूलिका के उपयोग की व्यक्तिगत विशेषता तो है ही, पर उनकी शैली के दो सिद्धांत सबमें एक समान हैं– एक यह कि आलोक और छाया का खेल मानव चित्र अथवा प्रकृति के दृश्यों में बहुत अंतर ला सकता है और दूसरा, कलाकार को विषय का चित्रण ठीक वैसा ही करना चाहिए जैसा कि उसके चक्षु उसे देखें– उसमें अपनी बुद्धि अथवा स्मरण से कोई भी परिवर्तन करना अभीष्ट नहीं। *'क्षण की यथार्थता का चित्रण'* ही इस शैली का मूल सिद्धांत है। *'माने '*(Manet)के प्रसिद्ध चित्र *'जार्दें'*(Jardin) अर्थात् "बग़ीचा" में आलोक

ही उसका सर्वप्रमुख व्यक्तित्व दिखाता है। 'दगा'(Degas)ने घुड़दौड़ के घोड़ों और *बाले* नृत्य की नर्तकियों के मर्मस्पर्शी हावभावों का प्रदर्शन किया है। *माने* के विविध रंगों के सामंजस्य से हृदयतंत्रियाँ बज उठती हैं। वास्तव में *माने* के 'एंप्रेस्यों'(Impression) अर्थात् "सूर्योदय का प्रत्यक्ष बोध" नामक एक चित्र के शीर्षक से ही प्रभाववाद की शैली का नामकरण हुआ। *'ओग्युस्त रनुआर '* (Auguste Renoir) ने तत्कालीन पैरिस के दैनिक जीवन और सुंदरियों की स्वाभाविक मुद्राओं पर आलोक और छाया का खेल दिखाया है। इन चारों कलाकारों के समसामयिक 'सेज़ान'(Cézanne) ने पहले-पहल प्रभाववाद के रंगों का आश्रय लिया, पर धीरे-धीरे उसने चित्र की रूपरेखा को आर्थिक महत्व देना शुरू कर दिया जिससे कला में घनवाद(*क्यूबिज़्म)* का आविर्भाव हुआ। इस समय के अन्य चित्रकारों में से *गोगें* (Gauguin) ने *'ताहिती'* के विदेशी दृश्यों/और विशेषकर वहाँ की फूलों से सुसज्जित नारियों के चित्र बनाए और *'तुलूज़ लोत्रैक'* (Toulouse Lautrec) ने पैरिस की रात्रि रंगशालाओं, विशेषकर *मूलें* रूज़ की नर्तकियों का सुंदर चित्रण किया है।

उन्नीसवीं शती के अंत से फ़्रांस में विविध शैलियों का विकास हुआ। 'पाशविकतावाद'(Fauvisme) की कथा विचित्र है। बीसवीं शती के आरंभ में पैरिस की शरद ऋतु की कलाप्रदर्शनी के कई चित्रों में कलाकारों ने उग्र रंगों के मेल से अपने भावों और अनुभवों की अभिव्यक्ति की। उनको देखकर एक समालोचक को ऐसा लगा जैसे इन चित्रों में विषय को जंगली जानवरों की तरह पिंजरे में बंद करके रख दिया गया हो और भावाभिव्यक्ति को कुंठित कर दिया गया हो। तब से ही *'फोविज़्म'* शब्द का कला में प्रयोग होने लगा। इस समय का सर्वप्रसिद्ध चित्रकार *'मातीस'*(Matisse) है। वह विचारशील और व्यवस्थित चित्रकार था। इसके बाद एक नई शैली 'घनवाद'(*क्यूबिज़्म)* का आविर्भाव हुआ। घनवाद के अनुसार कलाकार मानव शरीर के किसी भी अंग को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखकर एक ही चित्र में उन सब रूपों का परस्पर आरोपण कर देता है। *पिकासो* ने इस शैली को सबसे पहले अपनाकर ख्याति दी। साथ ही

अपने दीर्घ जीवन में उसने दक्षिण फ़्रांस में रहकर चित्रकला, मूर्तिकला, मृत्तिका, शिल्प और तक्षण के विविध क्षेत्रों में भी प्रसिद्ध रचनाएँ बनाईं। इसका संग्रहालय पैरिस में है।

बीसवीं शती की आधुनिक चित्रकला "अमूर्त" है। कोई भी कलाकार प्रकृति की प्रतिकृति का चित्रण नहीं चाहता। यह काम वह फोटोग्राफ़र पर छोड़ना चाहता है। प्रायः वह अपनी अंतरात्मा की खोज में पूर्ण स्वतंत्रता से तूलिका और रंग का उपयोग करता है। उसको रूढ़िबद्ध सौंदर्य की कल्पना, प्राचीन शैली का अनुकरण और चित्रों की रूपरेखा की सुव्यवस्था की आवश्यकता नहीं। वह अपने संस्कारों और मनोवृत्ति के अनुसार चित्र द्वारा अपने व्यक्तित्व और अपनी प्रतिभा की अभिव्यक्ति करना चाहता है। वह अपनी कृतियों में रूप, रंग और लय का सामंजस्य स्थापित करना चाहता है और आशा करता है कि इस प्रकार वह दर्शक को भी आनंद का अनुभव करा सकता है। आज के चित्रकला जगत में कलाकार के व्यक्तित्व का राज है।

9. फ़्रांसीसी साहित्य

फ़्रांसीसी साहित्य की समृद्धि का रोचक प्रमाण हमें इस शती के साहित्यकार *वैरकॉर* (Vercors : 1902-1992) की *सिलांस द ला मैर* (Silence de la Mer) अर्थात् "समुद्र में मौन" नामक लघुकथा में मिलता है। दूसरे महायुद्ध के समय लेखक के घर में एक जर्मन सैनिक ठहरा था और उन दोनों में विविध विषयों पर बातचीत होती थी। इसका विवरण इस लघुकथा का विषय है। इसका उचित संदर्भ उद्धृत है :

"एक रोज़ जब जर्मन सिपाही मेरी बैठक में किताबों की अलमारी के सामने खड़ा था तो वह अकस्मात् आश्चर्यपूर्ण लहजे में बोल उठा–" न जाने क्यों, यह कमरा मुझे बहुत पसंद है।"... कुछ सोचते हुए उसने कहा– "इस कमरे की अपनी आत्मा है। इस सारे मकान की अपनी आत्मा है। " वह संग्रहालय की पुस्तकों की कतार के सामने खडा था और उँगलियों से पुस्तकों की ज़िल्दों को हल्के से छूता जा रहा था... " *बालज़ाक*(Balzac), *बारैस* (Barrès), *बोदलैर* (Baudelaire), *बोमार्शे* (Beaumarchais), *बुआलो* (Boileau), *ब्यूफ़ों* (Buffon), *शातोब्रियाँ* (Chateaubriand), *कौर्नेई* (Corneille), *देकार्त* (Descartes), *फ़ेनलों* (Fènelon), *फ़्लोबैर* (Flaubert), ला *फ़ौंतेन* (La Fontaine), *अनातोल फ़्रांस* (Anatole France), *गोतिए* (Gauthier), *ह्यूगो* (Hugo)–क्या बात है! धीरे से हँसते हुए और सिर हिलाते हुए उसने कहा– "और अभी तो मैं केवल

"एच" अक्षर तक ही पहुँचा हूँ ... ।* " न *मौलियैर* (Mollère), न *राबले* (Rabelais), न *रासीन* (Racine), न पास्कल (Pascal), न स्तांडहाल (Stendhal),न *वौलतैर* (Voltaire), न *मौंतेञ* (Montaigne)... और अन्य कई नामों तक तो पहुँचा भी नहीं।" वह किताबों की कतार के सामने बराबर बढ़ता गया और मेरी राय में जब वह किसी ऐसे नाम को पढ़ता जिसका उसे ध्यान न था तो कठिनाई से सुने जाने वाले स्वर में वह केवल "हा" स्वर उच्चारण करता। एक बार फ़िर उसने कहा–" अंग्रेज़ों के लिए तुरंत *शैक्सपियैर*, इटली निवासियों के लिए *"दानते"*, स्पेन के *संर्वातेस* और हमारे लिए *गोथे*– इनके बाद दूसरे नामों को खोजना पड़ता है। पर फ़्रांस के विषय में एकदम किसका ध्यान आता है, *मौलियैर* का ? *रासीन* का ? ह्यूगो का ? *वौलतैर* का ? *राब्ले* का ? और किसका ? ये सारे नाम साथ आ जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे थियेटर के प्रवेशद्वार पर भीड़ में पता नहीं, किसको पहले प्रवेश दिया जाए.... ।"

यह सच है कि कवियों, नाटककारों, उपन्यास लेखकों, आलोचकों, विचारकों– एक शब्द में कहना चाहिए, फ़्रांसीसी साहित्यकारों की कृतियों की एक नक्षत्रमाला-सी यहाँ के साहित्य गगन को लगभग हज़ार साल से ज्योतिर्मय करती आई है। अंग्रेज़ी साहित्य मानव और प्रकृति को, जर्मन साहित्य मानव और शाश्वत को और रूसी साहित्य मानव की मानव पर विजय को प्राधान्य देता है, पर फ़्रांसीसी साहित्य स्वतः मानव को ही केंद्र मानता है। मानव जीवन के सामाजिक पर्यावरण और आध्यात्मिक पक्षों को निर्बाध जानना, उसके हर रूप और परिवर्तन को समझना और मानव चेतना की गहराई में पहुँचना फ़्रांसीसी साहित्य का लक्ष्य रहा है। विचार की अगाधता और अभिव्यक्ति की पराकाष्ठा इस साहित्य की विलक्षणता रही है।

नवीं शती से सोलहवीं शती के आरंभ तक फ़्रांसीसी साहित्य का मध्ययुग था। बारहवीं शती से ही इस साहित्य में मानववाद के सारे अंकुर मिलने लगते

* इन फ़्रांसीसी शब्दों की नामसूची रोमन वर्णक्रमानुसार दी गई है।

हैं। पंद्रहवीं शती के अंत में फ़्रांसीसी संस्कृति संकट में थी। श्रद्धा कम हो गई थी। धर्म केवल कर्मकांड तक सीमित रह गया था। सोलहवीं शती में इटली के *'रिनेसांस '* आंदोलन के प्रभाव से फ़्रांस में भी कला और साहित्य का पुनर्जागरण हुआ। कुलीन वर्ग ने साहित्यकारों को संरक्षण दिया। याजक वर्ग ने धर्म को नया मोड़ दिया और मध्यवर्ग साहित्य में अधिक रुचि लेने लगा। इस शती का सबसे प्रसिद्ध लेखक *'मौंतेञ'*(Montaigne) है। उसके 'निबंधों' में सहनशीलता और निर्भीकता की स्तुति है। उसके अनुसार असहनशीलता ही धार्मिक कट्टरता और नृशंसता का स्रोत है। सामान्यतया सदाचार की नीति इस ग्रंथ की 'सुमरनी माला' समझी जाती है।

धार्मिक, ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों से प्रेरित सत्रहवीं शती के साहित्य ने मानव मस्तिष्क की सभी उड़ानों को समृद्धि प्रदान की । ईसाई धर्मपरक लेखकों, दार्शनिकों और विविध साहित्यकारों ने सदाचार की इस नीति को और मानव को अधिक अग्रसर किया। व्यंग्यकारों ने मानव प्रवृत्ति के विविध पक्षों को अपने ग्रंथों का विषय बनाया। *'सम्राट लुई चतुर्दश'* के राज्य में साहित्य और कलाओं को प्रोत्साहन मिला। उसके कारण ही सत्रहवीं शती को 'सुरुचि का युग' माना जाता है– इस समय सामाजिक आचार-व्यवहार के विशिष्ट नियम बने, आदरभाव और शिष्टाचार सौजन्य के अभिन्न अंग माने जाने लगे। भाषा में औचित्य, वार्तालाप में विनम्रता, वेशभूषा की सज्जा और व्यक्ति के बाह्य उपकरणों का उतना ही महत्व था जितना उसकी शिक्षा और कुल का। भाषा और साहित्य की उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए ही 1635 ई. में 'फ़्रांसीसी अकादेमी' की स्थापना हुई।

सत्रहवीं शती के लेखकों ने प्रधानतया दो विचारधाराओं का विकास किया। एक ओर *रासीन* जैसे नाटककार और *पास्कल* जैसे दार्शनिक की और दूसरी ओर कॉर्नेई जैसे नाटककार और *देकार्त* जैसे दार्शनिक की। *रासीन* भावुक था और प्रेम को सर्वोच्च मानता था। पास्कल प्रेम के विषय में कहता था कि –"मानव हृदय का अपना ही तर्क होता है और अन्य तर्क इससे सर्वथा अनभिज्ञ हैं।"

पर *कौर्नेई* के अनुसार "भावुकता से कर्तव्य ऊँचा है।" दुखांत नाटककारों में यह सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। *'देकार्त'* एक प्रकार का "व्यावहारिक" दार्शनिक था। वह तर्क को सर्वोच्च मानता था। उसके अनुसार विश्व एक महान ग्रंथ है। इसके क्षुद्रतम तत्वों का अध्ययन और विश्लेषण आवश्यक है। अविश्वास तथा संदेह उसके दर्शन का मुख्य लक्षण माना जाता है।

इस शती के दो प्रसिद्ध साहित्यकार *ला फ़ौंतेन* और *मौलियैर* हैं। वनपाल पिता के साथ जंगलों में घूमने और बचपन से ही पशु-पक्षियों के जीवन की जिज्ञासा के कारण *ला फ़ौंतेन* ने लैटिन साहित्य के ज्ञान और अपनी प्रतिभा का ऐसी नीतिकथाएँ लिखने में प्रयोग किया जिनके प्रधान नायक और अभिनेता पशु-पक्षी हैं। उसकी कथाओं का अप्रत्यक्ष आधार भारतीय नीतिकथा 'पंचतत्र' है। यह साहित्य अरबी अनुवादों और अन्य रूपांतरों के द्वारा ग्यारहवीं शती में यूरोप में पहुँचा। सन् 1600 से पहले उसके लैटिन और ग्रीक रूपांतर प्रचलित थे। *ला फ़ौंतेन* ने इस साहित्य को नाटकीय रूप दे दिया। उपहास और व्यंग्यात्मक ढँग से उसने फ़्रांसीसी समाज के विभिन्न स्तरों और व्यक्तियों का मनोहर चित्रण किया। बहुत-से युवाजन इन नीतिकथाओं को कंठस्थ भी करते हैं।

नाटकों और प्रहसनों के प्रेमी *मौलियैर* ने इक्कीस वर्ष की आयु में अपने *'बूर्ज्वा'* पिता का घर छोड़कर अपने नाटक-भवन की नींव डाली पर दो साल के बाद ही उसका थियेटर घाटे में आ गया जिससे उसे पैरिस छोड़ना पड़ा। वह *ल्यों* नामक नगर में इटली के नाटककारों के संपर्क में आया जिससे प्रहसनों के प्रति उसकी रुचि और भी प्रखर हो गई। बहुत-से लोगों के सामाजिक शिष्टाचार, मनोवृत्ति और विविधता तथा आडंबर का उसे प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। परिणामस्वरूप उसने बहुत-से एकांकी और बाद में प्रहसन लिखे जिनमें प्रांतों के *'बूर्ज्वा'* लोगों और उनकी बीवियों और कंजूसी का तथा दंभी व्यक्तियों का चरित्र-चित्रण किया। छत्तीस वर्ष की आयु में उसने सम्राट *लुई चतुर्दश* के समक्ष अपना अभिनय दिखाया। सम्राट इससे इतना प्रसन्न हुआ कि उसने *मौलियैर*

को राजदरबारी अभिनेता नियुक्त कर दिया। *मौलियैर* के प्रमुख नाटक *लवार* (L'avare) अर्थात् *'कंजूस'*, *'ल तारत्युफ़'* (Le Tartuffe) अर्थात्'(ढोंगी)', *ल बूर्ज्वा जांतियौम* (Le Bourgeois Gentilhomme) अर्थात् 'बूर्ज्वा सज्जन' और *'ल मलाद इमाजिनैर'* (Le malade imaginaire) अर्थात् *'ख़याली बीमार'* हैं। वास्तव में *मौलियैर लेखक*, अभिनेता और दिग्दर्शक था। 'ख़याली बीमार' का सजीव अभिनय करते समय इक्यावन वर्ष की आयु में स्टेज पर ही उसका देहावसान हो गया। उसके नाटकों और प्रहसनों की कल्पना, भावुकता और चरित्र-चित्रण इतने उच्चकोटि के हैं कि आज भी *मौलियैर* द्वारा स्थापित थियेटर में, जो अब *"कॉमेदी फ़्रांसैज़"* के नाम से प्रसिद्ध है, उनका अभिनय होता है।

साहित्य के इतिहास में अठारहवीं शती को दार्शनिकों की शती माना जाता है। साहित्य द्वारा इतिहास, विज्ञान, कानून और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन इस शती की मौलिकता का कारण है। फ़्रांसीसी लेखक दर्शन का अधिक व्यापक ढँग से प्रतिपादन करते थे। विश्व और मानव की उत्पत्ति, प्रकृति और भविष्य तक ही अपने मनन और विचारों को सीमित न रखकर वे मानव की राजनीतिक , सामाजिक, आध्यात्मिक और धार्मिक परिस्थितियों के अनुसार उसका चित्रण करते थे। पूर्वाग्रहों के शिकार न होकर ये निराधार कुछ भी स्वीकार करने को तैयार न थे और तर्क और अनुभव को ज्ञान का आधार मानते थे। परिणामतः फ़्रांसीसी जीवन और मान्यताओं में तथा समाज की विचारशैली में बहुत परिवर्तन हुआ। इसी समय राजदरबार और सामाजिक 'बैठकें' साहित्यकारों की प्रसिद्धि के निर्णायक हो गए। इन 'बैठकों' में साहित्य-प्रेमी और सुख-संपन्न महिलाएँ साहित्यकारों को आश्रय और प्रोत्साहन देने लगीं। यूरोपीय देशों में फ़्रांसीसी लेखकों की यात्राओं और फ़्रांसीसी भाषा के प्रचार और प्रयोग से यह शती "यूरोपीय बंधुत्व" की शती भी कही जाती है।

इस शती के लेखक *मौंतेस्क्यू* (Montesquieu) ने समाज की समस्याओं और राजनीति पर अपने ग्रंथों में बहुत कुछ लिखा है। उसके अनुसार सुख की विधिवत् खोज ही जीना है। तर्क से मनुष्य अपनी स्थिति को सुधार सकता है,

तर्क ही पूर्वधारणाओं से उसकी मुक्ति करा सकता है। वह सार्थक कर्म और व्यावहारिक विवेक का पक्षपाती था। *वाल्तैर* ने भी अपने ग्रंथों में मानव बुद्धि की विजय का गान गाया है। उसका परिप्रेक्ष्य सार्वभौमिक है। वह भी विवेक और सहनशीलता को प्राधान्य देता है। उसके *"लुई चतुर्दश की शती"* और "लोकाचार पर निबंध" नामक ग्रंथों में तत्कालीन समाज, संस्थाओं और कला का पूरा विवरण मिलता है। उसका उपदेश था कि इधर-उधर भटकने अथवा निरर्थक विचारों में खोए रहने की जगह व्यक्ति को अपनी-अपनी अवस्था और सामर्थ्य के अनुसार अपने कर्तव्य और लोक-सेवा में रत रहना चाहिए।

अंग्रेज़ी *चैंबर्स प्रकाशन भवन* के विज्ञान और कला के विश्वकोश से प्रेरित होकर जब फ्रांसीसी विश्वसाहित्य कोश की योजना बनी तो उसका संपूर्ण कार्यभार *दिदरो* (Diderot) पर पड़ा। इस दार्शनिक लेखक ने बीस साल तक जुटे रहने के बाद इस कार्य को संपन्न किया। स्वतंत्रता प्रेमी, प्रखर बुद्धिमान और विचारों के प्रेरक *दिदरो* ने प्रकाशन व्यवस्था के साथ-साथ स्वयं दर्शन, इतिहास, विज्ञान और काव्यशास्त्र संबंधी निबंध भी लिखे। क्रियात्मक कल्पना, अंधविश्वासों का विरोध, यथार्थ में आस्था और राजनीतिक और मानसिक स्वतंत्रता इस दार्शनिक के सिद्धांत थे। वह मानता था कि विश्व के विशाल कुटुंब के सुख की खोज ही सर्वश्रेष्ठ सात्विक नीति है। दिदरो के साहित्य विश्वकोश ने आधुनिक भौतिकवाद की घोषणा की और वैज्ञानिक अनुसंधान का पथ-प्रदर्शन किया। नए विचारों के स्रोत खोलकर उसने जीवन का एक नया आदर्श स्थापित किया।

जाँ जाक रूसो (Jean Jacques Rousseau) फ्रांस की विचारधारा और फ्रांसीसी रोमांटिक साहित्य का जन्मदाता माना जाता है। आरंभ के अनियमित जीवन और यूरोपीय नगरों के परिभ्रमण के बाद जब वह पैरिस में आ बसा तो उसने अपने प्रसिद्ध 'मनुष्यों में असमानता के कारण' नामक निबंध की रचना की। अपने उपन्यास में उसने पैरिस के समाज का विवरण दिया और अपने दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्त किया। साथ ही प्रकृति का चित्रण उसने ऐसे

मौलिक ढँग से किया कि इसी समय से *'रोमांटिक शैली'* का श्रीगणेश हो गया। सामाजिक जीवन की आलोचना से वह इस परिणाम पर पहुँचा कि सभ्यता का विकास मानव की विशुद्ध प्राकृतिक प्रवृत्ति के प्रस्फुटन के लिए हानिकारक है। उसके अनुसार संपत्ति जुटाना मानवीय असमानताओं का स्रोत है। अपने सुविख्यात ग्रंथ *'एमिल'* में उसने दिखाया है कि स्वभाव से मनुष्य भला होता है, व सामाजिक अन्याय को मिटाने और समाज को सुधारने का एकमात्र साधन 'शिक्षा' है। अपने 'सामाजिक अनुबंध' नामक ग्रंथ में 'राष्ट्र' पर अपने विचार प्रकट करते हुए उसने राजतंत्रवाद का विरोध किया और घोषणा की कि मनुष्य को अपनी नैतिक और सामाजिक स्वतंत्रता केवल लोककल्याण के लिए ही बलिदान करनी चाहिए। अप्रत्यक्ष रूप से उसने 'समाजवाद' का पक्ष लिया। आश्चर्य नहीं कि उसकी कृतियों ने फ़्रांसीसी राज्यक्रांति को प्रोत्साहन दिया।

फ़्रांसीसी राज्यक्रांति, नैपोलियन के अभियान और छापेखाने और समाचार पत्रों के आविष्कार से उन्नीसवीं शती के जीवन में बहुत परिर्वतन हुआ। जनता अपने अधिकारों से लाभ उठाना चाहती थी। मानव अधिकारों की घोषणा के पश्चात् और यूरोपीय बंधुत्व का विकास होने से साहित्यकार अंतः सुखाय साहित्य की रचना करने लगे। साहित्य प्रधानतया व्यक्तिगत होता जा रहा था। इस शती में प्रकृति के प्रति प्रेम, धर्म के प्रति रुझान और सामाजिक और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई। बाह्य जगत के आत्मीय आंतरिक अनुभव से रोमांटिक साहित्य के साथ-साथ मानव स्वभाव और प्रकृति के यथार्थ चित्रण में वृद्धि हुई। जब भाषा की शैली पर आवश्यकता से अधिक बल देने से भाव और विचार कुंठित होने लगे तो स्वतंत्रता प्रेमी लेखकों ने 'प्रतीकवाद' की शरण ली। संगीत और शब्द को भाव और उसकी अभिव्यक्ति का प्रतीक माना। इस शती का साहित्य इतना विविध और समृद्ध है कि सभी शाखाओं में विश्वविख्यात लेखक मिलते हैं– कवियों में *लामार्तीन* (Lamartine) और *अल्फ़्रेद द म्युसे* (Alfred de Musset), उपन्यासकारों में *बालज़ाक(Balzac) फ़्लोबैर, शातोब्रियाँ* और *विक्टर ह्यूगो*, लघुकथा में *गी द मोपासाँ* (Guy de Maupassant), वैज्ञानिकों में लुई

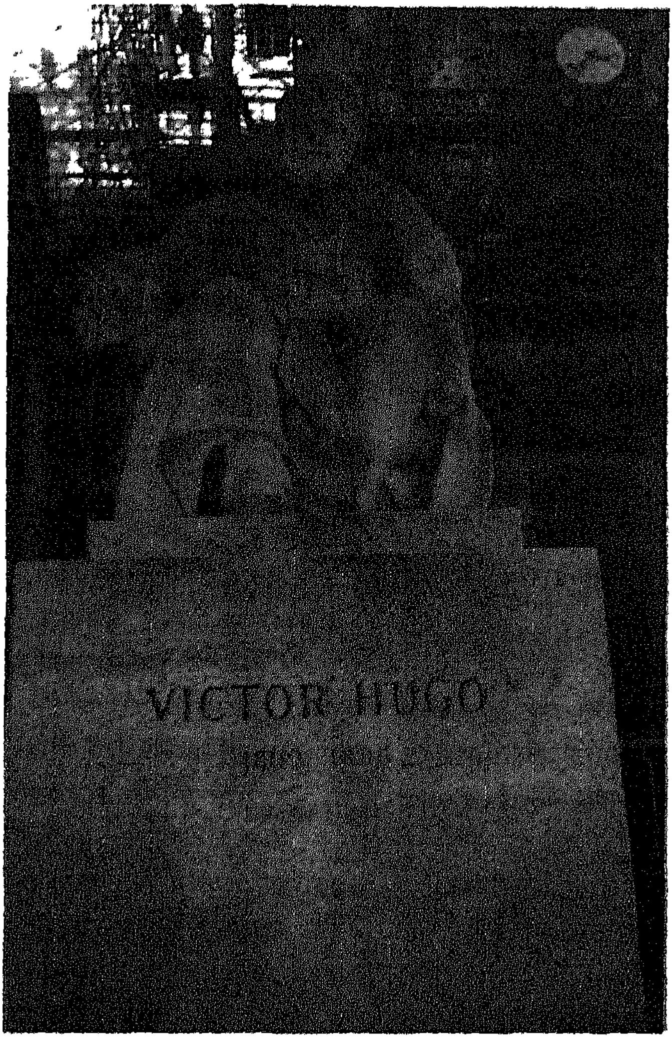
पास्तर; विज्ञान गल्प साहित्य में *ज्यूल वैर्न* और प्रतीकवाद के अग्रणी कवि *वर्लेन* (Verlaine), रैंबो(Rimbaud) और मालार्मे(Mallarmé) प्रमुख हैं।

अपनी रचना 'कॉमेदी ह्यूमैन'(Comédie Humaine) अर्थात् 'मानव नाटक' के विविध भागों में *बालज़ाक* ने व्यक्तियों और जनसमूहों का जो सजीव चित्रण किया है उससे ऐसा लगता है मानो लोग समूर्त खड़े होकर बातें कर रहे हों। वास्तव में उसने विशिष्ट लौकिक प्रवृत्ति का वर्णन किया है जिसके वशीभूत हो लोग धन-संपत्ति, उच्च पद और असीम शक्ति पाने के लिए निर्मम संघर्ष करते हैं। उसके चित्रण इतने युक्तियुक्त हैं कि वे आधुनिक प्रतीत होते हैं। उसकी रचना फ़्रांसीसी समाज की मनोवैज्ञानिक और आर्थिक स्थिति का दर्पण है। *फ़्लोबैर* का उपन्यास 'मदाम *बोवारी* ' यर्थाथवाद का ऐसा नमूना है जिसमें इस नारी की विरोधात्मक और दुखांत कथा दी गई है। *'बूर्ज्वा'* और कुलीन वर्ग के रहन-सहन पर गंभीर विचार उसने अपनी कृति *'भावुकता ,की शिक्षा'* में प्रकट किए हैं।

एक प्रकार से उन्नीसवीं शती को मृत्यु, निराशा, दुख और असंतोष की शती कहा जाता है। इस शती की वेदना को *शातोब्रियाँ* ने अपनी आत्मकथा में प्रदर्शित किया है। उसके बचपन, अमरीका और ब्रिटेन की यात्रा, प्रकृति का चित्रण और विशिष्ट स्तर के लोगों के जीवनवृत्त से भरपूर यह ग्रंथ मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से अद्वितीय समझा जाता है।

कवि-शिरोमणि *विक्टर ह्यूगो* ने सोलह वर्ष की आयु से ही कविता, लिखना शुरू कर दिया था। अपनी पुत्री और उसके पति के सैन नदी में डूबने पर लिखी 'मनन' उसकी अत्यंत मार्मिक कविता है। उसकी अन्य कविताओं में 'शरत् की पत्तियाँ', 'उषागीत', 'आंतरिक वाणी' और 'किरण तथा छाया' प्रमुख हैं। उसने ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे, जैसे— *'नोत्र दाम द पारी'(Notre Dame de Paris)* अर्थात् 'पैरिस का नोत्र दाम कैथीड्रल् ' और 'ले मिज़राब्ल'(Les Misérables) अर्थात् *'दीन लोग'*।

युवासाहित्य की आवश्यकता होने पर सुदूर कल्पना पर आश्रित 'विज्ञान



सौरबोन के आँगन में 'विक्टर ह्यूगो' की मूर्ति

गल्प साहित्य ' का आंरभ हुआ। इस साहित्य का पथ-प्रदर्शक *ज्यूल वैर्न* था। ऐसे समय में, जबकि यात्रा करना इतना सरल न था, उसने ज्ञात और अज्ञात जगत में यात्रा-वर्णन साहित्य लिखा जिसका मूल प्रायः विज्ञान था। उसके अभिनेता पास और दूर के देशों में, जाने-अनजाने क्षेत्रों में,बियाबान जंगलों में, बरफ़ से आच्छादित पहाड़ों पर और समुद्र के बीच यात्रा करते थे। जगत के विविध करिश्मों की खोज करना उसका ध्येय था। इसलिए उसके ग्रंथों की पृष्ठभूमि अंतरिक्ष, अंतःसागर और ब्रह्मांड हैं। उसकी रचनाएँ "अस्सी दिन में विश्व यात्रा" और "समुद्र में बीस हज़ार कोस" विश्व के युवाजनों का मनोरंजन करती हैं। उसकी कई रचनाएँ बीसियों भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं।

बीसवीं शती में हुए दो महायुद्धों ने राजनीतिक और मानसिक परिस्थिति बदल दी। एक नई जागृति का उदय हुआ और साहित्य जनकेंद्रित न रहकर विश्वव्यापी हो गया। शांति, उत्साह और मानववाद तथा मानवाधिकारों की माँग उसके मुख्य लक्ष्य बन गए। विविध विचारधाराओं ने जन्म लिया। साहित्य के लिए साहित्य लिखने वालों के साथ-साथ लेखकों ने भी जनता को दार्शनिक विचारधाराओं की ओर अग्रसर किया। इस समय से लेखक इतिहास की रचना में भाग लेने लगे। नए मूल्यों की स्थापना करना और अन्याय तथा हिंसा का विरोध करना उनका धर्म हो गया था। फ्रांसीसी बुद्धिजीवियों ने पाश्चात्य संस्कृति के पूर्ववर्ती मूल्यों के ध्वस्त हो जाने पर आधुनिकता के संदर्भ में मानव, समाज और उनके परस्पर संबंधों पर तथा हिंसा और स्वतंत्रता पर गूढ़ मनन करना आरंभ किया। अनेक प्रश्न उठ खड़े हुए— जैसे दिव्य तत्व और मर्त्य जीवन की सहावस्थिति का सार क्या है ? श्रद्धा और तर्क में सामंजस्य कैसे हो ? क्या मनुष्य पूर्णतया स्वतंत्र है ? मानव चेतना और कल्पना क्या उसकी स्वतंत्रता की कुंजी नहीं ? ऐसी प्रचुर मानसिक उथल-पुथल के परिणामस्वरूप अनेक लेखकों ने अपनी प्रतिभा और अनुभव के आधार पर उपन्यास, नाटक, काव्य, निबंध और आलोचना ग्रंथ लिखे। दार्शनिक परंपरा और साधना से साहित्य ओत-प्रोत हो गया। विलक्षण विचारधाराओं, जैसे— अतियर्थाथवाद, मार्क्सवाद और

राष्ट्रवाद इत्यादि का जन्म और नामकरण हुआ। मानव अंतरात्मा की यथार्थ से भी परे निर्बाध उड़ान के अधीन साहित्य को 'अतियथार्थवादी' ठहराया गया। यह सर्वमान्य भौतिक और मानवीय सिद्धांतों की उपेक्षा कर अवचेतन और उपचेतन की शरण से कोरे काल्पनिक और स्वप्निल क्षेत्रों की बातों को सर्वस्व मानकर जीवन की विकृत दिशाओं का चित्रण करता था।

उन्नीसवीं शती के अंत में पैदा हुए लेखक बीसवीं शती की चुनौती से खिल उठे। राजनयिक और कवि *पोल क्लोदेल* (Paul Claudel) के अनुसार मनुष्य के शरीर और आत्मा की विरोधात्मक उच्चाकांक्षाओं का समाधान केवल भगवान की भक्ति से ही संभव है। नोबेल पुरस्कार विजेता (1947) *आंद्रे जीद (André Gide)* ने एक नए आधुनिक मानवतावाद पर अपने विचार प्रकट किए। केवल यही बुद्धि की जागरूकता और मानवीय बुभुक्षा की शक्ति के बीच सामंजस्य स्थापित कर सकता है। मानव प्रतिष्ठा और संस्कृति के संरक्षक तथा काव्यशास्त्र के प्राध्यापक *पोल वालेरी* ने उनतीस भागों में लिखे अपने संस्मरण ग्रंथ में योग में वीतरागता की प्रशंसा की है। बीसवीं शती के उपन्यास के इतिहास में कथा और निबंध लेखक तथा अनुवादक *मार्सेल प्रूस्त* (Marcel Proust) का सर्वप्रथम स्थान है। अपने "नष्ट समय की खोज" नामक लंबे उपन्यास को लिखने में उसे चौदह साल लगे। उसके नायक ने सामाजिक जीवन की तड़क-भड़क में, प्रेम में और कलाकृतियों में व्यर्थ ही सुख की खोज की। उसे सुख मिला तो अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाले अनुभवों के आत्मीय संस्मरणों में। श्रीमती *कौलेत* (Colette) ने नारी आत्मा और सामान्य जीवन का चित्रण किया। धर्म और अध्यात्मपरक कवि और निबंध लेखक *शार्ल पेगी* (Charles Péguy)ने कई बार *'शार्त्र'*(Chartres) के "नोत्र दाम कैथीड्रल" की तीर्थयात्रा की। इकतालीस वर्ष की आयु में पहले महायुद्ध के अवसर पर उसका देहावसान हुआ। राजनयिक *सैं जाँ पर्स* (Saint Jean Perse) ने अपनी कविता में मानव के भविष्य और प्रकृति से उसके संबंध के विषय में नई भाषा का प्रयोग किया। अपनी साहित्यिक मौलिकता पर उसे 1960 ई. में *नोबेल* पुरस्कार मिला था। विमान चालक लेखक

आंत्वान द सेंतेक्ज़्यूपे ने अपने उपन्यासों और प्रतीकात्मक कथाओं में वैज्ञानिक प्रगति से अभिभूत अर्वाचीन समाज में कर्म और नैतिक मूल्यों की सार्थकता की खोज की। *ल पति प्रेंस* (Le Petit Prince) अर्थात् "छोटे राजकुमार" की कथा से उसने विश्वभर में बंधुत्व का संदेश फैलाया। मानव की सार्थकता बंधुत्व से है। इस साधारण पर सारगर्भित कथा का विश्व की अनेक भाषाओं और हिंदी में अनुवाद हो चुका है। फ़्रांसीसी और अमरीकी जाति की *श्रीमती मारगरित युरसनार* (Marguérite Yourcenar) ने कविताएँ, निबंध और अनेक नाटक लिखे हैं, पर उनकी ख्याति प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यासों के कारण है। इनमें प्राचीन कथाओं की ओट में आधुनिक समस्याओं की झलक मिलती है। 1980 ई. में वह *"फ़्रांसीसी अकादेमी"* की पहली नारी सदस्य चुनी गई थी। आइरिश जाति के फ़्रांस निवासी *सेमुएल बेकेत* (Samuel Beckett) ने अपने उपन्यासों और नाटकों में मानव जीवन की व्यर्थता दिखाई है। 1969 ई. में उसे *नोबेल* पुरस्कार दिया गया था। मानव अस्तित्व की अनिवार्यता को "अस्तित्ववाद" ने स्पष्ट किया। चेतना की स्वतंत्रता और अधिकारों पर ज़ोर देते हुए "निराशियों की आशा" बन वह वास्तव में एक नए मानवतावाद की खोज में लग गया। "अस्तित्ववाद" के अनुसार महाविपत्तियों के सामने भी मानव अकर्मण्य रहकर सिर नहीं झुका सकता। इस दर्शन ने फ़्रांस को ही नहीं, विश्व को दो महान लेखक दिए—*जाँ पोल सार्त्र* (Jean Paul Sartre) और *अल्बैर काम्यु* (Albert Camus)। *सार्त्र* के अनुसार साहित्य समाज के परिवर्तन का माध्यम होना चाहिए। इसीलिए साहित्य राजनीति और दार्शनिक मनन से पृथक् नहीं। *सार्त्र* मानता था कि कल्पना संकल्प है—उसका विशदीकरण चेतना की स्वतंत्रता की खोज है। सार्त्र की प्रसिद्ध कृति *"लैत्र ए ल नेआँ"* (L'être et le néant) अर्थात् "सत्व और शून्य" है। 1964 ई. में *सार्त्र* को नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा हुई थी पर उसने इस पुरस्कार को स्वीकार नहीं किया। *अल्बैर काम्यु* ने मानव जीवन पर गंभीर मनन किया। वह भगवान, इतिहास, तर्क इत्यादि सभी में अंधविश्वास के विरुद्ध था। उसके नाटक *"ले ज्युस्त"* (Les Justes) अर्थात् "न्यायी" के न्याय के पक्षपाती

अभिनेता सभी उदार हृदयों की भाँति प्रत्येक व्यक्ति को भ्रातृभाव में बाँध "मानव संघ" की पुनर्रचना में संलग्न हैं। इन दोनों लेखकों के व्यक्तित्व और रचनाओं ने परवर्ती फ़्रांसीसी साहित्य को अत्यंत प्रभावित किया है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मानव समाज और विश्व पर मनन, वर्तमान और अतीत के प्रति विश्लेषणपरकता और भविष्य के सन्मुख अग्रदर्शिता तथा मानववाद की सतत खोज फ़्रांसीसी साहित्य के मूल सिद्धांत रहे हैं।.

10. आर्थिक व्यवस्था, उद्योग और परिवहन

फ़्रांस की गणना विश्व के सात सबसे अधिक औद्योगिक और समृद्ध देशों में होती है। आर्थिक दृष्टि से वह स्वायत्त है। उसकी जनता में बावन प्रतिशत नारियाँ और अड़तालीस प्रतिशत पुरुष हैं। आधी से अधिक जनता किसी न किसी काम में लगी है। कार्यरत जनता में सात प्रतिशत लोग कृषि संबंधी व्यवसायों में, इकत्तीस प्रतिशत उद्योग-धंधों में और बासठ प्रतिशत प्रशासन, व्यापार, बैंक, इंश्योरेंस, परिवहन इत्यादि के लोकसेवा के कार्यक्रम में लगे हैं। कुल मिलाकर पच्चीस प्रतिशत लोग निर्यात के व्यापार में जुटे हैं पर आजकल आर्थिक अवनति के कारण बेकारी बढ़ रही है क्योंकि उद्योगों का आधुनिकीकरण हो रहा है और नए यंत्रों के उपयोग के कारण कम लोगों की आवश्यकता होती है और फिर पुरानी पद्धति से प्रशिक्षित लोग परिस्थिति का सामना भी नहीं कर सकते।

दूसरे महायुद्ध के बाद से आर्थिक और सामाजिक जीवन में सत्ता का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है। फ़्रांसीसी शासन पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा राष्ट्र की राजनीति निर्धारित करता है। वह बजट, टैक्स, मुद्रा, व्यापार और ऊर्जा संपदा की व्यवस्था करता है। राष्ट्रीय व्यवसायों के द्वारा वह उत्पादन का उत्तरदायी और उसका प्रधान उपभोक्ता भी है। व्यवसायों के संस्थापन और विकास के लिए अनुसंधान में वह पूँजी लगाता है और ऋण के संपूर्ण क्षेत्र का

निरीक्षण करता है। वह निर्णय करता है कि कौन उद्योग ग़ैर-सरकारी हो और किन उद्योगों का राष्ट्रीयकरण वांछित है। आर्थिक विस्तार की दृष्टि से वही विविध प्रदेशों में संतुलन स्थापित करता है जिससे पैरिस और आस-पास के क्षेत्रों में अत्यधिक केंद्रीकरण न हो। फ्ऱांस में कार्यरत जनता का चौथाई भाग राष्ट्रीय शासन और राष्ट्रीयकृत व्यवसायों की सेवा में लगा है।

फ्ऱांस उदार-अर्थविज्ञान के सिद्धांतों का अनुयायी है। उत्पादन और विनिमय के साधन ग़ैर-सरकारी हाथों में भी हैं। वैयक्तिक नेतृत्व, प्रतियोगिता और उपभोक्ताओं की पसंद के अनुकूल ही उत्पादन का अनुकूलन होता है। फ्ऱांस के आर्थिक संबंध देश-देशांतरों तक फैले हुए हैं।

सरकारी, ग़ैर-सरकारी और मिश्रित क्षेत्र के व्यवसाय और संस्थानों के अतिरिक्त अधिकारियों, सेवकों और कर्मचारियों के विविध संघ और सहकारी सोसाइटियाँ इत्यादि अपने सदस्यों के अधिकारों की सुरक्षा करते हैं। उनकी शक्ति प्रबल है।

भूगर्भ और जलवायु संबंधी स्थिति के कारण फ्ऱांस की अर्थव्यवस्था में कृषि का प्रधान स्थान है। इसकी विविधता और उत्पादन की बहुलता के कारण पश्चिम यूरोप का अन्य कोई देश, इसका मुकाबला नहीं कर सकता। औद्योगीकरण से कृषि की संरचना और साधनों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। अब फ्ऱांसीसी कृषक मशीनरी, उर्वरक पदार्थों, कीटनाशक रासायनिक साम्रगी और नई तकनीकों का प्रयोग करता है। लगभग आधे कृषक वनस्पति उत्पादन में और आधे पशु पालन और पशु उत्पादन में लगे हुए हैं। गेहूँ , जौ, मकई, चुकंदर और आलू की उपज बहुत पुराने समय से होती आई है। पर अब गेहूँ और मकई की नई जातियों का और जानवरों के लिए नई घास का अविष्कार हुआ है। चावल, भटमाष, सरसों और सूरजमुखी की प्रचुर उपज होने लगी है। सरसों के तेल से मोटर चलाने के लिए अनुसंधान हो रहा है। यह देश फलों और तरकारियों का तो स्वर्ग ही है।

फ़्रांस का राष्ट्रीय फल अंगूर है। तीन-चार प्रदेशों में तो शराब बनाने के विश्वविख्यात कुटीर-उद्योग हैं। शराब के व्यवसाय "शातो" (Châteaux) अर्थात् दुर्गों में स्थित हैं जहाँ अंगूर की बेलों की अविच्छिन्न पंक्तियों में पीढ़ियों से लोग काम क़रते आए हैं। धरती की विशिष्टता और जड़ों की विविधता पर शराब की सुगंध, रंग, स्वाद और शरीर निर्भर होता है। अंगूर उगाना बहुत नाज़ुक काम है। यह काम लोगों को साल भर और हर मौसम में व्यस्त रखता है। अंगूर के गुच्छों की कटाई के समय अंशकालिक श्रमिक और जेबख़र्च कमाने के लिए इच्छुक विद्यार्थी भी वहाँ काम करते हैं। इस समय बहुत उत्सव होते हैं। फ़्रांस में मदिरा का सामान्य और नियंत्रित प्रयोग होता है।

अच्छी शराब की पहचान के लिए रसिकहृदय और सूक्ष्म घ्राणेंद्रिय होनी चाहिए। शराब चखने का काम विशेषज्ञ ही करते हैं। ये लोग इतने प्रवीण और अभ्यस्त होते हैं कि आँखों पर पट्टी बाँधने पर भी वे बता सकते हैं कि शराब किस प्रदेश की है, किस जाति की है और किस साल में बनी है। उनकी एक प्रतियोगिता के आयोजन की एक कहानी मशहूर है। शराब की जाँच के लिए जब विशेषज्ञों का एक समारोह हुआ तो सदा की तरह एक प्रतियोगी की आँखों पर पट्टी बाँधी गई और मेज़ पर कई प्रकार की शराब प्यालों में डाली गई। यह व्यक्ति सब शराबों को जाँचने में सफल हुआ। फिर उसके एक प्रतिस्पर्धी ने एक प्याले में सादा पानी डाला और उससे पूछा कि यह शराब कहाँ की है और कैसी है ? प्रतियोगी ने कई बार सूँघा और चखा और बाद में उसे हार माननी पड़ी। उसने कहा, मैं इसको नहीं जानता। उसके इस कथन पर लोगों को आश्चर्य नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने उसकी भूरि-भूरि प्रंशसा की।

फ़्रांस में वनस्पति उद्योग के क्षेत्र में तंबाकू तथा बीयर को सुगंध देने के लिए "हॉप" नामक बेल और कपड़ों के लिए अलसी की पैदावार होती है। इस देश में सूती, रेशम और ऊनी कपड़े के अनेक उद्योग हैं। *ल्यों* नामक नगर सिल्क के कपड़ों की राजधानी है। कदाचित् इसीलिए भारत में सिल्क की सुंदर से सुंदर साड़ियाँ मिलने पर भी भारतीय नारियाँ *ल्यों* में बनी *शिफ़ोन सिल्क*

की साड़ियाँ ख़रीदना चाहती हैं। रसायनोद्योग की सहायता से "नाइलॉन", "पोलिएस्टर", "अक्रिलिक" और "लिकरा" से मिश्रित अथवा सादे कपड़ों के उद्योगों को अब ताइवान, दक्षिण कोरिया, भारत और पाकिस्तान तथा अन्य देशों के कपड़ों के समक्ष सतर्क होना पड़ रहा है। फ़्रांस में श्रमिकों के वेतन और सामाजिक भत्तों के कारण यहाँ के बने कपड़े अपेक्षाकृत मँहगे पड़ते हैं। इसलिए कुछ उदयोगपतियों ने अपने व्यवसायों का अविकसित देशों में स्थानांतरण कर दिया है।

कपड़े के उदयोग के संदर्भ में फ़्रांसीसी 'बेरे' (Béret) का उल्लेख करना आवश्यक है। ऊन से बनी यह गोल टोपी फ़्रांस के दक्षिण-पश्चिम प्रदेश में बनती है। बहुत-से फ़्रांसीसी इसे पहनते हैं। सिर को ढकने का इतना सस्ता, उपयोगी और मज़बूत कोई दूसरा साधन नहीं जिसे कोट या बरसाती की जेब में आसानी से तह करके रखा जा सके। उन्नीसवीं शती से शुरू प्रथा के अनुसार कुछ सैनिक टुकड़ियाँ भी 'बेरे' का प्रयोग करती हैं। यहाँ फ़ैशनपरस्त "डिज़ाइनर" औरतों के कपड़ों के अनुरूप रंग-बिरंगे और कई प्रकार के 'बेरे' बनाने लगे हैं। रूढ़िबद्ध प्रथा की दृष्टि से शिष्ट सभा में औरतों का नंगे सिर जाना उचित नहीं समझा जाता, पर अब वे प्रायः नंगे सिर ही रहती हैं। "बेरे" का प्रचार अमरीका तथा अन्य देशों में फैल गया है और अब इस फ़्रांसीसी उद्योग को जापान और चीन के बने "बेरे" का सामना करना पड़ रहा है।

कृषि की उपज, पशु-उत्पादन और पशु-पालन तथा जनता की पाकशास्त्र में स्वाभाविक रुचि होने से "भोज्य पदार्थ उद्योग" भी फ़्रांस में अत्यंत विकसित है। साधारण पदार्थों के साथ-साथ विशेष भोज्य पदार्थ भी बनने लगे हैं। जो लोग मोटापे से छुट्टी पाना चाहते हैं, बिना नमक का खाना खाना चाहते हैं और समयाभाव के कारण पहले से पके पदार्थ खरीदना चाहते हैं उन सबके स्वाद के अनुकूल आमिष और निरामिष व्यंजन उनकी माँग की पूर्ति करते हैं। इन सब भोज्य पदार्थों का उत्पादन और निरीक्षण अत्यंत नियमित है।

पर्यावरण विशेषज्ञों के "पृथ्वी और जंगलों को बचाओ" के आधुनिक

आंदोलन से सैकड़ों साल पहले से ही फ़्रांस में वनस्थलियों की सुरक्षा की नीति निश्चित है। इससे भूमितल की स्थिरता और पर्यावरण की शुद्धता बनी रहती है। राष्ट्र को आर्थिक लाभ होता है और जनता का मनोरंजन होता है। कागज़ और गत्ते के डिब्बों के लिए जंगलों की लकड़ी से लुगदी बनाने वाले व्यवसाय अपनी आवश्कताएँ तो पूरी करते ही हैं, वे लुगदी विदेशों में भी निर्यात करते हैं। सभी व्यवसाय वृक्षों को काटने और उनकी जगह वृक्षारोपण की नीति के कार्यान्वयन में शासन को सहयोग देते हैं।

फ़्रांस में एक-चौथाई से अधिक भूमि जंगलों से आवृत है। कई फ़्रांसीसी दुर्ग और महल तो वृक्षों से इतने घिरे हैं कि दूर से वे दिखाई भी नहीं देते। इस क्षेत्र में यूरोपीय संघ के देशों में फ़्रांस का प्रमुख स्थान है। ज़हरीले कीड़े-मकोड़ों के अभाव में एक तिहाई फ़्रांसीसी सप्ताह में कम-से-कम एक बार इन वनस्थलियों में भ्रमण करते हैं। यहाँ पदयात्रियों और जौगिंग करने वालों के लिए निर्देश रेखाएँ बनी हैं ताकि वे खो न जाएँ। फ़्रांस का वृक्षराज 'बंजुल'' है, यद्यपि नैनीताल के कटिबंधों में मिलने वाले अन्य जाति के वृक्ष भी यहाँ देखने को मिलते हैं। आजकल उत्तरी यूरोप और फ़्रांस के उद्योगों में प्रतिस्पर्धा हो रही है और विदेशी कंपनियाँ फ़्रांसीसी उद्योगों को खरीदने लगी हैं जिससे लकड़ी के कारीगरों में अशांति बढ़ गई है।

इस देश केसत्ताइस सौ किलोमीटर लंबे समुद्र तट पर बसे शहरों और गाँवों में 'मत्स्योद्योग' आजीविका का प्रधान साधन है। यहाँ के कृषक खेती की उपज को बढ़ाने के लिए समुद्री शैवाल का उपयोग करते हैं। जापान की देखा-देखी अब शैवाल के स्वास्थ्यपरक उद्योगों के नए व्यवसायों का विकास भी हो रहा है। मत्स्योद्योग की एक कठिनाई यह है कि मछली पकड़ने की जापानी शैली अपनाने से आवश्यकता से अधिक मछलियाँ इत्यादि एकदम जाल में आ जाती हैं और तट के पास मछलियाँ कम होती जा रही हैं। परिणामतः माहीगीरों को दस-दस दिनों के लिए घर से बाहर किश्तियों में रहना पड़ता है। समुद्रीय खाद्यपदार्थों और माहीगीरों के वेतन की कमी के कारण

मत्स्योद्योग की आजकल अवनति हो रही है।

बीसवीं शती के अधिकांश उद्योग प्रधानतया पूर्वोत्तरीय *लौरेन* प्रदेश के इस्पात, उत्तरीय प्रदेश के कोयले, दाक्षिणात्य भूतल के बोक्सित और दक्षिण-पश्चिम में *लाक* नामक प्रदेश के प्राकृतिक गैस से निकले गंधक जैसे कच्चे माल पर आश्रित हैं। कुछ समय से परंपरागत जलचालित तथा ऊष्मिक विद्युत ऊर्जा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के लिए अपर्याप्त हो गई है। कोयले का उत्पादन कम होने लगा था और वह अच्छा भी न था। ऊष्मिक केंद्रों में उत्पन्न विद्युत ऊर्जा मँहगी पड़ती थी और जल-विद्युत ऊर्जा आवश्यकता के एक-चौथाई भाग की ही पूर्ति करती थी। फ्रांस में पैट्रोल के स्रोत नगण्य और गैस के स्रोत नहीं के बराबर थे। उधर आर्थिक प्रगति और जीवन का स्तर ऊँचा होने पर कृषि, उद्योग एवं परिवहन के क्षेत्रों में और गृहस्थ जीवन में बिजली की आवश्यकता बढ़ती जा रही थी। इसीलिए ऊर्जा की समस्या के समाधान के लिए शासन को जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका और पोलैंड से कोयले, मध्येशिया, अलजीरिया और नाईजीरिया से कच्चे पैट्रोल और अलजीरिया, नार्वे व हालैंड से गैस का आयात करना पड़ा।

इन देशों पर निर्भरता कम करने के लिए शासन को ऊर्जा संबंधी नई नीति अपनानी पड़ी। इस नीति की दो दिशाएँ निश्चित हुईं। ऊर्जा की प्राकृतिक संपदा के सूर्य, वायु और भूमिगत ऊष्म जल के नए स्रोतों से ऊर्जा की उत्पत्ति और परमाणु ऊर्जा से विद्युत उत्पादन का विकास–शासन ने इन दोनों दिशाओं में अनुसंधान को प्रोत्साहन दिया है और पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। अब वास्तुशास्त्री मकानों की रचना में सूर्य की ऊर्जा का प्रयोग करते हैं– जैसे चंडीगढ़ के निर्माता *ल कूरबूज़िये* (Le Courbousier) ने दक्षिण फ्रांस के *मार्सैई* नामक नगर की एक इमारत में इस ऊर्जा का प्रयोग किया है। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान का आरंभ जापान में हिरोशिमा के बम विस्फोट के दो महीने बाद सन् 1945 में '*परमाणु ऊर्जा आयोग*' की स्थापना के बाद हुआ। इसके दो प्रमुख लक्ष्य थे– फ्रांस की आत्मरक्षा और सन् 1973 में पैट्रोल की मँहगाई

के कारण विद्युत ऊर्जा का उत्पादन। फ़्रांस की महत्वाकांक्षा थी कि परमाणु बम विस्फोट के विषय में वह अमरीका, भूतपूर्व सोवियत संघ और ब्रिटेन से पीछे न रहे। इसीलिए (भूतपूर्व फ़्रांसीसी उपनिवेश) अलजीरिया के तानेज़रूफ़्त की मरुभूमि में *रेगन्न* नामक स्थान में 13 फरवरी सन् 1960 में फ़्रांस के पहले परमाणु बम का विस्फोट हुआ। इसकी शक्ति हिरोशिमा के बम से चौगुनी थी। अब फ़्रांस इस क्षेत्र में अग्रणी माना जाता है। परमाणु ऊर्जायुक्त "सबमैरीन" तथा अन्य युद्ध सामग्री उसके पास पर्याप्त मात्रा में है। अब उद्योग की दृष्टि से विश्व में फ़्रांस का दूसरा स्थान है। यहाँ तिहत्तर प्रतिशत बिजली का उत्पादन परमाणु ऊर्जा से होता है। इससे विदेशी मुद्रा की बचत होती है और जनता को सस्ती बिजली मिलती है। "फ़्रांसीसी विद्युत प्राधिकरण" परमाणु ऊर्जा के साठ से ऊपर विद्युत के उत्पादन केंद्रों का प्रशासन करता है, नीति निर्धारित करता है और वितरण की व्यवस्था करता है। अनुसंधानशालाओं में यूरेनियम का प्रयोग व परिष्कार इस प्राधिकरण के अधीन है। वही पर्यावरण और केंद्रों के पास बसी जनता की सुरक्षा का उत्तरदायी है। इस क्षेत्र में फ़्रांस ने यूरोप, एशिया, अफ़्रीका और दक्षिण अमरीका के कई देशों के साथ पारस्परिक सहयोग के समझौते किए हैं।

परमाणु ऊर्जा संबंधी प्रगति होने पर भी फ़्रांस को कच्चे पैट्रोल का आयात करना ही पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप इस देश ने पैट्रोल के पूर्वेक्षण और शोधन के क्षेत्र में अद्भुत विशेषज्ञता प्राप्त की है। इस क्षेत्र में उसने विश्व में पाँचवाँ स्थान पाया है।

इस देश की कार्यरत जनता के दस प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में मोटरगाड़ी उद्योग में लगे हैं। मोटरगाड़ी के आरंभ की एक रोचक कहानी है। जनवरी 1891 में दो मित्रों ने मोटरचालित एक छोटी गाड़ी बनाई। पर बिना घोड़े की इस गाड़ी में सवार होने पर वे ज़्यादा दूर न जा सके और फ़ैक्टरी में उसे वापस लाने के लिए उन्हें एक घोड़े को जोतना पड़ा। उसके बाद उन्होंने एक और मोटरगाड़ी बनाई और इस बार उन्होंने बिना कठिनाई के बीस

किलोमीटर का रास्ता तय कर लिया। चार महीने बाद "पजो" (Peugeot) फ़ैक्टरी ने पहली मोटरगाड़ी निकाली। उसकी विलक्षणता के अनुरूप ही उसका "*कर्कट* " नाम रखा गया। शुरू-शुरू में इस मोटरगाड़ी की रफ़्तार आठ किलोमीटर प्रति घंटा थी। तीन साल बाद शासन ने चिंता प्रकट की कि यह नई गाड़ी धीरे चलने वाली घोड़ागाड़ियों का बहिष्कार कर देगी। उसके अनुसार इस नए साधन से लोगों के जीवन और परिवहन उद्योग में स्थायी परिवर्तन होंगे। हम देखते हैं कि सौ साल बाद उसकी यह आशंका सत्य सिद्ध हो गई है।

मोटर के दो उद्योग *रनो* (Renault) और *पजो-सित्रोयेन* (Peugeot-Citroën) गाड़ियाँ बनाते हैं। उनके विकेंद्रीकरण से ये उद्योग फ़्रांस भर में फैले हुए हैं। पर पिछले कई साल से इनको आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उत्पादन की कीमत बढ़ रही है, बिक्री कम हो रही है और जापानी, जर्मन और इटली के उद्योगों से प्रतियोगिता करनी पड़ रही है। आधुनिकीकरण के लिए *रोबो* इत्यादि यंत्रों के प्रयोग से कारख़ाने के लोगों में कटौती करनी पड़ रही है जो सामाजिक अशांति का कारण है।

'लोक निर्माण उद्योग' फ़्रांस का प्रमुख उद्योग है। यहाँ के अनगिनत सुंदर महल, दुर्ग और निवास स्थान इस क्षेत्र की प्राचीन परंपरा के प्रमाण हैं। आधुनिक समय में भी आवश्यकतानुसार गगनचुंबी इमारतों, फ़ैक्टरियों, दफ़्तरों, और राजपथों का निर्माण इस दृष्टि से होता है कि पर्यावरण का सौंदर्य न बिगड़े। इस उद्योग के क्षेत्र में फ़्रांस की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है। एशिया और अफ़्रीका के बीच लालसागर और भूमध्यसागर की स्थलसंयोजक *स्वेज़* की नहर से कौन परिचित नहीं ? फ़्रांसीसी राजनयिक " *फ़र्दिनाँ द लसैप्स*" ; (Ferdinand de Lesseps) ने मिस्र में पोर्ट सईद से स्वेज़ तक की 161 किलोमीटर लंबी नहर का काम दस साल के बाद 1869 ई. में समाप्त किया। इसकी सफलता से प्रोत्साहित होकर उसने अटलांटिक और प्रशांत महासागर के बीच स्थलसंयोजक 'पानामा' की नहर का काम आरंभ किया, पर वह इसे समाप्त

न कर सका। फिर भी सन् 1914 से यह नहर काम में आ रही है। *आल्प* पर्वत के *मौं ब्लाँ* के नीचे फ़्रांस को इटली से मिलाने वाली 14 किलोमीटर लंबी सुरंग और पैरिस, मोंटरियल, मैक्सिको, रियो द जनेरो, अथैन, कैरो और कलकत्ता की मैट्रो फ़्रांसीसी लोकनिर्माण के विशेषज्ञों की दक्षता के प्रमाण हैं।

बहुत समय से जनता और माल के यातायात के लिए इंगलिश चैनल के नीचे एक सुरंग बनाने की योजना पर फ़्रांस और ब्रिटेन के बीच विचार हो रहा था। इस विषय में पहला फ़्रांसीसी प्रस्ताव दो सौ साल पुराना है। यूरोपीय संघ को सुदृढ़ बनाने के लिए फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ी शासनों ने 1987 ई. में यह निर्णय किया कि इस सुरंग का काम प्राइवेट कंपनी को सौंप दिया जाए। दोनों देशों के लोगों के सहयोग से यह काम समाप्तप्राय है। मई 1994 में *महारानी "एलिजाबेथ* द्विवितीय" और फ़्रांस के पिछले राष्ट्रपति ने इसका उद्घाटन किया। इस सुरंग में द्रुतगामी रेल से पैरिस और लंदन का फ़ासला तीन घंटे में तय होता है। साथ ही मोटरगाड़ियों तथा अन्य परिवहन के उचित साधनों का यातायात भी होने लगा है।

फ़्रांस के पोतपरिवहन और समुद्री व्यापार तथा मीनव्यवसाय के कारण "नौ निर्माण" की गणना भारी उद्योगों में होती है। यहाँ पर हर प्रकार के जहाज़ और नौकाएँ बनती हैं। फ़्रांसीसी जहाज़ पैट्रोल तथा अन्य पदार्थों को तथा सेना के विमानों और हैलीकौप्टरों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। यूरोप से अमरीका और एशिया आने-जाने वाले लोग फ़्रांसीसी जहाज़ों पर यात्रा का आनंद लेते हैं। व्यापार और सेना की आवश्यकता के अनुसार भी नौ निर्माण उद्योग का विकास हो रहा है। फ़्रांस ने कई सबमैरीन बनाए हैं। इनमें से एक *ब्रिटेनी* के ब्रेस्त नामक महापत्तन पर रुकी है जिसे पर्यटक देख सकते हैं। मध्यम वर्ग के उद्योग और छोटे उद्योग नौकाएँ और पालनावें बनाते हैं। सभी तटवर्ती पत्तनों और महापत्तनों का नवीकरण किया जा रहा है। कुछ साल से ब्रिटेनी के *दुआरनने* (Douarnenez) नामक स्थान पर पुरानी नौकाओं का अनमोल शिक्षाप्रद संग्रहालय है। यहाँ पांडीचेरी में बनी चमड़े की एक नौका भी रखी

है। फ्रांसीसी नौकानिर्माण उद्योग को अब जापान, ब्राज़ील और दक्षिण कोरिया का मुकाबला करना पड़ रहा है।

'युद्ध सामग्री उद्योग' का फ्रांस में विशिष्ट स्थान है। विदेशों में इस सामग्री का निर्यात करने वाले देशों में फ्रांस तीसरे नंबर पर आता है। परमाणु ऊर्जा, रसायन और छोटी मशीनों और औज़ारों के मध्यम वर्ग के उद्योगों के विशिष्ट व्यवसाय इस क्षेत्र में बहुत सक्रिय हैं। सुरक्षा मंत्रालय के चुने हुए उच्चाधिकारी सेना के लिए युद्धसामग्री की योजनाएँ बनाते हैं और सामग्री के उत्पादन और ख़रीद के लिए व्यवसायों का निर्वाचन करते हैं। वे ही व्यवसायों को पैसा बाँटते हैं और विदेशों में निर्यात की व्यवस्था करते हैं।

बारूद और विस्फोटक सामग्री के अतिरिक्त वे रसायन उद्योग, उर्वरक, दवाइयाँ, प्रसाधन और अंगसज्जा की सामग्री और मोटर के टायर बनाते हैं।

'विमान-विज्ञान उद्योग' के क्षेत्र में फ्रांसीसियों की योग्यता, उत्साह और नेतृत्व तथा अन्य पाश्चात्य देशों के साथ कार्यान्वित योजनाओं का उल्लेख आवश्यक है। यहाँ वाष्पचालित इंजन से युक्त सबसे पहला वायुयान सन् 1890 में और सबसे पहला हैलीकौप्टर उसके सत्रह साल बाद आकाश में उड़ा। वायुयान से इंग्लिश चैनल को पार करने वाला पहला व्यक्ति फ्रांसीसी वायुयान निर्माता और चालक *लुई ब्लेरियो* (Louis Blériot) था। पहले और दूसरे महायुद्ध के बाद विमान-विज्ञान उद्योग में आश्चर्यपूर्ण विकास हुआ। बिजली और इलैक्ट्रॉनिक उपादानों व संघटकों, दूरसंचार के माध्यम, सूचना की स्वचलित अभिक्रिया, रोबो तथा अन्य तकनीकों के प्रयोग से सैनिक और वाणिज्यिक वायुयानों का निर्माण और सहायक व्यवसाय अधिक-से-अधिक जटिल होते जा रहे हैं। आर्थिक सहायता कोश और हर स्तर पर योग्य और सेवानिष्ठ व्यक्तियों के कारण फ्रांस ने इस उद्योग के क्षेत्र में बहुत ख्याति पाई है। वाणिज्यिक उपयोग के लिए फ्रांस के वायुयान *करावेल* (Caravelle) का स्थान अब यूरोपीय सहयोग से बनी "एअर बस" ने ले लिया है। यह उद्योग अमरीकी "बोइंग" का मुकाबला कर रहा है। *फ्रांको-ब्रितानिक* सहयोग से बने *"कौनकौर्द"*

पराध्वनिक वायुयान की पहली यात्रा सन् 1969 में हुई। सैनिक उपयोग के लिए फ्रांस "मिराज" और "रफ़ाल" नामक आक्रमणकारी वायुयान, हैलीकौप्टर और अन्य प्रकार के वायुयान बनाता है। फ्रांस इन्हें विदेशों को भी बेचता है।

इलैक्ट्रॉनिक उपादानों के विविध उद्योग जैसे *"ऐंफ़ौर्मातिक"*, *"तेलेमातिक"*, "रोबोतिक" और *"ब्यूरोतिक"* इत्यादि भी विकास कर रहे है। इन फ्रांसीसी उद्योगों की सहायता से फ्रांस ने 'अंतरिक्षविज्ञान उद्योग' में भी अद्भुत प्रगति की है। यह उद्योग तीन दिशाओं में काम करता है–इंजीनियरों और तकनीकी कारीगरों का निर्वाचन, नियुक्ति और भावी अधिकारियों और सेवकों का प्रशिक्षण, उपग्रह, प्रक्षेपक, पलीता और अंतरिक्ष लौकिक पोत इत्यादि यंत्रों का निर्माण, तत्संबधी अनुसंधान और तकनीकी सामग्री का विकास। अंतरिक्षयानों को वश में कर लेने के बाद अब अंतरिक्षविषयक जिज्ञासा बढ़ती जा रही है। अधिक-से-अधिक निष्पन्न प्रक्षेपकों द्वारा अब स्वचालित उपग्रहों का परिक्रमापथ निर्धारित होने लगा है। इन उपग्रहों से दूरसंचार और पृथ्वी तथा विश्व के निरीक्षण में क्रांति आ जाएगी। कुछ प्रयोगों में मानव की उपस्थिति आवश्यक है। अब मानव अंतरिक्ष में एक जगह से दूसरी जगह जाने और काम करने में सशक्त हो रहा है। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस शती के अंत तक अंतरिक्ष लोक में प्रयोगशालाओं की स्थापना हो सकेगी जिनकी संरचना पृथ्वी की परिक्रमा पथ में ही होगी। इन प्रयोगशालाओं में वहाँ के यंत्रों के चालक अथवा यात्री का स्थानांतरण हो सकेगा। इस कार्यक्रम में पाँच फ्रांसीसी रूसी चालकों के साथ अंतरिक्ष में जा चुके हैं। अगली बार एक महिला इस कार्यक्रम में भाग लेगी। *"आरियान"* नामक अंतरिक्ष प्रक्षेपक का दो-तिहाई खर्चा फ्रांस उठाता है। इसका पहला अभ्यास 1979 ई. में और इसका पहला व्यापारिक यान 1983 ई. में निर्मित हुआ था। तब से इसकी सफलता बढ़ती ही जा रही है। इस प्रक्षेपक का अड्डा दक्षिण अमरीका में स्थित समुद्रपारीन फ्रासीसी प्रदेश *गुयान* (Guyane) के *"कुरु"*(Kourou) नामक स्थान में है।

अंत में यह कहना उचित होगा कि फ्रांसीसी उद्योग स्वायत्त हैं पर विश्व

भर में आर्थिक ह्रास और सामाजिक कठिनाइयों के समक्ष विकसित देशों में आपस में और विकसित और अविकसित देशों के बीच भी प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। उद्योगों का सामुदायीकरण हो रहा है और बड़े-बड़े समुदाय बनने लगे हैं। फ़्रांसीसी और विदेशी एक दूसरे के उद्योगों को या तो ख़रीद रहे हैं या उनमें पूँजी लगा रहे हैं। औद्योगीकरण होने पर भी फ़्रांस में लोग कुटीर-उद्योगों को सजीव रखने का प्रयत्न करते हैं। सच है कि यहाँ कुटीर-उद्योगों की या हाथ की बनी चीज़ें अधिक मँहगी बिकती हैं, पर कुछ क्षेत्रों में योग्य कारीगरों की कमी होने पर युवाजनों के प्रशिक्षण को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

जनता के विस्थापन और माल वितरण के लिए इस उद्योग प्रधान देश में अंतरीय और अंतर्राष्ट्रीय परिवहन के पार्थिव, समुद्रीय और आकाशगामी साधनों की सुव्यवस्था है। "सैन"(Seine) और "रें"(Rhin) नामक नदियों पर नौकाएँ माल ले जाती हैं। कुछ नदियों और नहरों पर पर्यटकों के लिए हाउस बोटों में यात्रा का प्रबंध है। पिछले पचास साल में परिवहन के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई है।

फ़्रांस की पैंतीस हज़ार किलोमीटर लंबी रेलवे लाइन का पश्चिम यूरोप में पहला स्थान है। अन्य पाश्चात्य देशों की तरह फ़्रांस में रेलयात्रा बहुत सुखद है। छुट्टियों की भीड़ के दिनों में यह सेवा बढ़ जाती है। यात्री कम-से-कम सामान लेकर चलते हैं क्योंकि स्टेशनों पर कुली नहीं मिलते। यूरोपीय संघ के देशों में यात्रा के लिए "पास" बिकता है और छब्बीस वर्ष की आयु से कम और पैंसठ वर्ष की आयु के लोगों को रेल किराए में छूट दी जाती है। जो लोग लंबी यात्रा अपनी मोटर में नहीं करना चाहते, न भाड़े की मोटर लेना चाहते हैं, पर गंतव्य स्थान पर अपनी मोटर का उपयोग करना चाहते हैं, वे *"ओतो-कूशैत"* (Auto- couchette) लेते हैं। इस प्रकार उनके साथ ही रेलगाड़ी के विशिष्ट डिब्बों पर उनकी मोटर भी सवार कर दी जाती है।

टोक्यो से ओसाका जाने वाली जापानी "शिनकनसेन बुलेट ट्रेन" की तरह फ़्रांस में अतिद्रुतगामी ट्रेन *ते.जे.वे. "त्रें अ त्रे ग्रांद वितैस"* (Train à trés grande

Vitesse) पहले-पहल 1981 ई. में पैरिस और *ल्यों* नामक शहर के बीच चली। इस रेल की औसतन रफ़्तार 300 किलोमीटर प्रति घंटा थी। आठ साल बाद पश्चिम में और 1993 ई. में यह ट्रेन पैरिस से *लील* नामक नगर में जाने लगी है। यह ट्रेन पैरिस से *स्विटज़रलैंड* के शहर *लोज़ान* और *जिनेवा* भी जाती है। अब इसकी रफ़्तार 350 किलोमीटर प्रति घंटा हो गई है। हवाई जहाज़ की तरह इसकी तेज़ी यात्रियों को बिल्कुल महसूस नहीं होती। फ़्रांसीसी तकनीक जर्मनी, अमरीका व दक्षिण कोरिया में भी अपनाई गई है। फ़्रांस अन्य देशों को रेल के इंजन, डिब्बे और पटरियाँ निर्यात करता है।

पिछले चालीस साल से छह हज़ार किलोमीटर लंबे फ़्रांसीसी राजपथ का निर्माण और अनुरक्षण प्राइवेट व्यवसायों के हाथों में है, पर वे राष्ट्रीय नीति का पालन करते हैं। प्रवेश अथवा निकास पर चलने वाली मोटरगाड़ियों को मार्ग-कर देना पड़ता है। इन राजपथों में जगह-जगह पर विश्रामस्थल हैं जहाँ लोग पिकनिक कर सकते हैं। पैट्रोल पंप भी हैं जहाँ के सेवक यात्रियों की सहायता करते हैं। यहाँ पंप के आसपास व्यावहारिक सामान के स्टॉल भी हैं। राजपथ पर यात्रा की तेज़ी नियमित है। दुर्घटनाओं से बचने के लिए पोलीस 'राडर' व 'वाकी-टॉकी' की सहायता से स्पीड को चैक करती है। फ़्रांस में मोटरगाड़ियाँ दाहिनी ओर चलती हैं।

मोटर उद्योग की प्रगति के कारण अधिकतर लोग अपनी गाड़ी का उपयोग करते हैं जिससे हर जगह भीड़ बढ़ती जाती है। कभी-कभी तो थोड़ी दूर जाने के लिए भी लोग मोटरगाड़ी में सवार होते हैं। ऐसे फ़्रांसीसी घर कम हैं जहाँ मोटरगाड़ी न हो। *''कूरिये सर्विस''* के बढ़ने से 'मोटर बाइक' ने भी पदातियों के लिए सड़कों पर चलना दूभर कर दिया है।

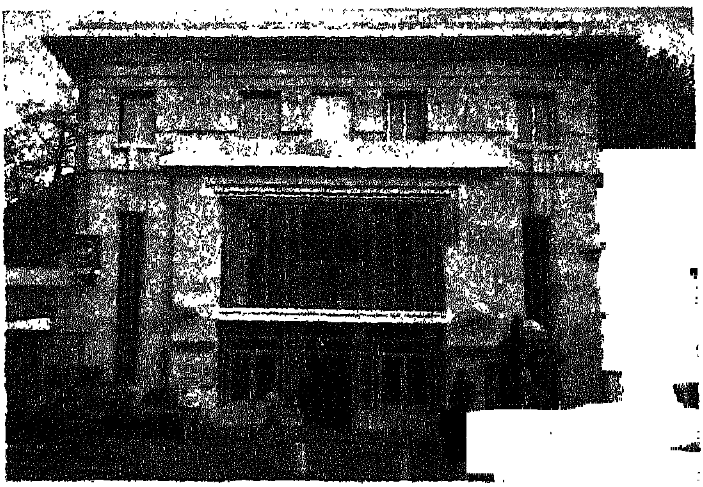
फ़्रांस ऐसा पहला देश है जिसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक स्तर पर वायुयान परिवहन का प्रबंध किया। प्रथम युद्ध के बाद से ही पैरिस-लंदन, पैरिस-प्राग, फ़्रांस-अफ़्रीका और फ़्रांस-दक्षिण अमरीका के रास्ते खुले। फ़्रांस में पैरिस स्थित ''हवाई पत्तन प्राधिकरण'' यथोचित राष्ट्रीय मंत्रालयों के सहयोग से विमान क्षेत्रों

की व्यवस्था का उत्तरदायी है। वायुयान के सामान्य उपयोगों के अतिरिक्त कुछ समय से संयुक्त राष्ट्र संघ और शासन के लोकोपकारी कार्यक्रमों के लिए भी फ़्रांस तूफ़ानों, भूकंपों, वर्षा अथवा भूख से संतप्त लोगों को वायुयान द्वारा खाना, कपड़े, कंबल इत्यादि सामग्री और दवाइयाँ भेजता है। कई डॉक्टरी संस्थाएँ डॉक्टरों, नर्सों, दवाइयों और शल्य सामग्री से विदेशों में अस्थायी रूप से अस्पताल चलाने के लिए वायुयानों का प्रयोग करती हैं।

फ़्रांस में परिवहन की सुविधा यहाँ के पर्यटक उद्योग के विकास को प्रोत्साहित करती है। इस सुविधा के बिना तत्संबंधी व्यवसाय, राष्ट्रीय शासन और प्रादेशिक तथा नगरपालिका प्राधिकारी चाहें कितनी भी योजनाएँ बनाएँ, वे सफल नहीं हो सकतीं। फ़्रांस के प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक गौरव और सांस्कृतिक समृद्धि की खोज में एक जगह से दूसरी जगह जाने वाले पर्यटकों के लिए कोई भी स्थान अगम्य नहीं। फ़्रांस और पैरिस का इतना आकर्षण है कि हर साल पाँच करोड़ से अधिक पर्यटक इस देश में आते हैं। अनुमान किया जा सकता है कि इससे शासन को कितनी आय होती है और कितने लोगों की रोज़ी चलती है।

इस संदर्भ में देश की परिवहन स्थिति के उपर्युक्त विवरण के बाद पैरिस की विलक्षण परिवहन व्यवस्था का उल्लेख अनावश्यक नहीं। बहुत-से परदेसी तो पैरिस द्वारा ही फ़्रांस की झाँकी पाते हैं। यहाँ तीन हवाई अड्डे हैं—नगर से चालीस किलोमीटर उत्तर में *"शार्ल द गोल-रूआसी"* (Charles de Gaulle Roissy) और दक्षिण में *"औरली"* (Orly)। पैरिस आने वाले पर्यटक यहाँ से रेल, बस या टैक्सी लेकर शहर पहुँचते हैं। तीसरा हवाई अड्डा *'ल बूर्जे'* (Le Bourget) है। यहाँ से भाड़े के प्राइवेट जहाज़ आते-जाते हैं। जून में यहाँ विविध प्रकार के हवाई जहाज़ों की अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी भी होती है। विदेशों से आने वाले पानी के जहाज़ प्रायः *मार्सेई* नामक पत्तन में रुकते हैं। वहाँ से पैरिस आना सरल है। ब्रिटेन और आयरलैंड से किश्तियाँ *नार्मंडी* और *ब्रिटेनी* के निश्चित पत्तनों पर पहुँचती हैं। बहुत-से विदेशी तो अपनी मोटरों के साथ इन किश्तियों

में यात्रा करते हैं। उनसे इच्छानुसार फ़्रांस और पैरिस में भ्रमण करते हैं। विविध दिशाओं से आने-जाने वाली रेलगाड़ियाँ पैरिस के पाँच स्टेशनों पर रुकती हैं। उत्तर के लिए *"गार दयु नौर"* (Gare du Nord) *गार* = स्टेशन, *नौर* = उत्तर), दक्षिण के लिए (*"गार द ल्यों " "ल्यों"* नामक शहर के कारण), पूर्व के लिए *"गार द लेस्त"*(Gare de l'Est) (ऐस्त = पूर्व) और पश्चिम के लिए "गार मोंपारनास"(Gare Montparnasse पैरिस के "गार मौंपारनास" नामक इलाके के कारण) और *''गार सें लज़ार"*(Gare Saint Lazare) जहाँ ब्रिटेन से भी



पैरिस में भूमिगत 'मैट्रो' और 'ऐर. ए. ऐर' का स्टेशन

गाड़ियाँ आती-जाती हैं। पैरिस में भूमिगत रेल है जिसे "मैट्रो" कहते हैं। यह लंदन (1863) और न्यूयार्क (1868) की मैट्रो के बाद सन् 1900 से चालू है। पैरिस के बाद बर्लिन, मेड्रिड, टोक्यो, मास्को और रोम में भी मैट्रो चलती है। कलकत्ता में फ़्रांसीसी सहयोग से मैट्रो 1985 ई. में खुली। पैरिस में घूमने के लिए मैट्रो सबसे सस्ता और द्रुतगामी साधन है। सुबह साढ़े पाँच बजे से आधी रात के बाद तक मैट्रो के एक टिकट से ही पैरिस के एक कोने से दूसरे कोने तक जाया जा सकता है। इसकी यात्रा से तलगत मोटरों की भीड़ से भी बचा जा सकता है। पैरिस में बसें भी चलती हैं। रात में मैट्रो के रुकने के बाद बस की ऐसी लाइनें हैं जो सुबह साढ़े पाँच बजे तक चलती हैं। उपनगरों में जाने के लिए मैट्रो के अतिरिक्त ऐर. ए. ऐर. *रेज़ो एक्सप्रेस रेजियोनाल* (Réseau Express Régional) की चार लाइनों से लंबी यात्रा कम समय में की जा सकती है।

फ़्रांसीसी भाषा न जानने वाले व्यक्ति के लिए हवाई अड्डे, एअर टर्मिनल और रेलवे स्टेशनों पर *शुभागमन सेवा* की व्यवस्था है। यहाँ टेलिफ़ोन, डाक-तार और रुपया बदलने की सुविधा भी है। वैसे पैरिस शहर में जगह-जगह पोस्ट ऑफ़िस हैं और टेलिफ़ोन लगे हैं जिससे दैनिक जीवन के संपर्क सरल हो जाते हैं।

11. भारत और फ्रांस

विश्व के अन्य देशों से हमारे संपर्क की परंपरा पुरानी है। इतिहास हमें बताता है कि यूनान के सिकंदर के भारत पर आक्रमण और उसके उत्तराधिकारियों से भारत को स्वतंत्र कराने वाले चंद्रगुप्त मौर्य के समय में ही भारत और यूनान में आदान-प्रदान इतना बढ़ गया था कि हमारी बौद्ध मूर्तिकला ग्रीक शैली से प्रभावित हुई और यूनानियों ने हमसे ज्योतिष, गणित और आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया। कुशान वंश के महाराज कनिष्क का राज्य मध्य-एशिया तक फैला और उन्होंने देश-देशांतरों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। गुप्त वंश के शासन काल में भारत की संस्कृति और व्यापार का विस्तार पूर्व और पश्चिम दोनों ही दिशाओं में हुआ। भारतीय धर्म प्रचारकों ने दक्षिण -पूर्व एशिया के अनेक देशों में बौद्ध, वैष्णव और शैव धर्म फैलाए। इस भू-भाग में भारतीय सम्राटों का राज्य चौदहवीं-पंद्रहवीं शती तक चलता रहा। यहाँ के कई देशों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव के स्मारक और प्रतीक अब भी मिलते हैं।

यूनान के बाद पश्चिम के देशों से हमारा संपर्क व्यापार द्वारा हुआ। स्थल मार्ग भारत से ख़ैबर घाटी होते हुए भारतीय माल काबुल और वहाँ से समरकंद, ताशकंद तथा रूस में और कंधार, तेहरान, बग़दाद, अंकारा होकर इस्तंबुल और अन्य यूरोपीय नगरों को जाता था। समुद्र द्वारा भारतीय जहाज़ इराक में बसरा, येमेन में अदन और सऊदीअरब में जेद्दा तथा मिस्र में सिकंदरिया बंदरगाह पहुँचते और वहाँ से वे इटली में वैनिस, नेपल्ज़ आदि यूरोपीय बंदरगाहों में सामान पहुँचाते।

(क) भारत में फ़्रांस

सुदूर पूर्व के देशों के साथ यूरोपीय देशों के व्यापार को तेरहवीं शती में प्रोत्साहन मिला जब *वैनिस* के यात्री *मार्कोपोलो* ने फ़्रांसीसी भाषा में "विश्व के चमत्कार" नामक पुस्तक लिखी। इसमें सुदूरपूर्वीय देशों की आश्चर्यजनक समृद्धि का वर्णन था। पंद्रहवीं शती में जब तुर्की ने यूरोपियनों के लिए भारत जाने के पुराने मार्ग बंद कर दिए तो उन्हें समुद्री मार्ग ढूँढने पड़े। तभी तो भारत की खोज में स्पेन का माँझी *कोलंबस* ग़लती से दक्षिण अमरीका पहुँच गया। इसी प्रकार 1498 ई. में पुर्तगाल का *वास्को द गामा* अफ़्रीका तट से होकर भारत पहुँचा। मालाबार तट पर पहुँचने पर उसने घोषणा की कि वह यहाँ ईसाइयों और मसालों की खोज में आया था। यूरोप के कई अन्य देश भी भारत की अद्वितीय संपत्ति से आकृष्ट हुए। हालैंड के लोगों ने श्रीलंका और इंडोनेशिया से और अंग्रज़ों तथा फ़्रांसीसियों ने मुग़ल साम्राज्य के समय से ही भारत से अपना व्यापार आरंभ कर दिया था। भारत के साथ फ़्रांस का संबंध सत्रहवीं शती में ही दृढ़ हो गया था। पश्चिमी प्रदेश ब्रिटेनी के लोग सिल्क, सूती कपड़े और मसाले पांडिचेरी से *लोरियाँ* नामक बंदरगाह में लाते थे। 1664 ई. में इस नगर में फ़्रांसीसी *ईस्ट इंडिया कंपनी* की स्थापना हुई।

मुग़ल साम्राज्य के क्रमिक पतन के बाद भारत के राजनैतिक मंच पर अंग्रेज़ों और फ़्रांसीसी कंपनियों के अतिरिक्त अनेक शक्तियाँ सक्रिय थीं। कई प्रादेशिक सत्ताओं का उदय हो गया था। महाराष्ट्र में मराठे ज़ोर पकड़ रहे थे, पश्चिम में अफ़गान, पंजाब में सिख, पूर्व में अवध और बंगाल के नवाब और दक्षिण में निज़ाम, कर्नाटक के नवाब और मैसूर के सुल्तान, सभी अपनी शक्ति बढ़ाना चाहते थे। अपने व्यापार की वृद्धि के लिए फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ी कंपनियों में होड़ होना अनिवार्य था। उन्होंने भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करना चाहा। यूरोप में लड़ाइयों के कारण उनकी स्पर्धा और भी तीव्र हो गई। परिणामस्वरूप

भारत में भी उनके आपसी झगड़ों की कोई कमी न रही। दोनों ही कंपनियों ने भारतीय शासकों की सहायता की।

फ़्रांसीसियों ने अंग्रेज़ों और मराठा शक्ति के विरुद्ध मैसूर के हैदर अली और बाद में टीपू सुल्तान का पक्ष लिया। फ़्रांस के शासक *दयूप्लेक्स* (Dupleix) के भारत आने के समय *फ़्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी* ने दक्षिण में पांडिचेरी कारीकल और यनाम में, बंगाल में चंदर नगर में और पश्चिमी तट पर माही में अपने अड्डे बना लिए थे। *दयूप्लेक्स* ने कंपनी की नौकरी चंदर नगर में आरंभ की थी और अपनी दक्षता के कारण 1742 ई. में वह फ़्रांसीसी बस्तियों का एक मात्र गवर्नर नियुक्त हुआ था। सत्ता हाथ में आते ही यह चतुर सौदागर वरिष्ठ राजनयिक भी बन गया। अपनी संकल्प शक्ति और दूरदर्शिता से उसने फ़्रांसीसी व्यापार को बहुत बढ़ाया और पूर्वी तट पर स्थित "सरकार" और कर्नाटक को फ़्रांस के आधीन कर लिया। वास्तव में अंग्रेज़ी व्यापार को नष्ट करना और स्वयं दक्षिण भारत का शासक बनना उसकी राजनीति का लक्ष्य था। पर पैरिस की सरकार ने उसका साथ न दिया और 1754 ई. में जब वह फ़्रांस वापस बुला लिया गया तो उसके बाद आने वाले गवर्नर और सेनाधिकारी अंग्रेज़ों की बढ़ती प्रभुता से टक्कर न ले सके। भारत में फ़्रांसीसी शक्ति का ह्रास होता गया। जब उसके सुधरने की झलक दिखाई भी दी तो 1784 ई. में फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ों के बीच संधि हो गई जिसके अनुसार वे अपने-अपने क्षेत्रों को रख सकते थे। इसके बाद *"लुई षोडश"* के राज व राज्यक्रांति तथा अन्य ऐतिहासिक कारणों से भारत में फ़्रांसीसी राज्य की स्थापना का स्वप्न एक स्वप्न ही रह गया, यद्यपि फ़्रांस का प्रभाव उसकी बस्तियों में, विशेषकर पांडिचेरी में, बहुत समय तक बना रहा। हमारी स्वतंत्रता के बाद, भारतीय और फ़्रांसीसी सरकारों के समझौते के अनुसार 1949 ई. में चंदरनगर में जनमत संग्रह हुआ जिसके परिणामस्वरूप 1952 ई. में वह भारत के पश्चिमी बंगाल प्रदेश में सम्मिलित हो गया। 1954 ई. में यनाम, कारीकल, माही और पांडिचेरी भारतीय शासन को सौंप दिए गए और 28 मई, 1956 से वे संपूर्णतया भारत का अंग

माने जाने लगे। उनका विधिवत् हस्तांतरण 16 अगस्त, 1962 के दिन हुआ। इस वर्ष से ही पांडिचेरी एक यूनियन टैरिटरी बन गई।

सत्रहवीं शती में कई फ़्रांसीसी भारत की ओर आकृष्ट हो चुके थे। फ़्रांसीसी यात्री *तावर्नियें* (Tavernier) पाँच बार भारत आया। *डॉ० फ़्रांसवा बर्नियें* (Dr. François Bernier) बारह साल तक औरंगज़ेब के राजदरबार में रहा। उसने कई प्रदेशों के रीति-रिवाजों का अध्ययन किया। ईसाई धर्म प्रचारक फ़्रांसीसी बस्तियों में जमे हुए थे। वे संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। उनमें से एक ने संस्कृत के व्याकरण की लैटिन भाषा में रचना की और अमरकोश का अनुवाद किया। उन्होंने बहुत-सी हस्तलिपियाँ फ़्रांस भेजीं। एक ज्योतिर्विद पांडिचेरी आया और उसने एक तमिल सहयोगी के साथ भारतीय ज्योतिषशास्त्र को समझने का प्रयत्न किया। इस विद्वान ने ही भागवत पुराण से प्रेरित तमिल के संक्षिप्त संस्करण का फ़्रांसीसी में अनुवाद किया।

अठारहवीं शती में बीस वर्ष की आयु में *आंकतिल द्युपेरें* (Anquetil Duperron) भारत आया। वह वेदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करना चाहता था। उपनिषदों के सत्रहवीं शती के फ़ारसी अनुवाद के आधार पर उसने उनका लैटिन में अनुवाद किया। जैसे-जैसे फ़्रांसीसी विद्वानों की रुचि बढ़ती गई वैसे-वैसे उन्होंने भारतीय विद्वानों की सहायता से संस्कृत तथा तेलुगु भाषा की हस्तलिपियों की प्रतिलिपियाँ बनवाईं और उन्हें फ़्रांस भिजवाया। ये प्रतिलिपियाँ अब फ़्रांसीसी राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित हैं। उनमें से कई की विषयसूची भी उपलब्ध है।

(ख) फ़्रांस में भारत

सांस्कृतिक संबंध बढ़ने और संस्कृत भाषा की जानकारी होने पर अन्य यूरोपीय विद्वानों की तरह फ़्रांसीसी विद्वान भी समझ गए कि संस्कृत ग्रीक और लैटिन

की तरह एक ही यूरोपीय भाषा परिवार का अंग है। इसलिए फ़्रांस में भी तुलनात्मक भाषाविज्ञान का अध्ययन हुआ। जब व्यापारिक और राजनीतिक संबंधों की वृद्धि के लिए फ़्रांस को प्राच्यभाषा के दुभाषियों की आवश्यकता हुई तो अठारहवीं शती से फ़्रांस में भारतीय "जीवित" भाषाओं के अध्ययन को भी प्रोत्साहन मिला। संस्कृत भारत के धर्म, दर्शन, संस्कृति और साहित्य का ज्ञान देती है तो आधुनिक भारतीय भाषाएँ भारत का अर्वाचीन रूप प्रस्तुत करती हैं। इसलिए भारत के मूल तत्वों से अवगत होने के लिए उच्चस्तरीय स्तर पर "भारतविद्या" के कई संस्थानों की स्थापना हुई।

इनमें "प्राच्य जीवित भाषा संस्थान" *(एकोल द लांगज़ोरियाँ ताल वीवांत)* (Ecole de Langues Orientales Vivantes) सबसे पुराना है। उसकी स्थापना 1795 ई. में हुई। विद्यार्थी उसे प्रायः *"लांगज़ो"* के संक्षिप्त नाम से संबोधित करते हैं। अरबी और फ़ारसी के विद्वान *"गार्सें द तासी"* (Garcin de Tassy) ने हिंदी की शिक्षा यहाँ 1828 ई. में आरंभ की। हिंदी भाषा सीखने के लिए उसने एक प्राथमिक ग्रंथ लिखा और फिर "हिंदुई और हिंदुस्तानी साहित्य का इतिहास"। यूरोप में अपने ढँग का यह प्रथम ग्रंथ माना जाता है। कारीकल के मजिस्ट्रेट के पुत्र *"जूलियें वेंसाँ"*(Julien Vincent) ने अठारह साल की उम्र तक भारत में रहकर तमिल सीखी थी। फ़्रांस लौटने पर उसने इस संस्थान में तमिल का अध्यापन आंरभ किया और प्राचीन कविताओं के कथासारों पर आश्रित बौद्ध और जैन कथाओं पर एक ग्रंथ लिखा। भारतीय भाषाओं के प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक और कई भारतीय भाषावैज्ञानिकों के "गुरु" इस संस्थान के प्रोफ़ेसर *ज्यूल ब्लाक* (Prof. Jules Bloch) ने वेद से लेकर आधुनिक काल तक की भारतीय आर्यभाषाओं पर "लेंदो आर्यें" (L'Indo Aryen) इंडो-आर्यन भाषाएँ और बाद में द्रविड़ भाषाओं के भाषावैज्ञानिक अध्ययन पर ग्रंथ लिखा। लगभग दो सौ साल से इस संस्थान में हिंदी और तमिल का और कुछ वर्षों से बँगला, उर्दू और तेलुगु का अध्यापन हो रहा है। पिछले बीस-पच्चीस वर्ष से यहाँ भाषा

प्रधानतया व्यावहारिक दृष्टि से पढ़ाई जाती है। लक्ष्य यह है कि विद्यार्थी जो भी भाषा सीखें, उसे ठीक से पढ़, लिख और बोल सकें। इसलिए यहाँ के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कार्यक्रम समाप्त करने के बाद विदेशी सेवा के अधीन भारत, पाकिस्तान व बंगलादेश में नियुक्त होते हैं। कुछ भारत भ्रमण के अवसर पर अपनी शिक्षा से लाभ उठाते हैं। कुछ *भारत-फ़्रांसीसी व्यापारी पारस्परिक सहयोग* की योजनाओं में भाग लेते हैं।

अठारहवीं शती के मध्य तक यह संस्थान पैरिस विश्वविद्यालय का अंग था। पर पिछले दशक से यह "विश्वविद्यालय-तुल्य" माना जाता है और डॉक्टरेट तक की उपाधियों के लिए विद्यार्थियों को तैयार करता है। यहाँ पर फ़्रांसीसी प्राध्यापक भाषा विज्ञान, व्याकरण और अर्थविज्ञान संबंधी विषयों का और भारतीय सहयोगी भाषाओं का व्यावहारिक और मौखिक अभ्यास कराते हैं। इस संस्थान की एक प्राध्यापिका ने एक भारतीय विद्वान के साथ "फ़्रांसीसी भाषियों के लिए हिंदी सीखने के पाठ ग्रंथ" का 1986 ई. में और एक अन्य भारतीय विद्वान, आमंत्रित विदुषी और दो सहयोगियों के साथ सर्वप्रथम "हिंदी-फ़्रांसीसी कोश" का 1992 ई. में प्रकाशन किया।

कालेज द फ़्रांस में सबसे पहले संस्कृत के प्राध्यापक शेज़ी (Chézy) की नियुक्ति 1814 ई. में हुई। उसनें संस्कृत अपने आप सीखी और अपने लिए एक संस्कृत व्याकरण और संस्कृत कोश बनाया। पर भारतविद्या की सुदृढ़ नींव उसके उत्तराधिकारी *ब्युरनूफ़* (Burnouf) ने डाली। इसने बौद्ध धर्म का वैज्ञानिक अध्ययन किया। बाईस वर्ष की आयु में उसने "भारतीय बौद्ध धर्म के इतिहास की भूमिका" नामक ग्रंथ लिखा। इस समय से फ़्रांस में संस्कृत और अन्य भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन और अनुसंधान प्रबल हो गया।

भारतविद्या तथा एशिया पर अनुसंधान करने वाले बुद्धिजीवियों ने 1822 ई. में *सोसियते अज़ियातिक* (Société Asiatique) अर्थात् *एशिया संबंधी सोसायटी* की स्थापना की। आज भी यह विद्वत्-संघ सजीव है और विशेषज्ञों के निबंध अपनी वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित करता है।

भारतीय मूर्तिकला का दर्शनीय केंद्र पैरिस का *''गिमे संग्रहालय''*(Guimet Museum) है। एक उद्योगपति के पुत्र *एमिल गिमे* (Emile Guimet) ने इसकी कल्पना की थी और 1879 ई. में उसकी स्थापना की थी। उसकी रुचि मध्य और सुदूर पूर्वी देशों के धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन में थी। भारत और एशिया की यात्राओं में उसने मूर्तियों और चित्रों का संग्रह किया। उसका एक अनुभव विचित्र था। दक्षिण भारत की यात्रा के अवसर पर उसे पता लगा कि एक पुलिस चौकी में बुद्ध की एक मूर्ति रखी है और हिंदू अथवा ईसाई, कोई भी उसे नहीं मानता। वहाँ जाकर *गिमे* ने उस मूर्ति को अपना लिया और वह उसे फ़्रांस ले आया। तब से उसकी तरह अन्य पुरातत्व विशेषज्ञ जो भी कलाकृतियाँ भारत, चंपा, कंबोज व अफ़गानिस्तान से फ़्रांस लाए, वे यहाँ सुरक्षित हैं। आजकल इन देशों और प्रायः जापान और चीन की धार्मिक परंपराओं पर भी यहाँ व्याख्यान मालाओं का आयोजन होता है। छोटे लड़के-लड़कियों के लिए इन देशों की और विशेषकर भारतीय कला की दीक्षा की व्यवस्था भी है।

सौरबोन विश्वविद्यालय में भारतविद्या संबंधी स्नातकोत्तर अनुसंधान की व्यवस्था जर्मन "औरियेंटल सेमिनारों" के नमूने पर उन्नीसवीं शती के अंत में हुई। इसके अनुसार विद्यार्थियों के छोटे समूह सप्ताह में एक बार प्राध्यापक के साथ निर्धारित विषय पर काम करते हैं और बाकी समय वे निजी अनुसंधान में लगे रहते हैं। सौरबोन में ' भारतीय संस्कृति संस्थान' की स्थापना के बाद संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं, भारतीय साहित्य व धर्म और दर्शन में विद्यार्थी दीक्षा प्राप्त करते थे और विविध ग्रंथों का प्रकाशन करते थे। भारत की स्वतंत्रता के बाद यहाँ के संचालक प्रोफ़ेसर लुई रनु (Prof. Louis Renou) ने पूना में "संस्कृत विश्वकोश"की योजना में सहयोग दिया। शिक्षा नीति में सुधार के परिणामस्वरूप अब भारतविद्या का प्रधान केंद्र "पैरिस III विश्वविद्यालय" है।

शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान के भारतविद्या संबंधी संस्थानों में फ़्रांसीसी विशेषज्ञ अधिकृत मौलिक ग्रंथों के प्रकाशनार्थ काम करते हैं और पिछले डेढ़

सौ साल से तो यहाँ भारतविदों की एक शृंखला-सी ही बन गई है। ये फ़्रांसीसी तथा अन्य भारत प्रेमी हमारे देश की संस्कृति का बहुत आदर करते हैं।

इन संस्थागत विशेषज्ञों के अतिरिक्त कई फ़्रांसीसी साहित्यकारों और संगीतज्ञों को भारत से प्रेरणा मिली है। सत्रहवीं शती में *ला फ़ौनतेन* ने "पंचतंत्र" की कथाओं के आधार पर अपनी नीति कथाओं की रचना की। अठारहवीं शती में *दिदरो* ने अपने "विश्वकोश" द्वारा यह बताना चाहा कि यहूदी और ईसाई धर्म से पहले भारत में श्रुति ग्रंथों ने धार्मिक मूल्यों का प्रचार किया था। रोमांटिक कवि और राजनैतिक *लामार्तीन* ने अपने "साहित्य पर साधारण व्याख्यान" में 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' को काव्य तथा नाटक की चरमसीमा घोषित किया। इतिहासकार *मिशले* के विचार में अठारहवीं शती महान थी तो इसलिए कि इस समय फ़्रांसीसियों को भारत के धर्म का ज्ञान प्राप्त हुआ। उसके अनुसार रामायण "मानवता का बाइबल" है। उन्नीसवीं शती के लेखक *विक्टर ह्यूगो* ने अपने ग्रंथ "शताब्दियों की गाथाएँ" में केनोपनिषद् के उस कथा भाग का स्वतंत्र उपयोग किया है जिसमें अग्नि और ब्रह्म दोनों अपनी-अपनी शक्ति आज़माते हैं। इसी शती के संगीतज्ञ *थियोफ़िल गोतिये* (Théophile Gauthier) ने "अभिज्ञानशाकुंतलम् " से प्रेरणा लेकर एक गीतिनाट्य की रचना की। एक दूसरे संगीतकार *लेओ दलिब* (Léo Delibes) ने एक ब्राह्मण और तीन अंग्रेज़ अफ़सरों की कथा पर *लाकमे* नामक गीतिनाट्य बनाया। और संगीतकार *अलबेर रूसेल* (Albert Roussel) ने जायसी के "पद्मावत" पर आश्रित "पद्मावती" गीतिनाट्य की रचना की। लेखक *ल कोंत द लिल* (Leconte de Lisle) ने हिंदू धर्म पर व्याख्या करते समय ग़दर के बाद की भारतीय राजनीति पर अपने विचार प्रकट किए। विज्ञान गल्प के लेखक *ज्यूलवैर्न* ने 'उत्तर भारत की यात्रा' और 'अस्सी दिन में विश्व भ्रमण' लिखे। *पियैर लोती* (Pierre Loti) ने "भारत में अंग्रेज़ी राज" लिखा। नोबेल पुरस्कार विजेता *आंद्रे जीद* ने रवींद्र नाथ ठाकुर की "गीतांजलि" का अंग्रेज़ी से फ़्रांसीसी में अनुवाद किया। *रोदें* की सहयोगिनी

क्लोदेलकामि ने "अभिज्ञानशाकुंतलम्" की कथा लेकर मर्मस्पर्शी "त्याग" नामक काँसे की मूर्ति का निर्माण किया।

भारतीय धर्म और दर्शन ने भी बहुत-से फ़्रांसीसियों को आकृष्ट किया है। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद ने जन-सामान्य को भारतीय धर्म का उपदेश दिया। सौ साल हुए, विवेकानंद ने शिकागो के "विश्व धर्म सम्मेलन" के अवसर पर आशा प्रकट की थी कि अब धर्मांधता का अंत और सार्वभौमिक धर्म का श्रीगणेश होगा। उनके व्यक्तित्व से प्रभावित *नोबेल* पुरस्कार विजेता *रोमें रोलाँ* (Romain Rolland) ने विवेकानंद की जीवनी लिखी। इन दोनों महानुभावों की मैत्री इतनी बढ़ी कि विवेकानंद अपने आध्यात्मिक अनुभवों पर व्याख्यान देने चार बार फ़्रांस में आमंत्रित हुए। इन दोनों के बीच जो पत्र-विनिमय हुआ उनमें भारतीय और फ़्रांसीसी संस्कृति के मानवतावाद और अंतर्राष्ट्रीयवाद पर गंभीर मनन किया गया है। उनकी धारणा थी कि ये दोनों संस्कृतियाँ विश्व की सभी जातियों में परस्पर सामंजस्य ला सकती हैं। एक दूसरे की संस्कृति के ज्ञान से पूर्व और पश्चिम दोनों ही लाभ उठा सकते हैं। वस्तुतः भारत के प्रति प्रेम जगाकर *रोमें रोलाँ* ने अर्वाचीन भारत और फ़्रांस की जनता के स्थायी संबंधों की नींव डाली।

रोमें रोलाँ की जीवनी से उसकी शांतिप्रियता, धर्मपरायणता और मानवतावाद को समझा जा सकता है। इतिहास का यह विद्यार्थी बचपन से ही संगीत प्रेमी और जर्मन संगीतकार *रिचार्ड वागनर* का विशेष प्रशंसक था। सौरबोन विश्वविद्यालय की उच्चतम उपाधि के लिए उसने उन्नीस वर्ष की आयु में "आधुनिक गीतिनाट्य की उत्पत्ति और विकास" पर शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। कुछ समय संगीत का प्राध्यापक रहने के बाद साहित्य की सेवा करने के लिए उसने विश्वविद्यालय से इस्तीफ़ा दे दिया और अनेक ग्रंथ लिखे। इनमें संगीतकार *बीथोवन* और *हैंडल*, मूर्तिकार *'माइकेल एंजलो'* और रूसी लेखक *'टालस्टॉय '* की जीवनियाँ प्रमुख हैं। प्रथम महायुद्ध के समय उसने अपनी

डायरी भी लिखी जो बहुत दिनों बाद प्रकाशित हुई। युद्धविराम और संधि पर हस्ताक्षर होने के बाद पश्चिमी यूरोप और ईसाई संस्कृति में उसकी आस्था कम हो गई। वह सोवियत संघ, रवींद्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी के भारत से आकृष्ट हुआ। वह इन दोनों संस्कृतियों का मर्म समझना चाहता था। उसकी धारणा थी कि मानवों के भेद प्रायः नगण्य हैं और सार्वभौमिक आधारभूत मूल्य उन्हें एक दूसरे के समीप ला सकते हैं। लगभग पचास वर्ष की उम्र में वह जिनेवा की एक पत्रिका के लिए लिखने लगा, तभी उसे *नोबेल* पुरस्कार मिला। सत्तावन वर्ष की आयु में उसने "महात्मा गांधी का विवेक" और छह साल बाद रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की जीवनियों के आधार पर "सजीव भारत का रहस्य और कर्म" नामक ग्रंथों का प्रकाशन किया। जब फ़्रांस में महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और रवींद्रनाथ ठाकुर से उसकी भेंट हुई तो उसकी उम्र छियासठ वर्ष की थी। उस समय के वार्तालाप, लगभग तीस साल का पत्र व्यवहार (1915 ई. से 1943 ई.) और भारतीयों के संपर्क का ब्यौरा 1961 ई. में प्रकाशित *"ऐंद"* (Inde) अर्थात् "भारत" नामक पुस्तक में उपलब्ध है। लगभग सारी उम्र रोगग्रस्त रहने पर भी *रोमें रोलाँ* की आत्मीय शक्ति सराहनीय है। दस भागों में लिखा उसका आत्मकथात्मक उपन्यास *"जाँ क्रिस्तोफ़"* (Jean Christophe) यूरोप का उपन्यास है। यूरोप के गौरव को प्रतिष्ठित रखने के लिए वह शुद्ध राष्ट्रवाद का विरोधी था। उसके अनुसार रहस्यात्मकता और राजनीति का अटूट संबंध है, आवश्यकता बौद्धिक स्वतंत्रता की है। कल्पना और कर्म के समन्वय के बिना कला का अस्तित्व संभव नहीं। *रोमें रोलाँ* का देहावसान अठहत्तर वर्ष की आयु में हुआ।

कुछ फ़्रांसीसी लोग रामकृष्ण परमहंस व विवेकानंद की तरह श्री अरविंद के दर्शन से भी परिचित हैं। स्वतंत्रता संग्राम के समय कई भारतीय क्रांतिकारियों की तरह अरविंद ने भी फ़्रांस में शरण ली थी। यहाँ उन्होंने फ़्रांसीसी भाषा, इतिहास और संस्कृति का गहन अध्ययन किया। वे फ़्रांस को अपनी दूसरी

मातृभूमि मानते थे। इस विशेष लगाव के कारण ही भारत लौटने पर उन्होंने पांडिचेरी में अपना आश्रम खोला और वहीं अंतर्राष्ट्रीय मैत्री और सहयोग के विकास के लिए "औरोविल" अर्थात् "अरविंद नगर" की स्थापना की। फ़्रांस में उनके संदेश का प्रभाव इतना है कि बहुत-से फ़्रांसीसी उनकी कृतियों का अध्ययन करते हैं और पांडिचेरी के आश्रम और "औरोविल" जाते हैं।

फ़्रांस में भारतीय दार्शनिक कृष्णमूर्ति का भी आदर है। मानव केंद्रित उनका दर्शन फ़्रांसीसियों को निजी सांस्कृतिक मूल्यों का स्मरण कराता है। कृष्णमूर्ति का संदेश है कि एक नए समाज के निर्माण के लिए ऐसे मानव की आवश्यकता है जो वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के सामने झुके नहीं। उनके अनुसार मानव और सामाजिक जीवन में आधारभूत परिवर्तन के लिए अच्छी शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा से ही मानव मस्तिष्क का पूर्ण विकास हो पाता है। उसी से मानव का जीवन बनता और बिगड़ता है। कृष्णमूर्ति की अधिकतर कृतियों का फ़्रांसीसी अनुवाद हुआ है।

(ग) भारत और फ़्रांस के संबंधों का अर्वाचीन रूप

भारत और फ़्रांस के पारस्परिक संबंधों का एक लंबा इतिहास है। एक समय था जबकि फ़्रांसीसियों के लिए भारत प्रधानतया धर्म और दर्शन की आदरणीय भूमि अथवा राजा-महाराजाओं के वैभव और विलास की रंगस्थली या साधुओं, सपेरों और शेरों का अविकसित देश था। पर आज के आशु समाचार-संचार और विश्व दर्शन को प्रोत्साहन देने वाले युग में फ़्रांसीसियों के लिए भारत व भारतवासियों के लिए फ़्रांस अगम्य नहीं रह गया है। अंतर है तो यह कि फ़्रांस जैसे समृद्ध देश के निवासी हम लोगों की तुलना में अपने देश से अधिक बाहर जा सकते हैं, अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दोनों तरह से यथार्थ से संपर्क बना सकते हैं। भारत के विषय में उनके पूर्वाग्रह मिटते जा रहे हैं और भारत की प्राचीन

प्रतिमा आंशिक रूप से खंडित होती जा रही है। अब वे भारतीय जीवन के सुखद और दुःखद दोनों ही पक्षों को जान सकते हैं। हमारी स्वतंत्रता के बाद महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी जैसे हमारे नेताओं के नामों और कृतियों से वे परिचित हैं। यहाँ के समालोचक उनकी उपलब्धियों और असफलताओं पर प्रकाश डालते हैं। फ्रांसीसी विद्वान तो भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति तथा जनसामान्य के जीवन पर पूर्ववत् ग्रंथ लिख ही रहे हैं। अधिकतर फ्रांसीसी हमारी आंतरिक राजनैतिक, सामाजिक और भौतिक कठिनाइयों के प्रति सहानुभूति दिखाते हैं। भारत दर्शन अथवा फ्रांस या भारत में हुए वैयक्तिक संपर्क के फलस्वरूप वे देख रहे हैं कि भारत प्रगति की ओर अग्रसर है। उन्हें मालूम है कि भारत के अमीरों और गरीबों के बीच आर्थिक खाड़ी विद्यमान है, पर वे ये भी जानते हैं कि आर्थिक न्यूनता होने पर भी हमारा राष्ट्रीय संगठन आदरणीय है। वे भारत की आत्मा और हमारी संस्कृति के आधारभूत मूल्यों का रहस्य जानना चाहते हैं। पाश्चात्य वातावरण में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं से ऊबकर बहुत-से फ्रांसीसी भारत यात्रा करते हैं तथा आयोजित यात्राओं की सहायता से भारत के ऐतिहासिक व धार्मिक स्मारकों को देखने भारत जाते हैं। अब भारत प्रेमी फ्रांसीसियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

वैयक्तिक स्तर पर "भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम" भारत और फ्रांस के परस्पर संबंधों को अधिक स्फूर्ति दे रहे हैं। हमारी स्वतंत्रता के बाद से ही मृणालिनी साराभाई, यामिनी कृष्णमूर्ति, लता मंगेशकर, लक्ष्मी शंकर, किशोरी अमोनकर जैसी स्त्री कलाकार और उदय शंकर, राम गोपाल, रवि शंकर, हरिप्रसाद चौरसिया, अल्ला रखा, अमजद अली खाँ, ज़हीरोद्दीन और वासिफ़ोद्दीन डागर, बिस्मिल्ला खाँ और राम नारायण जैसे भारतीय कलाकार जब भी फ्रांस और विशेषकर पैरिस में आए हैं तो फ्रांसीसियों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। प्रत्येक वर्ष कंठ और वाद्य संगीत तथा भरतनाट्यम, कथाकली और उडीसी नृत्यों का आयोजन होता है। आधुनिक पौप संगीत में

भारतीय वाद्य यंत्रों का उपयोग होने लगा है। दिग्दर्शक कलाकार *बेजार* (Béjàrt) के 'बाले नृत्य' में भारतीय परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है। फ़्रांस में भारतीय फ़िल्मों के समारोहों का भी आयोजन होता है। इस प्रकार हिंदी, तमिल, कन्नड़ और बंगला फ़िल्मों से फ़्रांसीसी भारतप्रेमियों का मनोरंजन होता है। 1985 ई. में फ़्रांस में आयोजित "भारतीय मेला" के अवसर पर हमारे लोकगीतों और लोकनृत्यों का प्रदर्शन भी हुआ था।

राजकीय स्तर पर भारत और फ़्रांस की सरकारें और वरिष्ठ अधिकारी आधुनिक जगत के परिप्रेक्ष्य में अपने-अपने देशों की ओर से सहयोग बढ़ाना चाह रहे हैं। पहले सांस्कृतिक सहयोग की योजनाएँ बनती थीं पर अब वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में फ़्रांस भारत की सहायता कर रहा है। यह सहयोग विमान-विज्ञान, इलैक्ट्रॉनिक्स, युद्ध सामग्री, दूरभाष, परिवहन साधनों और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्रों में विशेषतया उल्लेखनीय है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि फलते-फूलते मोटरगाड़ी उद्योग के देश में भारत की बनी "मारुति" और "टाटामोबिल" का आयात हो ? सूचना यह भी है कि फ़्रांसीसी "पजो" नामक मोटर गाड़ी उद्योग भारत में उत्पादन केंद्र खोलेगा।

जो भी हो, भारत और फ़्रांस के भावी संबंध सभी दिशाओं में सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है कि हमारे दोनों देशों के निवासी एक-दूसरे की संस्कृति और परंपरा को समझें, पारस्परिक अंतर को स्वीकार करें और एक साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर मानव की उन्नति के लिए प्रयत्न करें।

12. ...दरवाज़े खुले रखना

फ़्रांस के उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रकृति और मानव के सहयोग ने फ़्रांस को सजीव और आकर्षक बना दिया है। प्रकृति और इस देश की भौगोलिक स्थिति ने उसे बहुत कुछ दिया है पर यहाँ के निवासियों के देशप्रेम, ऐक्य, सुनागरिकता और आत्मोन्नयन की उत्कट अभिलाषा के बिना फ़्रांस फ़्रांस नहीं हो सकता था। इस देश के नेताओं की राष्ट्रीय स्वतंत्रता की सुरक्षा, मानवाधिकार की आसक्ति और समाज कल्याण की उदार नीति तथा फ़्रांसीसियों के वैयक्तिक और सामूहिक परिश्रम ने इस देश में ऐसा वातावरण उत्पन्न कर दिया है कि हर व्यक्ति सार्थक और आनंदमय जीवन बिताना चाहता है। जीवननिर्वाह की शैली ने एक ललित कला का पद ग्रहण कर लिया है। यहाँ की जनता ने पृथ्वी को उपजाऊ और उद्योगों को सुव्यवस्थित बना दिया है। औद्योगिक क्रांति से लाभ उठाकर और विज्ञान तथा तकनीक की चेतना से प्रेरित जनता ने इस कृषि प्रधान देश को समृद्ध और संपन्न बनाया है। तभी तो इस देश की गणना संसार के सात प्रधान औद्योगिक देशों में होती है।

फ़्रांसीसी अपने देश के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गौरव से अनुप्राणित हैं। वे इस देश में सुखी हैं, बिरले ही अन्य देशों में जाकर बसते हैं। अपनी पैतृक संपत्ति पर उन्हें गर्व है। ऐतिहासिक स्मारकों से उनका लगाव है। वे उन्हें संरक्षित और परिष्कृत करना चाहते हैं। हज़ारों गाँवों और शहरों में निवासियों के संघ, समितियाँ, नगरपालिकाएँ और सामान्य व्यक्ति स्थानीय

इतिहास और परंपराओं को सजीव रखने का प्रयास करते हैं। अपने स्वत्व को अन्य संस्कृतियों के अनुचित अथवा अधिक प्रभाव की वेदी पर बलिदान नहीं करते। कितने ही शहरों में नदियों और समुद्र की महिमा के उपलक्ष्य में मेलों की तैयारी करते हैं। धार्मिक जलूस निकालते हैं। तत्संबंधी साहित्य या स्थानीय धार्मिक अवशेषों और संतों के विषय में कथाएँ छापते हैं। इस प्रकार वे अपने बच्चों और विदेशियों को अपनी संस्कृति की सनातन परंपराओं व रीति-रिवाजों से अवगत कराते हैं। वे अपने शहरों की खिड़कियों और चौराहों को फूलों से सुसज्जित करते हैं। कहा जा सकता है कि धर्म के साथ-साथ वे अपनी संस्कृति को प्राधान्य देते हैं।

आज का फ़्रांस लोकतांत्रिक राष्ट्र है। लोकतंत्र का आधार "कम्यून" है। वे डिपार्टमैंटों और प्रादेशिक क्षेत्रों में संकलित हैं। उनकी नगरपालिकाओं के निर्वाचन के अवसर पर, जनता की सुनागरिकता और राजनीतिक परिपक्वता का प्रमाण मिलता है। राजनीतिक दलों की आर्थिक और सामाजिक योजनाओं पर ही विचार करके नागरिक अपना मत प्रकट करता है। यहाँ धर्म का कोई स्थान नहीं।

निश्चय ही प्रश्न उठते हैं कि फ़्रांस की उन्नति, समृद्धि और सुव्यवस्था के कारण क्या हैं ? विश्व में उसका इतना प्रतिष्ठित स्थान क्यों है ? उसके नागरिकों और उनकी सामाजिक विशिष्टता का आधार क्या है ? इन सब प्रश्नों का एकमात्र उत्तर यही प्रतीत होता है कि यहाँ दो सौ साल पहले की राज्यक्रांति की "मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा" ने मानव को प्रधान माना है। और तब से इस घोषणा को कार्यान्वित करने का सतत प्रयास हो रहा है। अंततोगत्वा मानव ही तो किसी भी देश की उपलब्धियों का माध्यम और उपभोक्ता है।

लगभग सौ साल पहले प्रधानमंत्री *ज्यूल फ़ेरी* (Jules Ferry) ने समझ लिया था कि बच्चों की शिक्षा ही राष्ट्र के विकास का आधार है। उसने विधान किया कि शिक्षा अनिवार्य, निःशुल्क और धर्म-निरपेक्ष होगी। अब यह नियम सोलह

साल तक के युवाजनों पर लागू होता है। आज शिक्षा का ध्येय है—व्यक्ति की मनन, विवेचन और विचाराभिव्यक्ति की शक्ति को बढ़ाना, उसके स्वत्व का विकास करना और उसके प्रशिक्षण द्वारा संपूर्ण समाज की उन्नति करना। शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर अच्छी भाषा का प्रयोग, सुनागरिकता के सिद्धांतों और भूगोल और इतिहास पर ज़ोर दिया जाता है। बाद में वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावहारिक विषयों का अध्यापन होता है। बच्चों में स्कूल के समय से ही फ़्रांसीसीपन और देशप्रेम की नींव पड़ जाती है। घर और बाहर का पर्यावरण उसको सुदृढ़ कर देता है।

मानव की शिक्षा और संस्कृति उसकी अंतर्राष्ट्रीय भावना का विलक्षण उपकरण हैं। यहाँ के राष्ट्रीय और प्रादेशिक संग्रहालय, संस्कृति, विज्ञान व तकनीकी के इन मंदिरों में फ़्रांस और देश-विदेशों की पैतृक संपत्ति एकत्र है। कई संग्रहालयों में युवाजनों के लिए विशेष सुविधाएँ उपलब्ध हैं—वे अध्यापकों के निरीक्षण में यहाँ आते हैं। राष्ट्रीय संग्रहालयों में अठारह वर्ष की आयु तक के युवाजनों का निःशुल्क प्रवेश उनकी जिज्ञासा को प्रखर करता है।

अंत में यह कहना अत्युक्ति नहीं कि फ़्रांस में मानव के विकास के औपचारिक और अनौपचारिक अनेक मार्ग खुले हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अभिलाषा, मनोवृत्ति और सामर्थ्य के अनुरूप उनका अनुसरण करने की स्वतंत्रता है। चाहे तो "प्रत्येक व्यक्ति यहाँ देवताओं की तरह सुखी हो सकता है"।

हम चाहे किसी भी दृष्टि से देखें, फ़्रांस एक महान और आकर्षक देश है। कदाचित् इसका कारण यह भी है कि यहाँ जनसंख्या कोई समस्या नहीं। वह इस देश के संसाधनों का शोषण नहीं करती। खेद है कि अंग्रेज़ी राज के अधीन हम भारतीय फ़्रांस के प्रति तटस्थ रहे और इस देश की अधिक जानकारी प्राप्त नहीं कर पाए। अंग्रेज़ी भाषा और संस्कृति के प्रभाव से ब्रिटेन और अमरीका की सभ्यता जानना हमारे लिए अधिक सरल है। पर यदि हमारे युवा लोग फ़्रांसीसी भाषा सीखने की इच्छा और उसके उपयोग से फ़्रांस की "आत्मा" को समझने

का प्रयत्न करें तो उससे उनका काफ़ी लाभ हो सकता है। इस देश से वे बहुत कुछ सीख सकते हैं। यदि हमें भारतीय होने पर गर्व है और अपने देश से प्रेम है तो हमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कथन को याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा था—मैं नहीं चाहता कि मेरे घर के चारों ओर दीवारें खड़ी कर दी जाएँ और उसकी खिड़कियाँ बंद कर दी जाएँ। मैं चाहता हूँ कि सभी देशों की सुरभित समीर मेरे घर में और उसके चारों ओर यथासंभव अधिक से अधिक रूप से बह सके।

इस कथन को सार्थक बनाने का उत्तरदायित्व हम सब भारतीयों पर है।